शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

बी०टी०सी० चतुर्थ सेमेस्टर

सैद्धान्तिक विषय – 07

आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन–लेखन तथा संख्यापूर्व सम्बोधों/क्षमताओं का विकास

राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0,
इलाहाबाद

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

बी0टी0सी0 चतुर्थ सेमेस्टर

मुख्य संरक्षक : **श्री अजय कुमार सिंह,** आई.ए.एस., सचिव, बेसिक शिक्षा, उ0प्र0, शासन, लखनऊ

संरक्षक : **श्रीमती शीतल वर्मा,** आई.ए.एस. राज्य परियोजना निदेशक, सर्व शिक्षा अभियान, लखनऊ

निर्देशन : **डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह, निदेशक,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0

समन्वयन : **श्री दिब्यकान्त शुक्ल, प्राचार्य,** राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद

परामर्श : **श्री अजय कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक,** (एस0एस0ए0) राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0, लखनऊ

लेखक : श्रीमती मंजुलेश विश्वकर्मा, श्रीमती अनुराधा पाण्डेय, डॉ0 इन्दू सिंह, श्रीमती अरुणा यादव, श्रीमती दीपिका यादव, श्रीमती शिखा वर्मा।

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : राजेश कुमार यादव

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन–लेखन तथा संख्यापूर्व सम्बोधों/क्षमताओं का विकास

कक्षा शिक्षण : विषयवस्तु

- पठन एवं लेखन का अर्थ एवं महत्व
- उद्देश्य
- उपयोगिता
- वर्ण, शब्द, वाक्य
- ध्वनि का अध्ययन
- स्वरों, व्यंजनों तथा व्यंजन समूहों को सुनकर समझना
- दिये गये निर्देश, सन्देश सुनाये गये वर्णन, कविता, कहानियों, लोकगीतों आदि में निहित भावा तथा विचारों को सुनकर समझना
- हिन्दी/अंग्रेजी की सभी ध्वनियों, स्वरों, व्यंजनों का शुद्ध उच्चारण
- लिपि की सभी ध्वनियों के लिपि संकेतों को पहचानकर शुद्ध रूप में पढ़ना।
- पूर्णविराम, अर्द्धविराम, प्रश्नवाचक तथा विस्मय सूचक चिह्नों को पहचानते हुए एवं विषयवस्तु को अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ना
- विलोम, समानार्थी, तुकान्त, अतुकान्त तथा समान ध्वनियों वाले शब्दों को पहचानना एवं पढ़ना
- लिपि संकेतों, स्वर, व्यंजन मात्राएँ, संयुक्त वर्णों को सुडौल तथा आकर्षक रूप में लिखना
- अनुनासिक ध्वनियों के लिपि संकेतों को शुद्धता के साथ लिखना
- संख्यापूर्व तैयारी एवं सम्बोध
- 1 से 9 तक की संख्याओं को वस्तुचित्रों की सहायता से गिनना, पढ़ना, लिखना
- संख्याओं को क्रमबद्ध करना
- गणितीय संक्रियायें–जोड़ना, घटाना एवं शून्य का ज्ञान
- इकाई, दहाई तथा सैकड़े का ज्ञान

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

पठन एवं लेखन का अर्थ महत्व एवं उपयोगिता

पठन एवं लेखन का अर्थ एवं महत्व

'पठन' भाषा शिक्षण का व्यावहारिक रूप है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली–भाँति प्रकट करता है और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्टतया समझ लेता है। भाषा की जानकारी बालक को अपने माता–पिता, परिवार तथा समाज से सहज मिलती है और यदि यही सहजता उसे विद्यालयीय वातावरण में मिलता है तो वह सहजता के साथ सिखाई जाने वाली बातों को सीखता है। शिखक के साथ घुलमिल कर बातें करता है। इस समय यदि शिक्षक उसकी आरम्भिक पठनशक्ति के विकास में वर्ण–पद्धति को अपनाता है तो वह सफल नहीं रहता क्योंकि बच्चा स्वाभाविक रूप से सीखना चाहता हैं जैसे– यदि हम कमल के फूल के बारे में बताना चाहते हैं तो उसे क से कमल न सिखाकर पूरे कमल की शिक्षा देते हैं उसे कमल का चित्र दिखाते हुए उससे पूछ सकते हैं यह किस फूल का चित्र है? बच्चा बड़ी सहजता से उत्तर देगा और सीखी हुई चीजों के प्रति उसमें स्थायित्व आयेगा और वहीं सीखी गई चीजों को कभी नहीं भूलेगा। वह बिना झिझक के उत्साह के साथ पूर्णता से अंश की ओर जाते हुए अपनी शिक्षण की प्रक्रिया को आगे बढ़ायेगा। इसलिए शिक्षक को पहले वाक्य फिर शब्द और शब्द से वर्ण की ओर बढ़ना चाहिए।

मुख्य शिक्षण बिन्दु

- पठन का अर्थ
- लेखन का अर्थ पठन और लेखन का उद्देश्य
- पठन और लेखन का महत्व एवं उपयोगिता

पठन का अर्थ

किसी वाक्य या शब्द को अर्थबोध व भाव को ग्रहण करते हुए पढ़ना अर्थात् अक्षरों, शब्दों से जुड़ी ध्वनियाँ निकालने के साथ–साथ लिखित वस्तु का अर्थ भी समझना/उदाहरणार्थ कक्षा में हम बच्चों को कार्ड्स पर बने पत्ती के चित्र अथवा श्यामपट्ट पर चित्र बनाकर अथवा वास्तविक पत्ती का चित्र दिखाकर पूछ सकते हैं– बच्चों यह क्या है? अथवा किसका चित्र है? बच्चे पत्ती से पूर्व परिचित हैं वे पत्ती के अर्थ ग्रहण के साथ पत्ती शब्द का उच्चारण करते हैं और 'प' ध्वनि से भली–भाँति परिचित हो जाते हैं और यही 'प' ध्वनि जब हम 'पतंग' शब्द को पढ़ाते समय प्रयुक्त करते हैं तो बच्चा बड़ी सहजता के साथ 'प' ध्वनि की पहचान कर लेता है। घर में जब वह पापा कहता है तो उसे दिमाग में पूर्व परिचित ध्वनि एक बार फिर घूम जाती है इस प्रकार 'प' ध्वनि उसके मस्तिष्क में स्थायित्व को प्राप्त करता है इसी प्रकार कमल–कबूतर–कलम–काजल आदि शब्दों के पठन द्वारा **'क'** ध्वनि का ज्ञान दे सकते हैं। पठन की प्रक्रिया *'पूर्णता से अंश की ओर'* पद्धति पर आधारित है।

चर्चा बिन्दु– *आप बच्चों में आरम्भिक पठन क्षमता का विकास किस प्रकार करेंगे ?*

Downloaded From www.dietmathura.org

भाषा पठन को भली–भाँति समझने के लिए हमें भाषा पठन के संदर्भ में दिए गए विचारकों और भाषाविदों के मतों को समझना होगा–

- लिखे हुए से अर्थ गढ़ना ही पढ़ना है।
- पढ़ना सिर्फ वर्णमाला की पहचान, शब्द तथा वाक्य को बोलना नहीं है, बल्कि लिखित के अर्थ को समझकर अपना नजरिया बनाना या फिर अपनी निजी समझ विकसित करना है।
- पढ़ना एक एकाकी प्रक्रिया नहीं है बल्कि अक्षरों की आकृतियों और उनसे जुड़ी ध्वनियों, वाक्य–विन्यास शब्दों और वाक्यों के अर्थ और साथ ही अनुमान लगाने का कौशल है।

शिक्षक का दायित्व है कि पठन–क्षमता विकास के लिए पठन के रुचिपूर्ण तरीकों का प्रयोग करें। जब बच्चा प्रारम्भ में विद्यालय आता है तो वह न तो वर्णों, शब्दों को पढ़ सकता है और न ही लिख सकता है। वह शब्द, वाक्य बोल सकता है। अतः बच्चे से पहले मुद्राभाव, दृश्य पठन आदि कराएं।

मुद्राभाव पठन

शिक्षक बच्चों से उनकी भाषा की पुस्तक से मुद्राभाव पठन करा सकते हैं अथवा उन चित्रों को दिखाते हुए उनके बारे में प्रश्न कर सकता है।

दृश्य पठन

शिक्षक बच्चों को भ्रमण पर ले जाएं और विभिन्न दृश्यों के बारे में उनसे पूछते हुए दृश्यपठन कराएं।

अभिनय पठन

अभिनय में बच्चों की विशेष रुचि होती है। वे अपने परिवेश से देखकर सुनकर हँसने, रोने, गिरने, उड़ने, डराने तथा विभिन्न पशु–पक्षियों की बोलियों को बोलने का अभिनय करते रहते हैं और प्रत्येक अभिनय से अर्थ के साथ भाव ग्रहण करते रहते हैं।

चित्र पठन

पुस्तकों में दिए गए चित्रों के बारे में बच्चों से चित्र पठन कराएं। चित्र दिखाने पर हो सकता है कि बच्चा उसका स्थानीय नाम बताए जैसे– तोते का चित्र देखकर उसे सुग्गा या पट्टू नाम बताए तो ऐसी स्थिति में शिक्षक को बताना चाहिए कि सुग्गा, पट्टू या तोता एक ही पक्षी के नाम हैं।

चर्चा बिन्दु– आपकी दृष्टि में उक्त पठन के द्वारा बच्चों में किन–किन गुणों का विकास हो सकता है ?

Downloaded From www.dietmathura.org

पठन के प्रकार

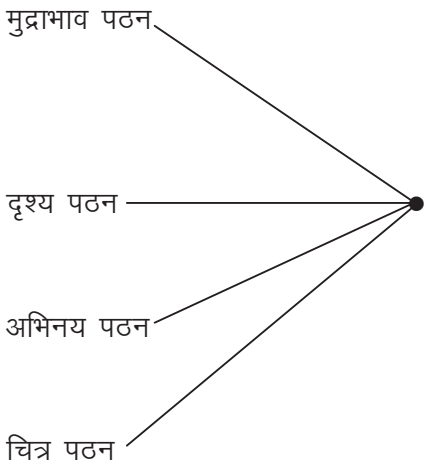

विकसित गुणों की आवश्यकता क्यों

- बेझिझक अपनी बात को कहने हेतु
- कक्षा में ठहराव हेतु
- कल्पना व चिन्तन शक्ति के विकास हेतु
- आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए
- समझ विकसित करने हेतु
- अर्थ व भाव ग्रहण करने हेतु
- पाठ्यपुस्तक से जुड़ाव हेतु
- वाचन की स्पष्टता एवं शब्द भण्डार की वृद्धि हेतु
- पठन क्षमता के विकास हेतु
- अभिव्यक्ति क्षमता विकास हेतु

अक्षर पठन

फ्लैश कार्डस के द्वारा बच्चों में अक्षर पठन की योग्यता व शब्दों के अर्थभाव ग्रहण की योग्यता विकसित की जाती है जैसे– अनार का चित्र व शब्द लिखे कार्ड्स को दिखाते हुए बच्चों से पूछे यह किसका चित्र है और उच्चारण कराएं अ– नार। 'अ' पर जोर देना है इसी तरह के अन्य चित्र शब्द कार्ड या जैसे– अमरूद, अजगर, अलमारी आदि दिखाएं तो बच्चों में 'अ' ध्वनि की स्थायी पहचान होती है और वह जहाँ भी 'अ' ध्वनि वाले शब्द देखेगा तुरन्त पहचान लेगा कि ये 'अ' ध्वनि है।

शब्द पठन

जब बच्चा अक्षर पहचानने लगे और उसका शुद्ध उच्चारण करने लगे तब उससे बिना मात्रा वाले शब्दों का पठन कराना चाहिए। पहले दो अक्षर वाले परिचित वस्तुओं के शब्द पढ़वाए। जैसे ह और ल को मिलाकर 'हल' शब्द का पठन कराएं।

मात्रा पठन

शब्द पठन कर लेने पर बच्चों से मात्राओं वाले शब्दों का पठन कराएं। मात्राओं के पठन में उतार–चढ़ाव का ध्यान रखते हुए बच्चों से मात्रा पठन कराएं जैसे– आम 'आ' पर जोर देते हुए पठन कराएं जिससे बच्चा अ और आ के उच्चारण में अन्तर को समझ सके।

इस प्रकार पठन की महत्ता को समझते हुए शिक्षक बच्चों से वर्णमाला चार्ट, शब्द पठन (मात्रा वाले) वाक्य पठन, कविता पठन, गद्य पठन आदि का पठन समझ के साथ कराएं।

चर्चा बिन्दु–आप बच्चों को पढ़ने के साथ–साथ लिखने के लिए किस प्रकार प्रेरित करेंगे ?

जब बच्चा छोटा रहता है वह अपने भाई–बहन को लिखते हुए व पढ़ते हुए देखता है तो उससे पेन या पेन्सिल छीनने लगता है कभी–कभी तो अपने बड़े भाई–बहन की कॉपी व पुस्तक में खिंचा देता

Downloaded From www.dietmathura.org

है इससे यह ज्ञात होता है कि लिखने की प्रवृत्ति उसमें स्वभावतः आ जाती है और वह इधर–उधर की रेखाओं को खींचता रहता है। यदि हम कक्षा में बच्चों को शब्द चित्र कार्ड्स को दिखाएं और चित्र से सम्बन्धित रेखाओं का अभ्यास कराएं तो बच्चा रुचि के साथ उन रेखाओं की वक्रता व सीधी तिरछी रेखाओं को आसानी से सीख लेता है जो उसके लेखन क्षमता के विकास में सहायक होता है। उदाहरणार्थ– हम बच्चे को पतंग का चित्र दिखाते हैं और पतंग की रेखाओं को ज्ञान कराते हुए उसे 'प' ध्वनि को लिखना सिखाएंगे तो उत्साहपूर्वक बच्चा 'प' वर्ग को लिखना सीख जायेगा साथ ही साथ 'प' वर्ण की जो पठन क्षमता उसमें पूर्व में विकसित हुई थी उसको भी स्थायित्व मिलेगा।

लेखन का अर्थ

जब हम अपने विचारों और भावों की मौखिक अभिव्यक्ति न करके उसे लिखित रूप में व्यक्त करते हैं उसे लेखन कहते हैं। यदि मौखिक अभिव्यक्ति का आधार उच्चारण है तो लिखित अभिव्यक्ति की रचना का आधार है– प्रथम वर्तनी तथा द्वितीय व्याकरण सम्मत वाक्य रचना। लिखित अभिव्यक्ति के लिए चार महत्वपूर्ण बिन्दु हैं– सुस्पष्टता, शुद्धता, क्रमबद्धता एवं सुसम्बद्धता।

रीना और मोहन कक्षा–एक के छात्र हैं। शिक्षक ने श्यामपट्ट पर कमल शब्द लिखा और बच्चों से भी कार्यपुस्तिका में लिखने को कहा। शिक्षक ने रीना से पूछा कमल शब्द में कितने वर्ण है रीना ने उत्तर दिया तीन। मोहन से पूछने पर उसने पाँच वर्ण बताए। क्या दोनों ने कमल शब्द में वर्णों की संख्या सही–सही बतायी? यदि शिक्षक ने कमल शब्द का वर्ण विच्छेद के साथ लिखना सिखाया होता तो निश्चित ही बच्चे सही उत्तर देते और सही–सही लिखने का प्रयास भी करते। जैसे– क्+अ+म्+अ+ल्+अ। वर्ण विच्छेद के द्वारा लेखन का प्रारम्भ करने से बच्चे में मात्रा का स्पष्ट ज्ञान होता है और वह प्रत्येक मात्राओं को ठीक से लिखना व पढ़ना सीखता है।

शिक्षक का दायित्व

लेखन में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है यथा–

- अध्यापक बच्चों को लिखने के विभिन्न प्रकार के अवसर उपलब्ध कराएं।
- कक्षा में पर्याप्त मात्रा में चॉक उपलब्ध कराएं और हरी पट्टी पर लिखने का खूब अभ्यास कराएं।
- लिखने की तैयारी में सीधी, आड़ी, तिरछी, गोल, वक्र रेखा बनाने का अभ्यास कराएं।
- बिन्दु मुक्त वर्णों पर हाथ फिराने के अवसर दें।
- स्वयं की मदद से लेखन कार्य परीक्षण में बच्चों का सहयोग करें।
- वर्णों के बीच उचित अन्तराल का ध्यान रखें, आदि बच्चा ऐसा नहीं कर रहा है तो उसे सही–सही लिखने के लिए प्रेरित करें।
- बच्चों को आपस में एक–दूसरे का लिखित कार्य देखने को कहें।

Downloaded From www.dietmathura.org

पठन और लेखन का उद्देश्य

पठन और लेखन समूची शिक्षण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है। यह सीखने सिखाने की प्रक्रिया में पठन और लेखन ज्ञान का विस्तार करने के लिए अनिवार्य प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया केवल भाषा के साथ ही नहीं वरन् प्रत्येक विषय के साथ चलती रहती है। जब पठन और लेखन का सम्बन्ध बच्चों की शिक्षा से जुड़ा हो तो हमें यह जानना आवश्यक हो जाता है कि बच्चों की शिक्षा में पठन और लेखन का क्या उद्देश्य है?

लेखन के उद्देश्य निम्नवत् हैं–

- पठित सामग्री को बोध और अर्थभाव के साथ समझने की योग्यता विकसित करना।
- बच्चों की बातचीत को भाषायी कौशल अर्थात् सुनना, बोलना, सिखाने के साधन के रूप में पहचानना।
- बच्चों में समझ के साथ पढ़ने व लिखने की दक्षता विकसित करना।
- बच्चों को पूर्णता से अंश की ओर के द्वारा सिखाने पर बल देना।
- बच्चों की भाषिक दक्षता को विकसित करने के लिए बातचीत, परिचर्चा, संवाद–वाचन, वाद–विवाद, कविता पाठ आदि कार्यकलापों को आयोजित करना।
- बच्चों की भाषा सम्बन्धी समस्याओं का चयन व निराकरण करना।
- विभिन्न आनन्ददायी गतिविधियों के द्वारा पठन व लेखन की कुशलता विकसित करना।
- कविता को उचित लय, गति, व भाव के अनुसार पठने की कुशलता विकसित करना।
- लेखन हेतु कुशलता विकसित करना यथा– बैठने का ढंग, आँखों से कागज की दूरी, उपयुक्त वातावरण, कलम पकड़ने की विधि।
- बच्चों को आड़ी, तिरछी, सीधी रेखाओं के अभ्यास द्वारा लिखने के लिए तैयार करना।
- लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित करना।
- लिखित सामग्री में क्रमबद्धता, स्पष्टता, सुसम्बद्धता व शुद्धता बनाये रखने की योग्यता विकसित करना।
- बच्चों में श्रुतिलेख, अतिलेख, अनुलेख लिखने की कुशलता विकसित करना।
- विरामचिह्नों का यथोचित प्रयोग करने की कुशलता विकसित करना।

पठन और लेखन का महत्व एवं उपयोगिता

शिक्षण में पठन व लेखन दोनों का बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। पठन के बिना लेखन और लेखन के बिना पठन दोनों ही अधूरे हैं। यदि बच्चों की आरम्भिक पठन–क्षमता का विकास उचित रूप से हुआ है तो उसकी लेखन क्षमता का विकास भी ठीक प्रकार से होगा। इसके विपरीत यदि बच्चा किसी शब्द या वाक्य का पठन भली–भाँति नहीं कर पाता है तो वह लेखन भी अशुद्ध रूप से करेगा अर्थात् मात्रात्मक त्रुटियाँ रहेगी।

Downloaded From www.dietmathura.org

भाषा शिक्षण में पठन और लेखन का विशेष महत्व है बिना पठन और लेखन के कोई भी व्यक्ति अपनी शिक्षा को आगे नहीं बढ़ा सकता और न ही अपने विचारों, भावों की अभिव्यक्ति कर सकता है वह केवल बोल और सुन सकता हैं। उदाहरणार्थ– जिस प्रकार एक अपाहित व्यक्ति बिना बैसाखी के चल फिर नहीं सकता है उसी प्रकार पठन और लेखन के बिना व्यक्ति बोल और सुन तो सकता है लेकिन वह न तो पढ़ सकता है और न ही लिख सकता है उसकी स्थिति निरक्षर की भाँति होती है और वह हमेशा दूसरों पर आश्रित रहता है।

पढ़ना भाषा शिक्षण का व्यावहारिक रूप हैं लिपि चिह्नों को पहचानना और उन्हें अर्थ में परिवर्तित कर लेना पढ़ना है। बच्चों में पठन क्षमता विकसित करना तभी सम्भव हो सकता है जब हम उन्हें पूर्णता से अंश की ओर अर्थात् पहले वाक्य सिखाएं फिर शब्द और उसके बाद वर्ण सिखाएं। बच्चा सर्वप्रथम टूटे फूटे शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य ही बोलता है और यदि हम उसकी शिक्षा की शुरूआत भी वाक्य के साथ कराएं तो शायद वह पढ़ना भली–भाँति सीख सकेगा, अन्यथा वह वर्णमाला को रट–रट कर पढ़ना सीख सकेगा जिससे उसके ज्ञान को स्थायित्व नहीं मिल पायेगा और वह पढ़ना बहुत अधिक समय में सीख पायेगा।

'पढ़ना' का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्ध है। वस्तुतः पढ़ना एक कला है जिसकी ऊँच–नीच, निर्धन–धनवान सभी को आवश्यकता पड़ती रहती है। इस प्रगतिशील विश्व में पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। पढ़न की योग्यता न रखने से व्यक्ति संसार की सांस्कृतिक महानता में अपने अस्तित्व का आनन्द नहीं ले सकता। जीवन–चरित्र, इतिहास, काव्य, गीत, कहानियाँ लेखन, उपन्यास, नाटक मनुष्य के लिए जिस उद्देश्य से लिखे जाते हैं उनका पूर्णतया आनन्द और लाभ स्वयं पढ़कर ही उठाया जा सकता है। इस प्रकार पठन की शुद्धता एवं उसकी सहायता से हमें वार्तालाप या सम्भाषण का ढंग आता है जिसके परिणामस्वरूप हम समाज, देश और जाति के अच्छे नागरिक हो सकते है।

पठन के प्रमुख गुण निम्नवत् हैं–

- वार्तालाप के द्वारा झिझक दूर होना।
- चित्रों के भावों को पढ़ना, समझना।
- बाल पत्र–पत्रिकाएं पढ़ना।
- हाव–भाव और संकेत समझना व व्यक्त करना।
- पाठ्यसामग्री में निहित केन्द्रीय भावों एवं विचारों को समझना।
- गद्य की विधा को बिना अटके एवं बिना दोहराए पढ़ना।
- भाषा की संयुक्त ध्वनियों का मानक उच्चारण करते हुए पढ़ना।

पठन के साथ–साथ लेखन का भी अपना विशेष महत्व है। मानव की अभिव्यक्ति स्थायी रहे तथा अन्य व्यक्ति जब चाहें तब उस अभिव्यक्ति को जान सकें इसके लिए लिखित अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है। व्यक्ति अपने मौखिक भावों की अभिव्यक्ति दो प्रकार से करता है– 1. लिखकर और 2. बोलकर/लिखित अभिव्यक्ति के लिए उसे लिपि की आवश्यकता होती है। यह लिपि संकेत

Downloaded From www.dietmathura.org

चिह्न और प्रतीकों की बनी होती है। कभी तो वह पूरे विचार को प्रकट करने के लिए चिह्न विशेष प्रयोग करता है और कभी उन वस्तुओं पर चित्र बनाता है जिनके विषय में कुछ विचार प्रकट करना चाहता है। ये चिह्न प्रतीक, चित्र ही लिपि है।

भाषा भावों के आदान–प्रदान का साधन है जिसकी भावाभिव्यक्ति बोलकर भी हो सकती है लेकिन बोली या कही हुई बातें स्थायी नहीं होती और शीघ्र ही विस्मृत हो जाती हैं। लेकिन क्रिया द्वारा हम अपनी बात अनेक व्यक्ति तक, बहुत दूर तक पहुँचा सकते हैं। इस क्रिया द्वारा भावी पीढ़ी के लिए अपने विचारों को सुरक्षित भी कर सकते हैं। लेखन के माध्यम से हम उस वक्ता के विचारों से परिचित हो जाते हैं जो हमसे स्थान एवं समय के विचार से दूरस्थ हैं। भाषा का विकास लेखन के कारण होता है। उसमें परिवर्तन लेखन द्वारा ही उपस्थित होते हैं। लेखन के माध्यम से ही हम पूर्ण अधिकार भी प्राप्त करते हैं। इस प्रकार लेखन विचारों की अभिव्यक्ति एवं स्थायीकरण का महत्वपूर्ण साधन हैं।

चर्चा बिन्दु

- *आप बच्चों को पढ़ने के साथ–साथ लिखने के लिए किस प्रकार प्रेरित करेंगे।*
- *आप की दृष्टि में प्रारम्भिक शिक्षा का प्रारम्भ पठन और लेखन में से किसके द्वारा होना चाहिए और क्यों ?*

लिखना शिक्षा का एक आवश्यक अंग है इस दृष्टि से शिक्षा में लेखन की उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। पढ़ना, लिखना में पहले पढ़ना सिखाया जाए या लिखना, इस सम्बन्ध में शिक्षाशास्त्रियों में कुछ मतभेद है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री फ्रॉबेल ने पढ़ने की क्रिया पहले और लिखने की क्रिया बाद में रखने का सुझाव दिया है तो दूसरी ओर बाल–मनोविज्ञान की पारखी श्रीमती मॉण्टेसरी ने लिखना सिखाने को पहले और तत्पश्चात् पढ़ना सिखाने का समर्थन किया है। पढ़ने की क्रिया लिखने की क्रिया से सरल है। बालक भाषा पर मौखिक रूप से पहले अधिकार करता है। उसे यदि पहले प्रतीकों को पहचानने की कला आ जाती है तो लिखने में उसे सरलता हो सकती है। हिन्दी का 'पढ़ा–लिखा' शब्द भी पढ़ने को प्रथम एवं लिखने को द्वितीय स्थान दे रहा है। इन दोनों मतों से भिन्न एक तीसरा समाहारक मत भी है। इसे हम दोनों मतों का समन्वय कह सकते हैं। अधिकांश शिक्षाशास्त्री इसी विचार के समर्थक हैं कि पढ़ना–लिखना साथ–साथ चलना चाहिए।

लिखना कब सिखाया जाए, इस प्रश्न का एक दूसरा पक्ष बालक की आयु से सम्बन्धित है। प्रायः बच्चों का पाँच–छः वर्ष में इतना विकास हो जाता है कि वह पठन के साथ–साथ लेखन में भी रुचि लेने लगता है। वास्तविक रूप से लिखना सीखने के पूर्व छात्र को कुछ रेखाओं की खींचने का अभ्यास कराना चाहिए। स्वतन्त्र रूप से मनमाने ढंग से बालक कुछ रेखाएं खींचे, जिससे उसकी मांस पेशियां दृढ़ हो सकें और वह लिखना सीखने के लिए तैयार हो जाए। इस प्रकार बच्चा पहले पढ़ना तत्पश्चात् विभिन्न रेखाओं को खींचने के द्वारा लिखना सीखता है। उदाहरणार्थ– यदि हम चित्र कार्ड्स के द्वारा बच्चे को कमल, आम, अनार, खरबूजा, गमला, घर आदि का चित्र दिखाते हैं तो पहले वह

Downloaded From www.dietmathura.org

चित्रकार्ड को देखकर बताता है कि किसका चित्र है फिर वह धीरे–धीरे कार्ड्स के नीचे लिखे शब्दों को देखता है बार–बार एक ही अक्षर को जब वह देखता है तो उसे विभिन्न ध्वनियों की पहचान होने लगती है और वह ध्वनि कार्ड्स या श्यामपट्ट या अपनी पुस्तक में बने हुए वर्णों या अक्षरों पर उँगली से हाथ फिराता रहता है और लकीरों के अभ्यास के द्वारा लिखने का प्रयास करता है।

चर्चा बिन्दु– *लेखन की उपयोगिता उसके किन–किन गुणों के कारण होती है ?*

उपयोगिता की दृष्टि से मानव अपने अनुभवों और कल्पनाशक्ति के भण्डार को लिखित अभिव्यक्ति द्वारा चिरकाल से संचित करता आ रहा है। तथा संचालित लेखों के द्वारा विभिन्न अनुभवों से लाभ उठा रहा है। आज हम विभिन्न महाकाव्यों, नाटकों, कहानियों या महापुरूषों की उपदेशात्मक बातों से उनके लेखों के द्वारा ही लाभ उठा रहे हैं। साहित्य के अभाव में मनुष्य का जीवन पशुवत् हो जाता, वह केवल खाता और सोता। लिखित अभिव्यक्ति के लिए चार बिन्दु हैं– सुस्पष्टता, शुद्धता, क्रमबद्धता एवं सुसम्बद्धता लेखन कौशल को विकसित करने वाले निम्न गुणों के द्वारा उसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है–

- सुलेख में गतिपूर्वक शुद्ध वर्तनी तथा उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए लिखना।
- सरल कहानी, घटनाओं, दृश्यों आदि का लिखित वर्णन करना।
- कल्पना के आधार पर कहानी, संवाद या कविताएं लिखना।
- विशिष्ट शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों के द्वारा लिखित भाषा को प्रभावशाली बनाना।
- विभिन्न विषयों पर लघु निबन्ध का लेखन
- विराम–चिह्नों का यथोचित प्रयोग करना।
- क्रमबद्धता बनाये रखना।
- सुसम्बद्धता बनाये रखना।
- भाषा की दृष्टि से अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता लाना।
- अनुलेख, अतिलेख तथा श्रुतिलेख लिख सकना।
- सुपाठ्य, लेख लिखना।
- लेखन कार्य को यथोचित अनुच्छेदानुसार लिखना।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पठन भाषा शिक्षण का रूप हैं–

क. मौलिक　　ख. व्यावहारिक

ग. सामाजिक　　घ. शैक्षिक

2. लिखित अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण बिन्दु है–

क. सुन्दरता　　ख. वचनीयता

ग. क्रमबद्धता　　घ. लेखनीयता

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. आरम्भिक पठन शिक्षण में किस शिक्षण सूत्र का प्रयोग किया जाता है ?

2. लिखित अभिव्यक्ति के लिए कितने मुख्य बिन्दु हैं ?

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. आरम्भिक स्तर पर बच्चों को किस प्रकार पठन शिक्षण कराना चाहिए?

2. लेखन का क्या अर्थ है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पठन का क्या अर्थ है? प्राइमरी स्तर पर बच्चों के लिए पठन की क्या उपयोगिता है? स्पष्ट लिखिए।

2. भाषा शिक्षण में लेखन का क्या उद्देश्य है? शिक्षा में लेखन के महत्व का प्रकाश डालिए।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

वर्ण, शब्द, वाक्य

भाषा के तीन खण्ड या इकाइयाँ हैं। वाक्य भाषा की सबसे बड़ी इकाई है। वाक्य कई शब्दों से बनता है अतः शब्द भाषा की दूसरी इकाई है। अब शब्द भी कई वर्णों की ध्वनियों से बनता है अतः वर्ण भाषा की तीसरी इकाई है इस प्रकार भाषा की निम्न लिखित तीन इकाइयाँ हैं–

मुख्य शिक्षण बिन्दु
- वर्ण
- शब्द
- वाक्य

1. वर्ण 2. शब्द 3. वाक्य

वर्ण

ध्वनि के बिना भाषा की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। हम जो कुछ बोलते अथवा उच्चारण करते है, वह ध्वनि है। जब यह ध्वनि अर्थ सहित होती है तो यह भाषा बन जाती है। इसी ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण या अक्षर कहते हैं। अ, इ, उ आदि बोले जाते समय ध्वनियाँ हैं, लेकिन लिखित रूप में ये वर्ण या अक्षर हैं।

वर्ण का स्वरूप– साधारणतया ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं। 'राजा' शब्द में दो ध्वनियों 'रा' और 'जा'। अब इनके आगे चार खण्ड हैं– र्+आ+ज्+आ। ये मूल ध्वनियाँ हैं।

अतः वर्ण की परिभाषा इस प्रकार है–

वह छोटी से छोटी मूल ध्वनि जिसके और टुकड़े न हो सकें, वर्ण या अक्षर कहलाती है।

जैसे– अ, इ, उ, क्, ख्, च् ट्, प् आदि।

वर्ण हमारी उच्चरित भाषा या वाणी की सबसे छोटी इकाई है। इन्हीं इकाइयों को मिलाकर शब्द समूह और वाक्यों की रचना होती है। स्पष्ट है कि वर्ण और उच्चारण का बड़ा ही गहरा सम्बन्ध है। एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। मूलतः हिन्दी 52 वर्ण हैं। वर्णों के उच्चारण समूह को वर्णमाला कहते हैं।

स्वर– अ, आ, इ, ई, उ ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ ।

व्यंजन–

क वर्ग	–	क,	ख,	ग,	घ,	ङ	
च वर्ग	–	च,	छ,	ज,	झ,	ञ	
ट वर्ग	–	ट,	ठ,	ड,	ढ,	ण	
त वर्ग	–	त,	थ,	द,	ध,	न	
प वर्ग	–	प,	फ,	ब,	भ,	म	स्पर्श
अन्तःस्थ	–	य,	र,	ल,	व		
ऊष्म	–	श,	ष,	स,	ह		
संयुक्त व्यंजन	–	क्ष,	त्र,	ज्ञ,	श्र		
दृगुण व्यंजन	–	ड़,	ढ़				
अनुस्वार	–	(ं) विसर्ग (:)					

Downloaded From www.dietmathura.org

वर्ण के भेद

वर्ण दो प्रकार के होते हैं–

1. स्वर 2. व्यंजन

1. स्वर– स्वतन्त्र रूप से बोले जाने वाले या जिन वर्णों को बोलते समय किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती, स्वर वर्ण कहलाते हैं।

हिन्दी भाषा में कुल ग्यारह स्वर हैं–

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ

स्वरों के भेद

स्वर तीन प्रकार के होते हैं–

क. ह्रस्व स्वर– वे स्वर जिनको बोलने में कम समय लगे, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं। ये संख्या में चार हैं– अ, इ, उ, ऋ।

ख. दीर्घ (सन्धि) स्वर– ये संख्या में सात हैं–

आ	ई	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ

ये स्वर मूल स्वरों के योग से बनते हैं इसलिए इन्हें सन्धि स्वर भी कहते हैं।

आ + अ = आ	इ + इ = ई
उ + उ =ऊ	
अ (आ) + इ (ई) = ए	अ (आ) + ए = ऐ
अ (आ) + उ (ऊ) = ओ	अ (आ) + ओ = औ

ग. प्लुत स्वर– जिन स्वरों के बोलने में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगता है। उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत स्वर की पहचान के लिए स्वर के पीछे '३' संख्या का चिह्न लगाया जाता है। जैसे– ओ३म। यहाँ 'ओ' प्लुत स्वर है।

व्यंजन

व्यंजन के वर्ण जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में 'अ' की ध्वनि छिपी रहती है। 'अ' के बिना व्यंजन का उच्चारण सम्भव नहीं ।

Downloaded From www.dietmathura.org

जैसे– क्+अ=क, ख्+अ = ख। व्यंजन वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में भीतर से आती हुई वायु मुख में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में बाधित होती है। स्वर वर्ण स्वतन्त्र और व्यंजन वर्ण स्वर पर आश्रित हैं। हिन्दी में व्यंजन वर्णों की संख्या 33 है। इनकी निम्नलिखित श्रेणियाँ हैं–

1. स्पर्श 2. अन्तःस्थ 3. ऊष्म

1. स्पर्श व्यंजन

स्पर्श का अर्थ है 'छूना'। जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ को कण्ठ तालु, मूर्धा, आदि का पूरा स्पर्श करना पड़ता है, इन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 25 हैं, अर्थात 'क' से 'म' तक स्पर्श व्यंजन हैं।

2. अन्तःस्थ व्यंजन– अन्तःस्थ का अर्थ है मध्य में अन्तःस्थ व्यंजन चार हैं– य, र, ल, व। इनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओठों के परस्पर सटाने से होता है, किन्तु कहीं भी पूर्ण स्पर्श नहीं होता। इन्हें अन्तःस्थ व्यंजन कहते हैं।

3. ऊष्म व्यंजन– ऊष्म का अर्थ है 'गर्म' जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से गर्म श्वास निकले उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं ये संख्या में चार हैं– श, ष, स, ह ।

चर्चा करें– *वर्ण किसे कहते है तथा वर्ण कितने प्रकार के होते हैं ?*

शब्द

शब्द भाषा की दूसरी इकाई है। वर्णों के योग से शब्द बनते हैं और शब्दों के योग से वाक्य बनते हैं। वाक्यों से भाषा बनती है। इस प्रकार भाषा में शब्द का अत्यधिक महत्व है। संसार के सब व्यवहार शब्द ज्ञान और उसके शुद्ध प्रयोग से होते हैं।

शब्द अनेक वर्णो के प्रयोग से बनते हैं। जैसे– जल शब्द चार वर्णो– ज्+अ+ल्+अ से मिलकर बना है। जल का अर्थ है पानी। अतः शब्द की परिभाषा इस प्रकार है–

एक या एक से अधिक वर्णों के मेल से बनी सार्थक ध्वनि समूह को शब्द कहते हैं। जैसे– राम, लड़की आदि।

शब्द के भेद

अर्थ, प्रयोग (विकार) उत्पत्ति (उद्गम) और व्युत्पत्ति रचना की दृष्टि से शब्द के कई भेद हैं। अर्थ की दृष्टि से शब्द के भेद– अर्थ के अनुसार शब्द के दो भेद हैं–

क. सार्थक ख. निरर्थक

क. सार्थक शब्द– जिस वर्ण समूह का स्पष्ट रूप से कोई अर्थ निकले उसे सार्थक शब्द कहते हैं। जैसे– लड़का, पुस्तक, गाय, दिल्ली, पानी, रोटी आदि।

Downloaded From www.dietmathura.org

ख. निरर्थक शब्द– जिस वर्ण समूह का कोई अर्थ न निकले, उसे निरर्थक शब्द कहते हैं। जैसे– पानी,वानी, रोटी–वोटी, गाना–वाना, मीठा–वीठा आदि।

पानी वानी में वानी का कोई अर्थ नहीं अतः यह निरर्थक शब्द है। इसी प्रकार वाना, वीठा, निरर्थक शब्द हैं।

2. प्रयोग अथवा विकार की दृष्टि से शब्द के भेद– प्रयोग अथवा विकार की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के होते हैं–

क. विकारी ख. अविकारी

क. विकारी शब्द– जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार परिवर्तन का विकार आता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। जैसे–

लिंग	लड़का पढ़ता है।	लड़की पढ़ती है।
वचन	लड़का पढ़ता है।	लड़के पढ़ते हैं।
कारक	लड़का पढ़ता है।	लड़के को पढ़ने दो।

विकारी शब्द के चार भेद होते हैं–

1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. विशेषण 4. क्रिया

1. संज्ञा– किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे– राम, कुत्ता, पाठशाला, पुस्तक आदि।

2. सर्वनाम–जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे– मैं, तुम, वह, यह हम आदि।

3. विशेषण–जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता को प्रकट करते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे– नीला, पीला, मोटा, पतला आदि।

4. क्रिया– वे शब्द जिनसे किसी काम का होना या करना प्रकट हो उन्हें क्रिया कहते हैं।

जैसे– खाना, पीना, रोना, जाना आदि।

ख. अविकारी शब्द– जिन शब्दों के रूप में कोई परिवर्तन या विकार नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। इन्हें अव्यय भी कहते हैं।

जैसे– और, तथा, धीरे–धीरे, कम, अधिक, वाह–वाह, हाय आदि।

अविकारी शब्द के चार भेद होते हैं–

1. क्रिया विशेषण 2. समुच्चय बोधक

3. सम्बन्ध बोधक 4. विस्मयादिबोधक

Downloaded From www.dietmathura.org

1. क्रिया विशेषण – जो शब्द क्रिया की विशेषता को प्रकट करें उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे– धीरे–धीरे, तेज, अब, यहाँ आदि।

2. समुच्चय बोधक– वे शब्द जो शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों को परस्पर जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक कहते हैं। जैसे– और, तथा, परन्तु, किन्तु, तथापि आदि।

3.सम्बन्ध बोधक– जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के दूसरे शब्दों से सम्बन्ध प्रकट करें उन्हें सम्बन्धबोधक कहते हैं। जैसे– ऊपर, नीचे, समीप, पास आदि।

4. विस्मयादिबोधक– जो शब्द हर्ष, उल्लास, प्रसन्नता, क्षोभ आदि को प्रकट करें उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं। जैसे– हाय, धिक, वाह–वाह आदि।

3. उत्पप्ति (उद्‌गम की दृष्टि से शब्द के भेद)

उत्पत्ति या उद्‌गम की दृष्टि से शब्द चार प्रकार के होते हैं–

1. तत्सम 2. तद्‌भव

3. देशज 4. विदेशज या विदेशी

1. तत्सम– तत्सम का अर्थ है उसके (संस्कृत) समान अर्थात संस्कृत भाषा के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे– माता, कवि, विद्या, मुनि, नदी आदि।

2. तद्‌भव– तद्‌भव का अर्थ है उससे उत्पन्न अर्थात संस्कृत से उत्पन्न। संस्कृत भाषा के वे शब्द जो अपने रूप को बदलकर हिन्दी में मिल गये हैं, तद्‌भव शब्द कहलाते हैं। जैसे– आग (अग्नि), घोड़ा (घोटक), दूध (दुग्ध), दाँत (दन्त) आदि।

3. देशज– देशज वे शब्द हैं, जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता। जो शब्द देश की विभिन्न भाषाओं से हिन्दी में अपना लिए गये हैं, उन्हें देशज या देशी शब्द कहते हैं। जैसे– गाड़ी, पेट, खिड़की, लोटा, पगड़ी, चिमटा आदि।

4. विदेशज या विदेशी शब्द– विदेशी भाषाओं से हिन्दी भाषा में आये शब्दों को विदेशी शब्द कहते हैं। जैसे– अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी से हिन्दी में आ गये हैं उन्हें विदेशी या विदेशज शब्द कहते हैं, जैसे– रेडियो, स्कूल, गमला, आलू, फर्श, कालीन, दाम, कूपन आदि।

4. व्युत्पत्ति या रचना की दृष्टि से शब्द के भेद

व्युत्पत्ति या रचना की दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के हैं– 1. रूढ़ 2. यौगिक 3. योगरूढ़

1. रूढ़ शब्द– रूढ़ का अर्थ है परम्परागत अर्थात जो शब्द परम्परागत हों तथा जिनके खण्डों का कोई अर्थ न निकले उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे– रोटी = रो+टी
नदी = न+दी
घोड़ा = घो+ड़ा
इन शब्दों के खण्डों का अलग–अलग कोई अर्थ नहीं हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

2. यौगिक शब्द– ऐसे शब्द जो दो शब्दों के मेल से बनते हैं और जिनके प्रत्येक खण्ड का कोई अर्थ हो, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं। दो या दो से अधिक रूढ़ शब्दों के योग से यौगिक शब्द बनते हैं।

जैसे–

पाठशाला	=	पाठ+शाला
डाकघर	=	डाक +घर
विद्यालय	=	विद्या+आलय
नक्षत्रमण्डल	=	नक्षत्र+मण्डल

3. योगरूढ़ शब्द– ऐसे शब्द, जो यौगिक तो होते हैं अर्थ के विचार से अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक हैं, योगरूढ़ कहलाते हैं। मतलब यह कि यौगिक शब्द जब अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ बताने लगें, तब वे योगरूढ़ कहलाते हैं।

जैसे–

पंकज	= पंक+ज (कीचड़ में पैदा होने वाला) = कमल
लम्बोदर	= लम्ब+उदर (बड़े पेट वाला) = गणेश जी
दशानन	= दश+आनन (दस मुखों वाला) = रावण

चर्चा करें– *उत्पत्ति या उद्‌गम के आधार पर शब्द भेद पर चर्चा कीजिए।*

वाक्य

मनुष्य के विचारों को पूर्णता से प्रकट करने वाले पदसमूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप हैं। यदि शब्द भाषा का प्रारम्भिक अवस्था है, तो वाक्य उसका विकास। सभ्यता के विकास के साथ ही वाक्यों के विकास की वृद्धि होती गई, क्योंकि मनुष्य के भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति वाक्यों में होती है। शब्द तो साधन है जो वाक्य की संरचना में सहायक होते हैं। वाक्य वह सार्थक ध्वनि है, जिसके माध्यम से लेखक लिखकर तथा वक्ता बोलकर अपने भाव या विचार पाठक या श्रोता पर प्रकट करता है।

मन के भाव या विचारों को पूर्णता और स्पष्टता से प्रकट करने वाला सार्थक और व्यवस्थित शब्द समूह वाक्य कहलाता हैं।

जैसे–

- राम के साथ सीता भी वन को गई।
- कछुआ धीरे–धीरे चलता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

वाक्य के भाग

वाक्य के दो भाग होते हैं– 1. उद्देश्य 2. विधेय

1. उद्देश्य– वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं।

2. विधेय– उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए उसे विधेय कहते हैं।

उदाहरण–राम ने रावण को मारा।

राम ने ———————— उद्देश्य

रावण को मारा ———— विधेय

वाक्य के भेद

वाक्यों का वर्गीकरण मुख्यतः दो दृष्टियों से होता है– 1. रचना या स्वरूप की दृष्टि से 2. अर्थ की दृष्टि से।

रचना की दृष्टि से वर्गीकरण– रचना के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

1. सरल या साधारण वाक्य 2. मिश्रित वाक्य 3. संयुक्त वाक्य

1. सरल या साधारण वाक्य– साधारण वाक्य उस वाक्य को कहते हैं, जिसमें एक उद्देश्य और एवं विधेय रहता है। जैसे– कृष्णा प्रतियोगिता में भाग लेती हैं। यहाँ कृष्णा उद्देश्य और प्रतियोगिता के लिए भाग लेती है विधेय है।

2. मिश्रित वाक्य– मिश्रित उस वाक्य को कहते हैं, जिसमें एक प्रधान उपवाक्य हो और एक अथवा अधिक आश्रित उपवाक्य हों। जैसे– स्निग्धा ने कहा कि वर्षा बीमार हैं। यहाँ स्निग्धा ने कहा प्रधान उपवाक्य है और कि वर्षा बीमार है आश्रित उपवाक्य है।

3. संयुक्त वाक्य– जो वाक्य दो या दो से अधिक सरल वाक्यों से बने उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। इसमें दोनों वाक्य पूर्ण होते हैं तथा एक दूसरे पर आश्रित नहीं होते और योजक द्वारा एक दूसरे से जुड़ते हैं। जैसे– राम ने खाना खाया और सो गया। यहाँ और शब्द दो प्रधान वाक्यों को जोड़ता है।

2. अर्थ की दृष्टि से वर्गीकरण– अर्थ के अनुसार– वाक्य आठ प्रकार के होते हैं–

1. विधानवाचक 2. निषेधवाचक
3. आज्ञावाचक 4. प्रश्नवाचक
5. इच्छावाचक 6. संदेह वाचक
7. संकेतवाचक 8. विस्मय बोधक वाक्य

1. विधानवाचक– जिन वाक्यों में क्रिया के होने या करने का सामान्य कथन हो। जैसे– अतुल विद्यालय जाता है। राधा पुस्तक पढ़ती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

2. निषेधवाचक– जिन वाक्यों में किसी कार्य के न होने का भाव प्रकट हो उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे– मोना स्कूल नहीं जाती। अतुल आज गाना नहीं गायेगा।

3. आज्ञावाचक वाक्य– जिन वाक्यों में आज्ञा या अनुमति देने का बोध हो, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं– जैसे– अब आप जा सकते हैं। तुम यहाँ से चले जाओ।

4. प्रश्नवाचक वाक्य– जिन वाक्यों में प्रश्न पूछने का बोध हो उनहें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे– आप कहाँ जा रहे है? अंकुश क्यों रो रहा था?

5. इच्छावाचक वाक्य– जिन वाक्यों से इच्छा, शुभकामना आशीष आदि को बोध होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे– दीर्घायु हो। तुम अपने कार्य में सफल हो।

6. संदेहवाचक वाक्य– जिन वाक्यों से कार्य के होने में संदेह प्रकट हो, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे– श्रुति मुझे भूल चुकी होगी। वे शायद ही आ जाएँ।

7. संकेतवाचक वाक्य– जिन वाक्यों में एक बात का होना दूसरी बात पर निर्भर हो, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे– यदि वर्षा होती तो फसल होती। यदि तुम मेहनत करते तो पास हो जाते।

8. विस्मय बोधक वाक्य– जिन वाक्यों से हर्ष, शोक, घृणा, भय, विस्मय आदि भावों का बोध होता है, उन्हें विस्मय बोधक वाक्य कहते हैं। जैसे– ओह! मेरा सिर फटा जा रहा है। अरे दुष्ट! तुमने यह क्या कर दिया।

चर्चा करें– *सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य तथा मिश्रित वाक्य किसे कहते है?*

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

ध्वनि का अध्ययन

ध्वनि भाषा की लघुतम सार्थक एवं अनिवार्य ईकाई है। समयानुसार इनमें परिवर्तन होते रहते हैं। ध्वनि शब्दों की आधारशिला है, जिसके बिना शब्द की कल्पना नहीं की जा सकती है। अ आ इ ई आदि जब मनुष्य की वागिन्द्रिय द्वारा व्यक्त होते है तब ये ध्वनियाँ कहलाती है। इन ध्वनियों को भाषा वैज्ञानिक शब्दावली में स्वनिम तथा अंग्रेजी में फोनिम कहा जाता है। ध्वनि के बिना भाषा की कल्पना ही नहीं की जा सकती । हम जो कुछ बोलते अथवा उच्चारण करते है वह ध्वनि है। जब यह ध्वनि सार्थक बन जाती है तो भाषा बन जाती है। इसी ध्वनि के लिखित रूप को ध्वनि चिन्ह अथवा वर्ण कहते है। वर्ण को अक्षर भी कहते है। अ, आ, ए, ग, च आदि बोले जाते समय ध्वनियाँ है लेकिन लिखित रूप में ये वर्ण या अक्षर है। इस प्रकार हम देखते है कि ध्वनि बोलने और सुनने में आती है लेकिन वर्ण लिखने पढ़ने और देखने में आता है। मूल ध्वनियाँ स्वर एवं व्यंजन के नाम से ज्ञात है।

मुख्य शिक्षण बिन्दु
- ध्वनि का अध्ययन
- स्वर
- व्यंजन

हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण

हिन्दी वर्णमाला में कुल 52 ध्वनियाँ है। जिनका वर्गीकरण इस प्रकार है–

मानक हिन्दी वर्णमाला

स्वर

	अ	आ	इ	ई	उ	
	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ

व्यंजन

	क	ख	ग	घ	ङ	
	च	छ	ज	झ	ञ	
	ट	ठ	ड	ढ	ण	
	त	थ	द	ध	न	स्पर्श व्यंजन
	प	फ	ब	भ	म	
	य	र	ल	व		अन्तःस्थ
	श	ष	स	ह		ऊष्म
संयुक्त व्यंजन	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		
आयोगवाह	अं (अनुस्वार)		अः (विसर्ग)			
द्विगुण व्यंजन	ड़	ढ़				

Downloaded From www.dietmathura.org

स्वर

जिन ध्वनियों का उच्चारण स्वतंत्र, अपने सहारे या स्वतः हो, उनको स्वर ध्वनि कहा जाता है। डॉ0 बाबूराम सक्सेना के शब्दों में ''स्वर वह घोष ध्वनि है, जिसके उच्चारण में श्वास–नलिका से आती हुई श्वास धारा–प्रवाह से अबाध गति से मुख से निकलती जाती है और मुख–विवरण में ऐसा कोई संकोच नहीं होता कि किंचितमात्र भी संघर्ष या स्पर्श हो।'' संक्षेप में कहा जा सकता हैं कि अबाध गति से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ स्वर कहलाती हैं। ये अपने उच्चारण के साथ–साथ व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में अनिवार्य रूप से सहायक होती हैं। इनके बिना व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण नहीं हो सकता है। ''स्वयं राजन्ते स्वरा अन्वग भवति व्यंजनम्'' पतंजलि। अर्थात् स्वर स्वतन्त्र शोभित होते हैं जबकि व्यंजन उनका अनुसरण करते हैं। हिन्दी की स्वर ध्वनियाँ इस प्रकार हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्पष्ट है कि स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख विवर से निकलती है। इसकी प्रमुख विशेषता निम्न है–

- स्वरों का स्वतन्त्र उच्चारण किया जाता है
- सभी स्वर आक्षरिक होते हैं।
- सभी स्वर अल्पप्राण होते हैं।
- सभी स्वर घोष वर्ण होते हैं।

व्यंजन

व्यंजन वे ध्वनियाँ है जिनके उच्चारण में श्वास में कहीं न कहीं थोड़ी बहुत रूकावट अवश्य आती है। अतः ये स्वतः उच्चरित नहीं होती है। स्वर ध्वनियों की सहायता से इनका उच्चारण होता है। ये पराश्रयी ध्वनियाँ है जैसे क में क् व्यंजन + अ स्वर ध्वनियाँ है स्पष्ट है कि व्यंजन मिश्रित ध्वनियाँ है।

हिन्दी की व्यंजन ध्वनियाँ इस प्रकार हैं–

क्	ख्	ग्	घ्	ङ			
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्			
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्			
त्	थ्	द्	ध्	न्			
प्	फ्	ब्	भ्	म्			
य्	र्	ल्	व्	श्	ष्	स्	ह्

इस प्रकार हिन्दी भाषा में लगभग 44 मूल ध्वनियाँ है।

Downloaded From www.dietmathura.org

ध्वनियों के वर्गीकरण के आधार

ध्वनियों के वर्गीकरण के 5 आधार माने गये हैं– स्वर, काल, स्थान प्रयत्न और अनुप्रदान।

तेषां विभागः पंचधा स्मृतः।

स्वरतः कालतः स्थानात प्रत्यत्यानुप्रदानतः।।

मुख्य रूप से 3 आधार हैं। स्थान, प्रयत्न, करषा (इन्द्रियाँ)

स्थान– ध्वनि उच्चारण में निःश्वास वायु मुख के जिस भाग में अवरुद्ध होती है, उसको स्थान कहते हैं। ओठ से कंठ तक इनकी स्थिति होती है। इनमें सात मुख्य हैं। 1. काकल 2. कण्ठ 3 तालु 4. मूर्द्धा 5. वर्त्स 6. दन्त 7. ओण्ठ। इनके आधार पर ध्वनियों को नाम भी है। उच्चारण में जिस स्थान का सर्वाधिक उपयोग होता है या श्वास जहाँ सबसे अधिक रूकती या टकराती है, वह ध्वनि उसी स्थान के नाम से जानी जाती है। सबका विवरण इस प्रकार हैं–

काकल्य– ह

कण्ठ्य– अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, विसर्ग (अः)।

तालव्य– इ, ई, च, ठ, ज, झ, ञ, य, श।

मूर्द्वन्य– ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष।

वर्त्स्य– न, ल, स।

दन्तय– त, थ, द, ध

ओण्ठय– उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म

क– दन्तओण्ठय– व, फ

ख– द्व्योष्ठय (उभयोष्ठय) प, फ, ब, भ, म, व

प्रयत्न

मुख का वह व्यापार जिससे वर्णों का उच्चारण होता है। उच्चारण के लिए कृत प्रयास की प्रयत्न कहा जाता है। डॉ0 भोलानाथ तिवारी के शब्दों में ध्वनियों के उच्चारण के लिए हवा को रोककर या अन्य कई प्रकारों से विकृत करना पड़ता है। इसी क्रिया को प्रयत्न कहते हैं। हर ध्वनि के लिए कोई न कोई प्रयत्न करना पड़ता है।

प्रयत्न के दो भेद होते हैं– 1. आभ्यान्तर प्रयत्न 2. बाह्म प्रयत्न

1. आभ्यान्तर प्रयत्न– वर्णों का उच्चारण करते समय जो भीतरी या वर्णोच्चारण से पूर्ण प्रयत्न करना पड़ता है, वह अभ्यान्तर प्रयत्न कहलाता है। इसके चार भेद हैं–

1. विवृत– सभी स्वर (अ,आ,इ,ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ) – 11 वर्ण।

2. स्पृष्ट– क से म तक (क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग त वर्ग, प वर्ग) 25 वर्ण

Downloaded From www.dietmathura.org

3. ईषद् विवृत– श, ष, स, ह,– 4वर्ण।

4. ईषत् स्पृष्ट– य, र, ल, व– 4 वर्ण

2. बाह्य प्रयत्न– वर्णों का उच्चारण करते हुए अन्त में किए गए प्रयत्न को ब्राह्य प्रयत्न कहते हैं। इनमें चार भेद मुख्य हैं–

क. घोष– ऐसी ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतन्त्रियाँ परस्पर निकट रहती है जिससे कंपन या तरंग पैदा होती है वे घोष ध्वनियाँ हैं। घोष ध्वनियों सभी स्वर, प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण, य, र, ल, व तथा ह कुल = 31 वर्ण ।

ख. अघोष– इनके उच्चारण में स्वरतन्त्रियाँ दूर रहती है अतः कंपन नहीं होता है इस प्रकार की ध्वनियाँ अघोष ध्वनियाँ कहलाती हैं।

अघोष ध्वनियाँ– प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण श, ष, स। कुल = 13 वर्ण।

ग. अल्पप्राण– जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास वायु का अधिक्य न हो या श्वास बल कम हो उन्हें अल्पप्राण कहते हैं। अल्पप्राण ध्वनियाँ इस प्रकार हैं– सभी स्वर, प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण– य, र,ल, व कुल= 30 वर्ण

महाप्राण– जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा का अधिक्य हो या श्वास बल अधिक हो उन्हें महाप्राण ध्वनियाँ कहते हैं।

महाप्राण ध्वनियाँ– प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा वर्ण और श, ष, स, ह कुल 14 वर्ण

चर्चा करें–

- ध्वनि से आप क्या समझते है ?
- स्वर एवं व्यंजन में अन्तर स्पष्ट कीजिए?

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

स्वरों व्यंजनों तथा व्यंजन समूहों को सुनकर समझना

लिखित भाषा को उस छोटी सी छोटी मूल ध्वनि को वर्ण कहते है जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते। हम जो कुछ बोलते है अथवा उच्चारण करते हैं वह ध्वनि है। जब यह ध्वनि अर्थ सहित होती हैं तो यह भाषा बन जाती है। मूल रूप में वर्ण वे चिह्न होते हैं जो हमारी मुख से निकली हुई ध्वनियों के लिखित रूप होते हैं। लिखित रूप को ध्वनि चिह्न अथवा वर्ण कहते हैं। वर्ण को अक्षर भी कहते हैं। यह भाषा को सबसे छोटी इकाई होती है और इसके खण्ड नहीं किए जा सकते।

मुख्य शिक्षण बिन्दु

- स्वर
- व्यंजन
- सुनकर समझना

जैसे– अ, इ, उ आदि बोले जाते समय ध्वनियाँ हैं, लेकिन लिखित रूप में ये वर्ण अथवा अक्षर है। उदाहरण के लिए– राम बाजार गया। यदि इस वाक्य का विश्लेषण करें तो– (र्+आ+म्+अ) (ब्+आ+ज्+आ+र्+अ) (ग्+ अ+य्+या) प्राप्त होंगे। ये मूल ध्वनियाँ हैं। इन मूल ध्वनियों से शब्द और कई शब्दों से मिलकर वाक्य बनता है।

इस प्रकार वर्ण दो प्रकार के होते हैं– 1. स्वर 2. व्यंजन

स्वर

वे वर्ण जिनके उच्चारण के लिए किसी दूसरे वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, स्वर कहलाते हैं। स्वर वर्ण ये हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ स्वर हैं। अ, इ, उ, ऋ के उच्चारण में थोड़ा समय लगता है इसलिए इन्हें 'ह्स्व स्वर' कहते हैं। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर हैं और इनके उच्चारण में एक मात्रा का दूना समय लगने के कारण वे द्विमात्रिक स्वर कहलाते हैं। एक मात्रिक, द्विमात्रिक के अतिरिक्त स्वर का एक और भेद होता है, जिसे व्लुत (त्रिमात्रिक) कहते है। इसके उच्चारण में ह्स्व का तिगुना समय लगता है। प्लुत को प्रकट करने के लिए कहीं–कहीं पर स्वर के आगे ३ का अंक लिख देते हैं। यह चिल्लाने, गाने और दूर से पुकारने में व्यवह्त होता है। जैसे बुधुआरे–३

व्यंजन

व्यंजन वे वर्ण हैं जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में 'अ' की ध्वनि छिपी रहती है। 'अ' के बिना व्यंजन का उच्चारण सम्भव नहीं। जैसे– क्+अ=क, ख् + अ=ख। व्यंजन वह ध्वनि है, जिसके उच्चारण में भीतर से आती हुई वायु मुख में कहीं न कहीं, किसी न किसी किसी रूप में बाधित होती है। स्वर वर्ण स्वतन्त्र और व्यंजन वर्ण स्वर पर आश्रित हैं। हिन्दी में व्यंजन वर्ण निम्नलिखित हैं–

Downloaded From www.dietmathura.org

क	ख	ग	घ	ङ	–	क वर्ग	
च	छ	ज	झ	ञ	–	च वर्ग	
ट	ठ	ड	ढ	ण	–	ट वर्ग	
त	थ	द	ध	न	–	त वर्ग	स्पर्श व्यंजन
प	फ	ब	भ	म	–	प वर्ग	
य	र	ल	व		–		अन्तःस्थ
श	ष	स	ह		–		ऊष्म

क्ष त्र ज्ञ श्र संयुक्त व्यंजन है। क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ये चार संयुक्त व्यंजन वर्णों के योग से बनते हैं–

क्+ष =क्ष

त्+र = त्र

ज्+ञ= ज्ञ

श्+र = श्र

इनके अतिरिक्त अनुस्वार (ं) चन्द्र बिन्दु (ँ) तथा विसर्ग (:) भी व्यजनों के अन्तर्गत समझे जाते हैं, क्योंकि इनका उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना नहीं हो सकता। उच्चारण की सुविधा के लिए ड, ढ के नीचे बिन्दी लगाकर दो और वर्ण बनाये जाते हैं– ड़ और ढ़ इन ध्वनियों की विशेषता यह है कि ये ध्वनियाँ शब्द के आरम्भ में नहीं आती है। ये ध्वनियाँ शब्द के बीच में और अन्त में आती हैं। इन दोनों ध्वनि का प्रयोग शब्द के अन्त में नहीं होता है। वरन शब्द के मध्य और अन्त में होता है।

जैसे– सड़क, पहाड़, साड़ी, रगड़, पढ़, चढ़ाई, बूढ़ा, गढ़ आदि।

ऑ, अंग्रेजी भाषा के शब्दों के प्रयोग के लिए हिन्दी भाषा ने 'ऑ' ध्वनि को भी हिन्दी वर्णमाला में स्वीकार कर लिया है। जैसे– डॉक्टर, कॉलेज, कॉफी आदि।

सुनने और सुनकर उसका अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया को श्रवण कहा जाता है। सामान्यतः कानों द्वारा जो ध्वनियाँ ग्रहण की जाती हैं और मस्तिष्क द्वारा उनकी अनुभूति तथा प्रत्यक्षीकरण को ही श्रवण कहते हैं। मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त भाव एवं विचारों को सुनकर समझना। भाषा के सन्दर्भ में अर्थ बोध एवं भाव की प्रतीति सुनने के आवश्यक तत्व होते हैं। इस प्रकार जब कोई व्यक्ति हमारे सामने अपने भाव एवं विचार मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है और हम उसे सुनकर, भाव एवं विचार समझते एवं ग्रहण करते है तो हमारी यह क्रिया सुनकर समझना कहलाती है। सुनकर समझना की सार्थकता के लिए कुछ आवश्यक आधार होते हैं। ये आधार इस प्रकार हैं–

- सुनने वाले की श्रवण इन्द्रिय सामान्य एवं क्रियाशील हो।

Downloaded From www.dietmathura.org

- भाषा की ध्वनियों से शब्दों का बोध होना।
- सुनने वाला ध्वनियों के प्रति सजग हो और उन्हें समझने का प्रयास करता हो।
- ध्वनियों से जो भाव एवं विचार सम्प्रेषित किये जा रहे हैं उन्हें श्रोता बोधगम्य कर सके।
- बालक सुनने के शिष्टाचार का पालन कर सके– मतभेद होते हुए भी धैर्यपूर्वक सुन सके वक्ता के साथ सहानुभूति रख सके। बीच में अपने साथियों से बातचीत न करे।
- वह मनोयोग पूर्वक सुन सके।
- बालक सुनते–सुनते समान ध्वनियों का पारस्परिक अन्तर समझ सके।
- यथा– ह्रस्व और दीर्घ में अन्तर कर सके।
- स्वर और व्यंजन के अन्तर को समझ सके।
- वह बलाघात, स्वराघात स्वर के आरोह–अवरोह यदि तथा वक्ता की आगिंक चेष्टाओं के अनुसार भाव या अर्थ ग्रहण कर सके।
- वह शब्दों मुहावरों एवं उक्तियों का प्रसंगानुकूल वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यंगार्थ जैसे भी स्थिति हो ग्रहण कर सके।

शब्द सुनते ही मन में विचार की प्रतिमायें बन जाती हैं, जिससे प्रत्येक शब्द का अर्थ बालक समझ जाता है अर्थ और विचार के बिना भाषा अस्तित्वहीन है। यह तभी सम्भव है जब कक्षा–कक्ष का वातावरण शान्त हो और विद्यार्थी एकाग्र मन से शिक्षक की बातों को ध्यानपूर्वक ग्रहण करें और स्पष्ट रूप से व्यक्त करें। किसी भी बात को ध्यानपूर्वक सुनने और सही रूप में उसे ग्रहण करना तथा व्यक्त करना ही सुनकर समझना कहलाता है।

चर्चा करें– *उच्चारण की दृष्टि से हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण कीजिए ?*

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

दिए गये निर्देश, सन्देश, सुनाये गए वर्णन, कविता, कहानियों, लोकगीतों आदि में निहित भावों तथा विचारों को सुनकर समझना

भाषा भावों एवं विचारों की जननी तथा अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा के बिना मनुष्य पशु के समान है। भाषा के कारण ही मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है भाषा का अविष्कार एवं विकास वस्तुतः मनुष्य का विकास है। इस प्रकार मानव के हाथ में भाषा वह शक्ति है, जिसके सहारे वह अपने आप को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करता है और दूसरों को स्वयं समझता है। भाषा के माध्यम से ही अपने भावों को प्रकट करता है, दूसरे के भावों को ग्रहण करता है और अपने भावों को भाषा का सहारा देकर विश्व के लिए कोई चिरंतन, शाश्वत कृति को जन्म देता है।

भाषा एक कला है, कौशल है। भाषा शिक्षण का अर्थ बालकों में भाषायीं कौशलों– सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने में दक्ष करना है। सुनना कौशल का सम्बन्ध कान से है। भाषा सीखने का यह प्रथम सोपान है। छात्र कहानी, कविता, वर्णन, लोकगीत आदि का ज्ञान सुनकर ही प्राप्त करता है और उसका अर्थ भी ग्रहण करता है। वास्तव में सुनना कौशल भाषा सीखने का प्रमुख तथा प्रथम अंग है। इसके आधार पर ही अन्य कौशलों का विकास किया जा सकता है। भाषा को सीखना और सिखाना दोनों ही एक कौशल है। बच्चा सुनकर तथा पढ़कर भाषा सीखता है और दूसरे के भावों और विचारों को समझता है तथा बोलकर और लिखकर अपने भावों और विचारों को व्यक्त करता है। इस प्रकार भाषा कौशल के अन्तर्गत चार बातें आती हैं– सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना। शिक्षक को इन कौशलों को इस प्रकार विकसित करना है कि बच्चे को दूसरे के भावों और विचारों को ग्रहण करने तथा अपने भावों और विचारों को व्यक्त करने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो। वह जो कुछ सुने और पढ़े वही समझे और जो विचार व्यक्त करना चाहता है वही उसके कथन और लेखन में हो।

सुनना भाषा सीखने का सबसे प्रथम साधन है। आरम्भ में बालक अपने माता–पिता को बोलते सुनता है। वह सुनकर समझने और अनुकरण कर बोलने का प्रयत्न करता है। इसी प्रक्रिया से धीरे–धीरे वह भाषा को सीख लेता है जो उसके घर–परिवार में और पास–पड़ोस में बोली जाती है, यदि यह भाषा मानक नहीं होती तो मानक भाषा वह विद्यालय में जाकर सीखता है। इसमें भी सुनने का अधिकाधिक अवसर दें। उसे कवितायें, कहानियाँ घटनाओं, स्थानों और दृश्यों आदि के वर्णन सुनायें। आपके शिक्षक की सुनाने की शैली ऐसी होनी चाहिए कि छात्र सुनकर पूरा अर्थ ग्रहण करता चले, आपके द्वारा बोले गए शब्दों का उच्चारण शुद्ध हो और आप बलाघात, स्वर के आरोह–अवरोह तथा अनुतान का ऐसा प्रयोग करें कि वह छात्र के लिए अर्थग्रहण करने में सहायक हों।

आप कोई प्रश्नवाचक वाक्य बोले तो उस वाक्य को इस ढंग से बोलें कि आपका छात्र वाक्य सुनकर ही समझ जाए कि प्रश्न पूछा गया है। इसी प्रकार कौतूहल आश्चर्य, घृणा, करूणा आदि भावों को व्यक्त करने वाले वाक्यों को भी भावानुकूल शैली में बोलें। आपको इस बात को बराबर ध्यान में

Downloaded From www.dietmathura.org

रखना है कि छात्र आपका अनुकरण करके बोलेगा। बोलते समय आप अपनी मुद्रा स्वाभाविक रखें। आप बोलते समय बच्चे के स्तर की भाषा का ही प्रयोग करें। यदि आपके वाक्य अधिक लम्बे होंगे तो आपके छात्र उनके अर्थ को नहीं समझ सकेंगे। भाषा के स्तर को धीरे–धीरे उठाना है।

छात्रों को आकाशवाणी और दूरदर्शन द्वारा, प्रसारित बच्चों को कार्यक्रम सुनने को प्रोत्साहित करें। शिक्षक में बालक की मुद्रा देखकर उसके मन के भावों को समझने की क्षमता होनी चाहिए। जिस समय आप कुछ सुना रहे हैं आपकी दृष्टि छात्रों के चेहरों पर रहनी चाहिए। छात्र के चेहरे को देखकर आपको यह समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि छात्र ने जो कुछ सुन लिया है उसे समझ लिया है कि नहीं, सुनने से सम्बन्धित निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक हैं–

- सुनकर समान ध्वनियों में विभेदीकरण कर सकना।
- सुनकर शब्द के प्रसंगानुसार अर्थ को ग्रहण कर सकना।
- वाक्यों को सुनकर उनके अर्थ को समझ सकना।
- सुनी हुई लोकगीत , कहानी को समझकर उसे अपनी भाषा में कह सकता।
- कविताओं और चुटकुले आदि को सुनकर उनका आनन्द ले सकें।
- बलाघात, अनुतान, आरोह–अवरोह आदि व्यक्त किये गये भावों को समझ सकना।
- सुनी हुई कहानी– कविता के भाव को ग्रहण करना।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम में होने वाले संवादों को अर्थग्रहण करते हुए भावों एवं विचारों को सुनकर समझना।
- रोडियो, दूरदर्शन के विविध कार्यक्रमों को समझते हुए सुनना।

कहानी, कविता, लोकगीत आदि के माध्यम से निहित भावों एवं विचारों के सुनकर समझना– हौसला नामक कहानी से यह पता चलता है कि कितनी भी विषम परिस्थिति हो हमें अपना धैर्य और साहस नहीं खोना चाहिए। हौसला, नामक कहानी में जो मुख्य पात्र माइकल है उसके साथ दुर्घटना हो जाती है तो भी वह साहस और धैर्य नहीं छोड़ता है और रोजी दीदी के सहयोग से वह आगे बढ़ता है। रोजी दीदी विषम परिस्थिति में भी माइकल का साथ नहीं छोड़ती है और जो जरूरत की चीज होती है वह माइकल को लाकर देती रहती है। माइकल अपने दोस्त अवनीश से बताता है कि उस समय रोजी दीदी ने मुझे हताशा से उबारा। तुम्हें याद है न अवनीश, वह दुर्घटना, टाँगे गँवा देने से मैं जिन्दगी से निराश हो गया था।

रोजी दीदी कहती थी कि तुम जरूर एक प्रसिद्ध संगीतकार बनोगे। धीरे–धीरे मैंने संगीत का अभ्यास पारम्भ किया और अपने सपने को साकार किया। रोजी दीदी के सहयोग और प्रेरणा से वह अपने लक्ष्य की प्राप्त करता है। इस प्रकार कितनी भी विषम परिस्थिति हो हमें साहस और धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि वह इस प्रकार की कहानियाँ सुनाकर बच्चों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें। शिक्षक को बच्चो को प्रोत्साहित करना चाहिए। इस प्रकार की कहानियों से छात्रों को

Downloaded From www.dietmathura.org

अवगत कराए और छात्र भी अपने में चरितार्थ करें। कहानी के द्वारा सुनकर समझाने की ध्यान देने योग्य बातें–

- कहानी के तत्वों (कथानक, पात्र, संवाद वातावरण, उद्देश्य भाषा शैली) से परिचित होना तथा प्रमुख पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को सुनकर समझना।
- वक्ता के कथन के महत्वपूर्ण तथ्यों, विचारों भावों आदि को सुनकर समझना।
- वक्ता के हाव–भाव एवं भंगिमाओं से उनके कथन के आशय को सुनकर समझना।
- कहानी में प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुसार अर्थ को सुनकर समझना।

इसी क्रम में भाषा में लोकगीत से तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष में प्रचलित स्थानीय भाषा में रचे गए गीतों से है। ये लोकगीत उस क्षेत्र विशेष की सभ्यता तथा संस्कृति को अभिव्यक्त करते हैं। जैसे कजरी, सोहर, चैती, लंगुरिया आदि लोकगीत की प्रसिद्ध शैलियाँ है। ये लोकगीत शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोकव्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनन्द की तंरग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज व्यक्त करता है वही लोकगीत है।

इसी प्रकार कविता भाषा की साहित्यिक एवं कलात्मक सौन्दर्यानुभूति का प्रमुख स्रोत रही है। अतः शिक्षक की कविता शिक्षण से पूर्व यह जान लेना चाहिए कि कविता के सौन्दर्य तत्व क्या है तथा उसकी अनुभूति किस प्रकार करायी जा सकती है। प्रकृति की सीख कविता से हमें यह सीख मिलती है कि पर्वत की तरह ऊँचा उठना चाहिए अर्थात हमें अपने जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को निश्चित कर उसे प्राप्त करना चाहिए और समाज के समक्ष महान बनने और समाज के लिए अपना योगदान देने का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। सागर की तरह हमें गम्भीर होना चाहिए। क्योंकि जीवन पथ पर अनेक कठिनाइयाँ आती हैं, कठिनाइयों से विचलित होकर हमें अपने कर्त्तव्य एवं लक्ष्य को नहीं भूलना चाहिए। जिस प्रकार सागर की लहरें उठकर और गिरकर आगे बढ़ती हैं उसी प्रकार संपत्ति और विपत्ति में समान भाव से हमें अपने कर्त्तव्य पथ पर उमंग एवं धैर्य के साथ आगे ही बढ़ते जाना चाहिए।

पृथ्वी हमें यह सन्देश देती है कि जिस प्रकार पृथ्वी अच्छी एवं बुरी दोनों ही प्रकार की चीजों को धारण करती है, उसी प्रकार हमें भी हार–जीत दुःख–सुख, आरोप, प्रत्यारोप से विचलित हुए बिना अपने कर्त्तव्य पथ पर अडिग रहना चाहिए और अपने महान कार्यों से नभ की तरह सम्पूर्ण जगत में अपना यश फैलाना चाहिए, ताकि मानवता उससे लाभान्वित हो सके।

- कविता में निहित महत्वपूर्ण भावों एवं विचारों तथ्यों को सुनकर समझना वक्ता के मनोभाव को सुनकर समझना।
- कविता में आए केन्द्रीय भाव या विचार को सुनकर अच्छी तरह से ग्रहण करना (यह तभी सम्भव है जब कक्षा–कक्ष का वातावरण शान्त हो और बच्चे ध्यान पूर्वक सुन रहे हो।)
- शिक्षक के निर्देश के द्वारा कविता में आए हुए शब्दों मुहावरों व उक्तियों का प्रसंगानुकूल अर्थ और भाव को सुनकर ग्रहण करना।
- कविता में आए हुए रस, छन्द, अंलकार को सुनकर समझ सकना।
- कविता में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुसार अर्थ समझना।

चर्चा करें–

- *कक्षा में कविता शिक्षण का क्या महत्व है?*
- *कहानी शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए ?*
- *लोकगीत से आप क्या समझते है ?*

Downloaded From www.dietmathura.org

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भाषा की कितनी इकाइयाँ है ?

क. तीन　　ख. दो

ग. चार　　घ. एक

2. वर्णों के समूह को कहते हैं।

क. वर्णमाला　　ख. शब्द

ग. वाक्य　　घ. इनमें से कोई नहीं।

3. वर्णों के सार्थक समूह को कहते हैं।

क. शब्द　　ख. वाक्य

ग. वर्ण　　घ. इनमें से कोई नहीं

4. 'पाठशाला' शब्द है–

क. योगरूढ़　　ख. यौगिक

ग. रूढ़　　घ. इनमें से कोई नहीं

5. रचना के अनुसार वाक्य कितने प्रकार होते हैं–

क. तीन　　ख. दो

ग. चार　　घ. एक

6. वाक्य के भाग हैं–

क. उद्देश्य　　ख. विधेय

ग. दोनों　　घ. इनमें से कोई नहीं

7. 'ख' ध्वनि है–

क. महाप्राण　　ख. अल्पप्राण ध्वनि

ग. दोनों　　घ. इनमें से कोई नहीं

8. 'क' ध्वनि का उच्चारण स्थान है–

क. कण्ठ　　ख. ओण्ठ

ग. मूर्धा　　घ. दन्त

9. अ, इ, उ, ऋ स्वर है–

क. दीर्घ स्वर　　ख. प्लुत स्वर

ग. ह्रस्व स्वर　　घ. इनमें से कोई नहीं।

10. य, र, ल, व व्यंजन हैं–

Downloaded From www.dietmathura.org

क. स्पर्श व्यंजन　　ख. ऊष्म व्यंजन

ग. अन्तःस्थ व्यंजन　　घ. इनमें से सभी

अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

1. वर्ण कितने प्रकार के होते है ?
2. व्युत्पति के अनुसार शब्द कितने प्रकार के होते है ?
3. सरल वाक्य किसे कहते है ?
4. वर्णों के बोलने में जो परिश्रम करना पड़ता है उसे क्या कहते है ?
5. उच्चारण की दृष्टि से व्यंजन कितने प्रकार के होते ?

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. स्वर के कितने भेद है? प्रत्येक का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
2. विकारी और अविकारी शब्दों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. मिश्रित और सरल वाक्य में अन्तर स्पष्ट कीजिए
4. अल्पप्राण और महाप्राण ध्वनियों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
5. ह्रस्व और दीर्घ स्वर में अन्तर स्पष्ट कीएिज।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वर्ण किसे कहते है ? स्वर तथा व्यंजन का अन्तर स्पष्ट कीजिए ?
2. उत्पत्ति के अनुसार शब्द कितने प्रकार के होते है? प्रत्येक की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए ?
3. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के कितने भेद किए जाते है? इनमें से प्रत्येक प्रकार के वाक्य के उदाहरण दीजिए।
4. हिन्दी की प्रचलित ध्वनियों को बाह्म प्रयन्त और आभ्यान्तर प्रयत्न की दृष्टि से किन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है ?
5. व्यंजन किसे कहते है। इसके भेद उदाहरण सहित लिखिए।

या

व्यंजनों के भेदों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

Downloaded From www.dietmathura.org

हिन्दी/अंग्रेजी की सभी ध्वनियों, स्वरों, व्यंजनों का शुद्ध उच्चारण

हिन्दी भारत के विशाल भू–भाग में बोली और समझी जाती है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली के निवासियों की यह मातृभाषा है। इसका क्षेत्र इतना व्यापक है कि बोलने वालों में स्थानीय प्रभाव आ जाना स्वाभाविक है। क्षेत्र भेद के कारण उच्चारण भेद आ जाता है। क्षेत्र विशेष में रहने वालों के लिए हिन्दी का उनका अपना उच्चारण बोली से प्रभावित हो सकता है। ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी क्षेत्रों के लोग यदि अपने ठेठ लहजे में बोलें तो वे एक दूसरे को कठिनाई से समझ पायेंगे। खड़ी बोली क्षेत्र के निवासियों की भाँति ही हमारा उच्चारण शुद्ध कहा जायेगा, परन्तु जब कोई बोली साहित्यिक भाषा बनती है और अनेक क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है तो उसका रूप निखरता जाता है और मूल क्षेत्र के तत्त्वों के अतिरिक्त अन्य विशेषताएं मिल जाती हैं। शनैः शनैः ऐसी भाषा एक स्वतन्त्र भाषा के रूप में विकसित हो जाती है और कुछ भेदों के होते हुए भी उसका उच्चारण समस्त क्षेत्रों में परिनिष्ठित होता जाता है। शिक्षित एवं शिष्ट जन उस परिनिष्ठित रूप का उच्चारण करने लगते है। इसमें बोलीगत कुछ भेद अवश्यम्भावी हैं किन्तु बहुसंख्यक व्यक्तियों द्वारा जो रूप ग्राह्य है, वह शुद्ध उच्चारण ही कहा जाएगा।

मुख्य शिक्षण बिन्दु

- हिन्दी की सभी ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण
- उच्चारण की सामान्य अशुद्धियाँ
- अशुद्ध उच्चारण के कारण
- सुधार के उपाय
- उच्चारण के नियम

हिन्दी की सभी ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण

किसी भी भाषा में उच्चारण का अत्यधिक महत्त्व होता है। भाषा सीखने और सिखाने में उच्चारण की अशुद्धियाँ बहुत बाधक होती हैं शुद्ध उच्चारण ही भाषा विशेष के ज्ञान का प्रथम चरण होता है। हिन्दी भाषा उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रही है और राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होने के पश्चात् इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है। इसलिए इसे शुद्ध, समृद्ध, सर्वप्रिय तथा सर्वग्राह्य बनाने के लिए उच्चारण की शुद्धता की ओर ध्यान देना परमावश्यक है।

उच्चारण की सामान्य अशुद्धियाँ

प्राथमिक कक्षाओं के बालक अधिकतर निम्न प्रकार की अशुद्धियाँ करते हैं–

- वर्णमाला के उच्चारण में 'अ' को 'आ' या अं बोलते हैं। 'क ख ग' आदि को कभी–कभी वे 'का ख गा' या ' कै खै गै' बोलते है।
- शब्द के अन्त में लिखते 'इ' हैं और कहते 'ई' हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

- जैसे–शान्ति को शान्ती, कवि को कवी।
- शब्द के अन्त में लिखते 'उ' हैं और कहते ऊ हैं। जैसे– किन्तु को किन्तू, मनु को मनू।
- 'ऋ' लिखकर 'र' पढ़ते हैं। जैसे– वृक्ष को व्रक्ष पढ़ते है।
- 'छ' को 'श' कहते है। जैसे 'मछली' को मशली।
- 'छ' को 'च' कहते है। जैसे– छोटे को चोटे।
- 'छ' को 'क्ष' कहते है। जैसे छात्र को क्षात्र।
- 'श' को 'स' भी कहते हैं। जैसे– किशन को किसन, किशमिश को किसमिश, शोर को सेर
- 'स' को 'श' भी कहते हैं। जैसे–सुशील को शुशील, सुशोभित को शुशोभित

चर्चा बिन्दु– *उच्चारण की सामान्य अशुद्धियाँ क्या हो सकती है?*

अशुद्ध उच्चारण के कारण

छात्रों के उच्चारण में अनेक दोष आ जाते हैं और वे अशुद्ध उच्चारण करने लगते हैं। अशुद्ध उच्चारण के प्रायः निम्नलिखित कारण होते हैं–

- ध्वनि लोपन– किसी ध्वनि का लोप कर देना।
- ध्वनि–विकृति– किसी ध्वनि का अल्प उच्चारण या अति उच्चारण करना।
- ध्वनि–विपर्यय– किसी ध्वनि को उलट पलट देना।
- ध्वनि का सही ज्ञान न होना।
- उच्चारण के साधारण नियमों का ज्ञान न होना।
- सुर, अनुतान, बलाघात आदि का अनुचित प्रयोग।
- हकलाना एवं तुतलाना।
- दोषयुक्त श्रवण प्रक्रिया (कम सुनना)
- कुछ अन्य शारीरिक विकृतियाँ जैसे– ओष्ठ, विकृति, दन्त क्षय, कोमल तालु अभाव, कालत्व अभाव या लघुत्व।
- स्थानीय बोलियों का प्रभाव।
- शब्दलाघव की प्रवृत्ति।
- अध्यापक द्वारा निर्देशन की कमी।

चर्चा बिन्दु– *अशुद्ध उच्चारण के प्रमुख कारण क्या हो सकते है ?*

सुधार के उपाय

यदि अध्यापक निम्नलिखित उपाय कर लें तो छात्रों के उच्चारण में सुधार सकते हैं–

- उच्चारण सुधार का प्रयास प्रारम्भिक स्तर से ही होना चाहिए। प्रारम्भ में उच्चारण अशुद्ध हो जाने पर बाद की कक्षाओं में सुधारना कठिन हो जाता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

- जिन छात्रों का उच्चारण अशुद्ध हो उनका अनुकरण अन्य छात्र न करने पायें, इसका ध्यान रखा जाए।
- मौखिक कार्य का उच्चारण सुधार में विशेष महत्त्व है। अतः कक्षा में मौखिक कार्य के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाए।
- यदि संकोच, डर या आत्मविश्वास की कमी के कारण उच्चारण अशुद्ध हो रहा है तो अध्यापक को चाहिए कि छात्र के प्रति सहानुभूति एवं धैर्य के साथ व्यवहार करे। आवश्यकता पड़ने पर मनोविज्ञान विशेषज्ञ से परामर्श लिया जा सकता है।
- अध्यापक अपना उच्चारण भी सुधार लें। उच्चारण–शिक्षा में अनुकरण का विशेष महत्त्व है।
- छात्रों में शुद्ध उच्चारण करने की आकांक्षा जागृत की जाए। उन्हें परिनिष्ठित उच्चारण करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- उच्चारण प्रतियोगिताओं का आयोजन करके पुरस्कार की व्यवस्था की जाए। इससे छात्र उच्चारण सुधारने का प्रयास करेंगे।
- आवश्यकता हो तो चिकित्सकों की सहायता ली जाए। शारीरिक विकृतियों की दशा में तो चिकित्सकों का परामर्श अनिवार्य है।
- उच्चारण के कतिपय नियमों का छात्रों को ज्ञान करा देना चाहिए। यहाँ उच्चारण के कुछ उपयोगी नियमों पर विचार किया जा रहा है।

चर्चा बिन्दु– *छात्रों में उच्चारण सम्बन्धी शुद्धता के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं ?*

उच्चारण के नियम

शिक्षक को उच्चारण सम्बन्धी नियमों का भी बोध होना चाहिए। भाषा विज्ञान में इसका विषद्वर्णन किया जाता है। यहाँ पर कुछ नियमों का उल्लेख किया गया है जो कि प्राथमिक स्तर के शिक्षकों एवं बच्चों के लिए आवश्यक हैं–

- हिन्दी वर्णमाला का समुचित ज्ञान होना।
- ध्वनि तत्त्व का बोध होना, मुख के अवयवों व अंगों का उच्चारण से सम्बन्ध का ज्ञान होना।
- कठिन शब्दोच्चारण का अभ्यास कराना।
- शब्द विश्लेषण विधि का प्रयोग करना अर्थात खण्डों में उच्चारण कराना।
- आदर्श अनुकरण विधि का प्रयोग करना।
- ईकार–ऊकार सम्बन्धी अशुद्धियों का बोध कराना।
- शुद्ध उच्चारण के प्रति शिक्षक की सतर्कता होना।
- स्वराघात, सुस्वरता, बल, विराम, उतार–चढ़ाव, आवृत्ति तथा गति पर ध्यान देना।
- उच्चारण प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
- ध्वनियों के उच्चारण स्थान का ज्ञान भी उच्चारण सीखने में सहायक होता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

लिपि की सभी ध्वनियों के लिपि संकेतों की पहचान का शुद्ध रूप में पढ़ना।

'वर्णमाला' के शब्द लिखने की प्रणाली है। भाषा को दृश्यरूप में स्थापित्व प्रदान करने वाले याद्वच्छिक वर्ण प्रतीकों की परम्परागत व्यवस्था लिपि कहलाती है। भाषा एवं लिपि अभिव्यक्ति के दो प्रमुख साधन हैं। भाषा केवल उच्चारण के माध्यम से विकास पाती है और उच्चारण में भिन्नता होने पर बदल जाती है, जबकि लिपि लेखन का माध्यम है और बहुत दिनों तक भाषा को जीवित रखती है। लिपि भाषा का मूर्त रूप है। लिपि विकास की मुख्यतः निम्न अवस्थाएँ मानी जाती है–

मुख्य शिक्षण बिन्दु

- देवनागरी लिपि
- देवनागरी लिपि का महत्व
- शुद्ध रूप में पढ़ना

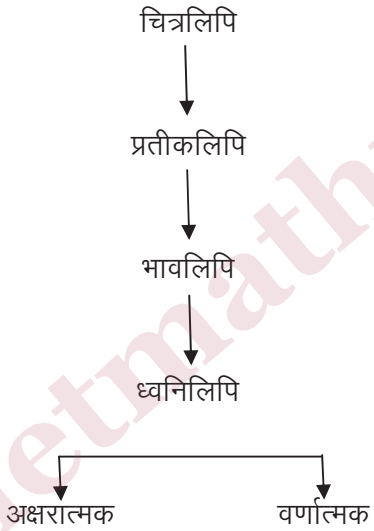

लिपि के उद्भव एव विकास में ध्वन्यात्मक संकेतों का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है आज हम इन्हीं ध्वनि संकेतों या लिपि का प्रयोग कर रहे है। ध्वन्यात्मक लिपि संकेतों या तो अक्षरात्मक होते हैं या वर्णात्मक/अक्षरात्मक लिपि में स्वर और व्यंजन के योग से अक्षर बनते है। वर्णात्मक लिपि में प्रत्येक वर्ण का विश्लेषण अलग–अलग हो जाता है। यहीं से ध्वन्यात्मक प्रतीकों ने लेखन पद्धति को जन्म दिया।

देवनागरी लिपि

हमारी मातृभाषा हिन्दी है और हिन्दी की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि का विकास भी ब्रह्मी लिपि की एक शाखा के रूप में हुआ है। देवनागरी के नामकरण में भी विद्वानों की वैचारिक भिन्नता रही है, 'देवनागरी' और 'नागरी' दो नामों से जानी जाने वाली लिपि का प्रथम प्रयोग गुजरात के राजा जयभट्ट (सातवीं सदी) के एक शिलालेख में मिलता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

देवनागरी लिपि का महत्व

देवनागरी लिपि आज संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है। इसमें संसार की लगभग सभी भाषाओं की ध्वनियों को उच्चरित कर सकने की शक्ति और क्षमता है। इस लिपि में जो लिखा जाता है, उसका उच्चारण बिल्कुल वही किया जाता है, जबकि संसार की अन्य किसी लिपि में यह गुण रूप में नहीं मिलता। इस लिपि में एक निश्चित वर्ण का प्रयोग ही उचित माना गया है। इसी कारण देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि माना जाता है।

चर्चा बिन्दु– *बच्चों को अक्षरों की पहचान एवं शुद्ध रूप में पढ़ना किस प्रकार सिखाएगें?*

शुद्ध रूप में पढ़ना

किसी भी भाषा को सीखने का प्रथम सोपान उसकी मौखिक भाषा है। भाषा सीखने की प्रक्रिया में मौखिक या बोलचाल की भाषा का विशेष महत्व है। लगभग 5–6 वर्ष की आयु में बच्चा जब विद्यालय में कदम रखता है, तो वो अपने साथ कम से कम मातृभाषा लेकर तो आता ही है। वह उस भाषा को अच्छी समझ और बोल सकता है। मौखिक भाषा विकास के लिए सर्वप्रथम शिक्षक का बच्चों से जुड़ाव विशेष रूप से आवश्यक है। शिक्षक बच्चों को बोलने के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराएं। बच्चों से जोर से पढ़ने का अभ्यास कराना चाहिए। इसके लिए कहानी, कविता के माध्यम से बच्चों के साथ बातचीत करके उनके शब्द भण्डार को बढ़ाना होगा। कविता, कहानी में क्या–क्या अच्छा लगा? कौन सा पात्र अच्छा लगा?

इस तरह के प्रश्नों के माध्यम से बच्चों के अन्दर की झिझक दूर करके अपनी बात को स्वतन्त्र रूप से कहने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। खेल के माध्यम से भी बच्चों को स्वतन्त्र रूप से बोलने का अवसर दिया जाए। मौखिक भाषा के विकास में चित्र एक सशक्त माध्यम है। बच्चे अनेक चित्रों से परिचित होते हैं। चित्रों की सहायता से अक्षरों की पहचान करने में बच्चे रुचि के साथ सीखते हैं। अक्षरों की पहचान के साथ–साथ शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास कराया जाए। शिक्षक वर्णमाला चित्र को कक्षा में लगाकर अभ्यास कराएं। शिक्षक एक–एक अक्षर का शुद्ध उच्चारण करें और सभी बच्चे उसी प्रकार बोलें। यदि बच्चे शुद्ध उच्चारण न कर रहे हो तो पहले कक्षा के बच्चों की मदद से सुधार करवाए। यदि बच्चे शुद्ध उच्चारण नहीं कर पा रहे हो तो शिक्षक स्वयं सहयोग करें।

शिक्षक विभिन्न अक्षरों के अलग–अलग अक्षरकार्ड बच्चों के सामने रखकर शब्द बनवाएं तथा उनका शुद्ध उच्चारण कराते हुए पढ़वाए।

न + ल , न + ल

चित्र कार्ड के माध्यम से भी अक्षर कार्ड को रखवाकर उनको पढ़वाए जैसे– ज + ग

पुस्तक के विभिन्न पाठों मे दिये गये चित्रों को बच्चों को दिखाकर उसके विषय में पूछे तथा उसका शुद्ध उच्चारण कराएं।

Downloaded From www.dietmathura.org

मात्रा पठन

जब बच्चा अक्षर को पहचान कर शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने लगे तब बच्चे को मात्रा का बोध कराया जाए। कक्षा में बच्चों को मात्रा सिखाते समय श्यामपट्ट पर अ से अः तक के अक्षर क्रमानुसार एक पंक्ति में लिखकर अक्षरों के नीचे उसकी मात्राएं निम्नानुसार लिखे–

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

– ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ ं ः

शिक्षक प्रत्येक अक्षर की मात्रा को हस्व/दीर्घ उच्चारण के साथ पढ़े। अभ्यास कराने के लिए बारी–बारी बच्चों को बुलाकर उनसे हर मात्रा को पढ़वायें तथा सभी बच्चे उसको दोहराए। मात्रा के प्रयोग के साथ शब्द पढ़ने का अभ्यास कराए। अभ्यास कराने में निम्नलिखित तालिका का प्रयोग कर सकते हैं–

स्वर	मात्रा	शब्द	मात्रा युक्त अन्य शब्द
अ	–	क ल = कल	फल, हल
आ	ा	क ा र = कार	आम, बाग
इ	ि	ि प त ा = पिता	दिन, पिन
ई	ी	त ी र = तीर	खीर, पानी
उ	ु	स ु ख = सुख	सुन, बुन
ऊ	ू	फ ू ल = फूल	धूल, दूध
ऋ	ृ	क ृ ष = कृषि	वृक्ष, कृषक
ए	े	ख े ल = खेल	मेला, केला
ऐ	ै	स ैर= सैर	पैर, तैर
ओ	ो	ब ो ल = बोल	गोल, मोर
औ	ौ	क ौ न = कौन	मौन, और
अं	ं	श ं ख = शंख	पंख, रंक
अ :	:	अ त : = अतः	नमः, प्रातः

वर्णों की सही–सही पहचान एवं मात्रा ज्ञान हो जाने पर बारह खड़ी के बीच–बीच के वर्णों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़वाए। बारह–खड़ी–चार्ट से बच्चों को वर्ण में लगे ह्स्व एवं दीर्घ मात्राओं की पहचान होगी। इसके शुद्ध उच्चारण के साथ पठन से मात्रा सम्बन्धी त्रुटियाँ नहीं होती। जब बच्चा वर्ण मात्रा एवं बारह खड़ी में पूरी तरह दक्ष हो जायेगा तब शब्द एवं वाक्य का पठन आसानी से करने लगेगा और उसके उच्चारण में शुद्धता भी होगी।

Downloaded From www.dietmathura.org

पूर्णविराम, अर्द्धविराम, प्रश्नवाचक तथा विस्मय सूचक चिह्नों को पहचानते हुए एवं विषय वस्तु का अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ना

लेखक के भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग वाक्य अथवा वाक्यों में किया जाता है, उन्हें विरामचिह्न कहते है।

मुख्य शिक्षण बिन्दु
- पूर्ण विराम चिह्न
- अर्द्धविराम चिह्न
- प्रश्न वाचक चिह्न
- विस्मय सूचक चिह्न

'विराम का शाब्दिक अर्थ होता है 'ठहराव'। लेखन मनुष्य के जीवन की एक विशेष मानसिक अवस्था है। लिखते समय लेखक कहीं थोड़ी देर रूकता है, ठहरता है और कहीं पूरा विराम लेता है। इसी कारण लेखन कार्य में विरामचिह्नों का प्रयोग करना पड़ता है। यदि इन चिह्नों को उपयोग न किया जाए तो भाव अथवा विचार की स्पष्टता में बाधा पड़ेगी। पाठक के भाव बोध को सरल और सुबोध बनाने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग होता है।

चर्चा बिन्दु– *विराम चिह्न कितने प्रकार के होते है ?*

पूर्णविराम (।)

पूर्णविराम का अर्थ है– पूरी तरह रूकना या ठहरना जहाँ वाक्य की गति अन्तिम रूप ले ले, विचार का तार एकदम टूट जाए, वहाँ पूर्णविराम का प्रयोग होता है। जैसे–

यह हाथी है।

वह लड़का है।

मैं आदमी हूँ।

इन वाक्यों में सभी एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं, सबके विचार अपने में पूर्ण हैं। ऐसी स्थिति में प्रत्येक वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम लगना चाहिए।

कभी–कभी किसी व्यक्ति या वस्तु का सजीव वर्णन करते समय, वाक्यांशों के अन्त में, पूर्ण विराम का प्रयोग होता है। जैसे– गोरा रंग। सिर पर बाल न अधिक बड़े, न अधिक छोटे। यहाँ व्यक्ति की मुख मुद्रा का बड़ा ही सजीव चित्र कुछ चुने हुए शब्दों तथा वाक्यांशों में खींचा गया है। प्रत्येक वाक्यांश अपने में पूर्ण और स्वतन्त्र हैं। ऐसी स्थिति में पूर्ण विराम का प्रयोग उचित ही है।

चर्चा बिन्दु– *अर्द्धविराम का प्रयोग कहाँ किया जाता है ?*

Downloaded From www.dietmathura.org

अर्द्धविराम – (;)

1. यदि एक वाक्य या वाक्यांश के साथ दूसरे का दूर का सम्बन्ध बतलाना हो तो वहाँ अर्द्धविराम का प्रयोग होता है। इस प्रकार की वाक्य रचना में वाक्यांश एक दूसरे से स्वतन्त्र होते हुए भी एक वाक्य के अन्तर्गत होने के कारण, एक दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं। ऐसे वाक्यांशों में अर्द्धविराम लगाकर एक को दूसरे से अलग किया जाता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

क. वह एक धूर्त आदमी है; ऐसा उसके मित्र भी मानते है।

ख. यह घड़ी ज्यादा दिनों तक नहीं चहेगी; यह बहुत सस्ती है।

2. यदि प्रधान वाक्य में सम्बद्ध अन्य सहायक वाक्यांशों का प्रयोग किया जाए तो अर्द्धविराम लगाकर सहायक वाक्यांशों को अलग किया जा सकता है जैसे– छोटे–छोटे बच्चे पानी में घुस जाते है; पानी उछालते है; तरंगों से खेलते है।

3. सभी तरह की डिग्रियों या उपाधियों के लेखन में अर्द्धविराम का प्रयोग होना चाहिए। जैसे– एम0ए0;पी0एच0डी0।

अल्प विराम और अर्द्धविराम के प्रयोग में कभी–कभी उलझन और दुविधा की स्थिति उत्पन्न हो जाया करती है। समझ में नहीं आता कि वाक्य रचना में अल्पविराम का प्रयोग किया जाए या अर्द्धविराम का। ऐसी अवस्था में हमें वाक्य के मूल भावों और विचारों को ध्यान में रखना होगा। सामान्यतः अल्पविराम की अपेक्षा अर्द्धविराम में ठहराव अधिक होता है।

चर्चा बिन्दु– *प्रश्नवाचक चिह्न से आप क्या समझते है ?*

प्रश्नवाचक – (?)

प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में इस चिह्न का प्रयोग होता है। जहाँ प्रश्न करने या पूछे जाने का बोध हो। जैसे– क्या आप दिल्ली से आ रहे है ?

जहाँ स्थिति निश्चित न हो, वहाँ भी प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे– आप शायद पटना के रहने वाले हैं ?

चर्चा बिन्दु– *विस्मयसूचक चिह्न का प्रयोग कब किया जाता है ?*

विस्मयसूचक– (!)

इसका प्रयोग हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करूणा, भय इत्यादि भाव व्यक्त करने के लिए निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

1. आह्लाद सूचक शब्दों, पदों और वाक्यांशों के अन्त में इसका प्रयोग होता है। जैसे–

वाह! तुम्हारे क्या कहने।

Downloaded From www.dietmathura.org

2. ईश्वर को सम्बोधित करने में इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे–

हे राम! तुम मेरा दुःख दूर करो।

हे ईश्वर! सबका कल्याण हो।

3. जहाँ अपने से छोटों के प्रति शुभकामनाएँ और सद्भावनाएँ प्रकट की जाए। जैसे– चिरंजीवी हो!, यशस्वी हो!, स्नेहाशीर्वाद!

4. जहाँ मन की हँसी–खुशी व्यक्त की जाए। जैसे–

वाह! वाह!, आहा!, अरे वाह! ।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. देवनागरी लिपि का विकास किस लिपि से हुआ है ?

क. खरोष्ठी　　ख. ब्राह्मी

ग. फारसी　　घ. इसमें से कोई नहीं

2. लिपि का सही ज्ञान एवं अभ्यास का उद्देश्य किस स्तर का है ?

क. प्रारम्भिक स्तर　　ख. पूर्व माध्यमिक स्तर

ग. उच्चतर माध्यमिक स्तर　　घ. उच्च स्तर

3. निम्नलिखित में से कौन सा अशुद्ध उच्चारण का कारण नहीं है ?

क. सुलेख विहीनता　　ख. ध्वनि लोप

ग. ध्वनि विकृति　　घ. ध्वनि विपर्यय

4. (!) विराम चिह्न को क्या कहते है–

क. प्रश्न वाचक　　ख. पूर्ण विराम

ग. अल्प विराम　　घ. विस्मय सूचक

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. पूर्ण विराम का क्या अर्थ है ?
2. ध्वनि–विकृति से आप क्या समझते है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अशुद्ध उच्चारण के प्रमुख कारण क्या हो सकते है?
2. अशुद्ध उच्चारण के प्रमुख नियम क्या है ?
3. अशुद्ध उच्चारण का क्या महत्व है?
4. देवनागरी लिपि की क्या विशेषता है ?
5. प्रमुख विराम चिह्नों का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. उच्चारण की शुद्धता से आप क्या समझते है? उच्चारण की सामान्य अशुद्धियाँ क्या हो सकती है ?

Downloaded From www.dietmathura.org

विलोम, समानार्थी, तुकान्त, अतुकान्त तथा समान ध्वनियों वाले शब्दों को पहचानना एवं पढ़ना

भाषा का स्वरूप नदी के जल के समान सदैव प्रवाहमय होता है। जिस प्रकार से नदी धरातल के अनुसार अपने स्वरूप को ग्रहण करती है, ठीक उसी प्रकार से भाषा भी देश, काल एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार अपना स्वरूप ग्रहण करती है। यह वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली–भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार समझ सकता है। उच्चारण की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है। सार्थक ध्वनियों के समूह को शब्द कहते है। शब्द अर्थ के स्तर पर भाषा की लघुतम स्वतन्त्र इकाई शब्द मानी जाती है। ध्वनियों (वर्ण) से शब्द बनता है और शब्दों से वाक्य की रचना की जाती है। शब्दों की सार्थकता उनके प्रयोग पर निर्भर करती है।

मुख्य शिक्षण बिन्दु
- विलोम या विपरीतार्थक शब्द
- समानार्थक शब्द
- तुकान्त, अतुकान्त
- समान ध्वनियों वाले शब्द

ध्वनियों से बने शब्दों के हमें भिन्न–भिन्न रूप प्राप्त होते हैं जिनमें विलोम, समानार्थी, तुकान्त, अतुकान्त एवं समान ध्वनियाँ प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

विलोम या विपरीतार्थक शब्द

विलोम शब्द का अर्थ है उल्टा। किसी शब्द का उल्टा अर्थ बताने वाला शब्द उसका विलोम कहलाता है। विपरीतार्थक या विलोम शब्दों की रचना कई प्रकार से होती है– कभी पूर्णतया कोई भिन्न शब्द विपरीत अर्थ में प्रयुक्त होता है और कभी मूल शब्द में ही उपसर्ग लगाकर विपरीत अर्थ देने वाले शब्द बना लिए जाते हैं। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि संज्ञा शब्द का विपरीतार्थक संज्ञा हो और विशेषण का विपरीतार्थक विशेषण।

चर्चा करें– *प्रशिक्षुओं से विलोम शब्द की अवधारणा को उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कराया जाय।*

शब्द	विपरीतार्थक शब्द	शब्द	विपरीतार्थ शब्द
अनाथ	सनाथ	अनुकूल	प्रतिकूल
अवनति	उन्नति	आस्तिक	नास्तिक
अन्तरंग	बहिरंग	आलोक	अन्धकार
अल्पज्ञ	बहुज्ञ	आय	व्यय

Downloaded From www.dietmathura.org

अल्पायु	दीर्घायु	अन्त	आदि
अमृत	विष	अमावस्या	पूर्णिमा
अतिवृष्टि	अनावृष्टि	अस्त	उदय
अमर	मर्त्य	अनुलोम	प्रतिलोम
अपेक्षा	उपेक्षा	अपमान	सम्मान
अग्रज	अनुज	आधुनिक	प्राचीन
अधम	उत्तम	आविर्भाव	तिरोभाव
अज्ञ	विज्ञ, प्रज्ञ	आशा	निराशा
अगम	सुगम	आदान	प्रदान
अवनि	अम्बर	आयात	निर्यात
आर्द्र	शुष्क	आकाश	पाताल
इहलोक	परलोक	इच्छा	अनिच्छा
इष्ट	अनिष्ट	ईद	मुहर्रम
ईश्वर	जीव	इधर	उधर
इति	आदि, अथ	उपकार	अपकार
उत्कर्ष	अपकर्ष	उत्तम	अधम
उपरि	अधः	उल्लास	विषाद
उपसर्ग	प्रत्यय	एकत्र	विकीर्ण
उग्र	सौम्य	ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
कीर्ति	अपकीर्ति	कठोर, कर्कश	कोमल
करुण	निष्ठुर	कृतज्ञ	कृतध्न
कनिष्ठ	ज्येष्ठ	क्रय	विक्रय
ज्योति	तम	जंगम	स्थावर
ज्वार	भाटा	जल	स्थल
ताप	शीत	तिमिर	प्रकाश
तीव्र	मन्द	तुकान्त	अतुकान्त
तरल	ठोस	तिक्त	मधुर
नूतन	पुरातन	निर्दोष	सदोष

Downloaded From www.dietmathura.org

न्यून	अधिक	निर्माण	विनाश
निन्दा	स्तुति	निर्मल	मलिन
निरक्षर	साक्षर	नीरस	सरस
पण्डित	मूर्ख	परमार्थ	स्वार्थ
पक्ष	विपक्ष	परुष	कोमल
प्रलय	सृष्टि	प्रधान	गौण
प्रवृत्ति	निवृत्ति	प्राचीन	नवीन, अर्वाचीन
प्रत्यक्ष	परोक्ष	प्रशंसा	निन्दा
पाप	पुण्य	पुष्ट	क्षीण, अपुष्ट
परार्थ	स्वार्थ	परिश्रम	विश्राम
पुरस्कार	दण्ड, तिरस्कार	परतन्त्र	स्वतन्त्र
बन्धन	मुक्ति, मोक्ष	बहिरंग	अन्तरंग
बाह्य	अभ्यन्तर	बाढ़	सूखा
बर्बर	सभ्य	बाहर	अन्दर
भूगोल	खगोल	भूषण	कुभूषण
भाव	अभाव	भौतिकता	आध्यात्म
मंगल	अमंगल	मंद	शीघ्र
मित्र	शत्रु	मूक	वाचाल
महात्मा	दुरात्मा, तुच्छात्मा	महायोगी	महाभोगी
मधुर	कटु	मान	अपमान
मृत्यु	जीवन	मुदृल	कठोर
योगी	भोगी	यश	अपयश
युद्ध	शान्ति	योग्य	अयोग्य
राजा	रंक, प्रजा	राग	द्वेष, विराग
रोगी	निरोगी	राष्ट्रप्रेम	राष्ट्रद्रोह
लघु	दीर्घ, गुरु	लौकिक	अलौकिक, पारलौकिक
लेन	देन	लोक	परलोक
लिखित	मौखिक	लुप्त	व्यक्त

Downloaded From www.dietmathura.org

वसन्त	पतझर	वर	वधू
वरदान	श्राप, अभिशाप	वाचाल	मूक
वादी	प्रतिवादी	विशेष	सामान्य, साधारण
विधवा	सधवा	वरिष्ठ	कनिष्ठ
विदेशी	स्वदेशी	वैमनस्य	मैत्री, सौमनस्य
विस्तृत	संक्षिप्त	विष	अमृत
विधि	निषेध, विरुद्ध	वीर	कायर
व्यष्टि	समष्टि	विषाद	हर्ष
सम	विषम	सगुण	निर्गुण
सजीव	निर्जीव	सबल	दुर्बल
सरल	कुटिल, वक्र	सार्थक	निरर्थक
संयोग	वियोग	सम्मान	अपमान
सुगन्ध	दुर्गन्ध	सुलभ	दुर्लभ
शुष्क	आर्द्र,नम	शीत	उष्ण
शोषक	पोषक	शोक	हर्ष
श्रीगणेश	इतिश्री	श्रद्धा	घृणा
श्यामा	गौरी	राजा	रानी

समानार्थक शब्द

समान अर्थ रखने वाले शब्द समानार्थक अथवा पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। हिन्दी के पर्यायवाची शब्द संस्कृत के तत्सम शब्द हैं, जिन्हें हिन्दी भाषा ने ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया है। इन शब्दों में अर्थ की समानता होते हुए भी इनके प्रयोग एक तरह के नहीं हैं। ये शब्द अपने में इतने पूर्ण हैं कि एक ही शब्द का प्रयोग सभी स्थितियों में और सभी स्थलों पर अच्छा नहीं लगता कहीं कोई शब्द ठीक बैठता है और कहीं कोई। प्रत्येक शब्द की महत्ता विषय और स्थान के अनुसार होती है।

उदाहरण स्वरूप कुछ पर्यायवाची निम्नलिखित हैं–

अरण्य– वन, विपिन, कानन, जंगल, अटवी।

अंग– तन, कलेवर, देह, काया, शरीर।

अग्नि– आग, अनल, पावक, दहन, हुताशन।

Downloaded From www.dietmathura.org

अश्व– हय, बाजि, घोटक, तुरंग, घोड़ा, सैंधव।

आँख– लोचन, नेत्र, नयन, चक्षु, दृग, अक्षि, अम्बक, दृष्टि, विलोचन।

आम– आम्र, चूत, रसाल, अमृतफल, सहकार।

आकाश– नभ, अम्बर, व्योम, गगन, अनन्त, आसमान, अभ्र।

आनन्द– मोद, सुख, चैन, प्रसन्नता, प्रमोद, हर्ष, उल्लास।

इच्छा– कामना, अभिलाषा, आकांक्षा, लालसा, मनोरथ, चाह, स्पृहा।

इन्द्र– सुरपति, शचीपति, मधवा, शक, पुरन्दर, देवराज, वज्रधर, अमरपति, वासव।

इनाम– उपहार, पुरस्कार, पारितोषिक।

इन्द्रधनुष– शक्रचाप, सप्तकर्ण धनु, इन्द्रधुन, सुरचाप, धनुक।

ईश्वर– भगवान, परमेश्वर, परमात्मा, प्रभु, दीनानाथ, ईश, जगतप्रभु, अज, जगदीश, जगन्नाथ।

ईमानदारी– निष्कपटता, निश्छलता, दयनतरी, सदाशयता।

ईर्ष्या– मत्सर, जलन, डाह, कुढ़न, द्वेष, स्पर्धा।

ईख– गन्ना, ऊख, रसाल, रसद, रसडंड।

उत्कर्ष– उन्नति, उन्मेष, उत्थान, अभ्युदय, आरोह, चढ़ाव, उठाव।

उत्तम– बढ़िया, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, प्रवर, प्रकृष्ट।

उपमा– सादृश्य, मिलान, समानता, तुलना।

उपवास– निराहार, व्रत, अनशन, फाका, लंघन।

उत्साह– जोश, हौसला, उमंग, साहस।

उल्लू– कौशिक, उलूक, लक्ष्मीवाहन।

ऊर्जा– शक्ति, ओज, स्फूर्ति।

ऊष्मा– तपन, उष्णता, ताप, गर्मी, ताव।

ऊँट– लम्बोष्ठ, महाग्रीव, उष्ट्र।

ऊँचा– उच्च, ऊर्ध्व, ऊपर, तुंग, उन्नत, गगनचुम्बी, लम्बा, शीर्षस्थ।

ऋद्धि– सम्पन्नता, बढ़ती, बढ़ोत्तरी, वृद्धि, समृद्धि।

ऋषि– मुनि, मनीषी, सन्त, महात्मा, साधु।

एकता– एकरूपता, एकसूत्रता, ऐक्य, अभेद।

एहसान– अनुग्रह, कृतज्ञता, आभार।

ऐश– विलास, ऐय्याशी, सुख–चैन।

Downloaded From www.dietmathura.org

ऐश्वर्य– वैभव, सम्पदा, सम्पन्नता, समृद्धि, श्री, सम्पत्ति।

ओज– बल, ताकत, जोर, दम, पराक्रम, शक्ति ऊर्जा।

ओस– तुषार, हिमकण, हिमबिन्दु, तुहिनकण।

औषधि– भेषज, दवा, दवाई, औषध, रसायन।

और– अधिक, ज्यादा, बढ़कर।

कमल– सरोज, जलज, पंकज, अरविन्द, पद्म, कंज, शतदल, अम्बुज, सरसिज, नलिन, नीरज, उत्पल, कुवलय, इन्दीवर, शतपत्र, राजीव, पायोध, पुण्डरीक, वारिज, सरोरूह, कोकनद।

कपड़ा– वस्त्र, पट, वसन, अम्बर, चीर।

कल्पवृक्ष– सुरतरु, हरिचन्दन, मन्दार, पारिजात, देववृक्ष, कल्पतरु, कल्पशाल, कल्पद्रुम।

कामदेव– मदन, मनोभव, मार, मनसिज, मन्मथ, कन्दर्प, अनंग, रतिपति, मनोज, मकरध्वज, पुष्पधन्वा।

कार्तिकेय– कुमार, षडानन, शरभव, स्कंद।

कुबेर– यक्षराज, धनद, धनाधिप, राजराज, धनेश, किन्नरेश, धनपति, अलंकेश, धनपाल, नृपराज, धनेश्वर, अधिपति।

खग– विहग, विहंग, पक्षी, पंक्षी, द्विज, चिड़िया, शकुनि, पखेरू।

खल– दुष्ट, अधम, पामर, नीच, शठ, दुर्जन, कुटिल, धूर्त, नृशंस।

गणेश– लम्बोदर, एकदन्त, मूषकवाहन, गजानन, विनायक, गणपति, विघ्न–विनायक, गौरीसुत, महाकाय।

गंगा– भागीरथी, सुरसरि, देवसरि, त्रिपथगा, नदीश्वरी, देवनदी, मन्दाकिनी, अलकनन्दा, विष्णुपदी।

गृह– घर, सदन, भवन, मन्दिर, धाम, निकेतन, निकेत, आलय, निलय, गेह, शाला, आगार, आशियाना, मकान, आवास।

गाय– गौरी, गऊ, गइया, धेनु, भद्रा, दोग्धी, गौ, सुरभि।

घड़ा– घट, कलश, कुंभ, गगरा, गगरी।

घुमक्कड़– रमता, सैलानी, पर्यटक, घुमन्तू, विचरणशील, यायावर।

चन्द्रमा– निशानाथ, इन्दु, शशि, शशांक, सुधाकर, चाँद, हिमांशु, सुधांशु, सुधाधर, राकेश, सारंग, निशाकर, मयंक, कलानिधि, विधु।

चक्षु– आँख, नयन, नेत्र, दृग, लोचन, अक्षि।

चाँदी– रजत, रूपा, रौप्य, गातरूप, चन्द्रहास, रूपक, रुक्म, नौध।

Downloaded From www.dietmathura.org

चाँदनी– चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्सना, चन्द्रकला।

जल– पानी, वारि, नीर, सलिल, अम्बु, तोय, पय, धनरस, शम्बर, सर्वमुख, उदक, जीवन, अमृत, मेघपुष्प।

जीभ– जिह्वा, रसना, रसज्ञा, चंचला।

जगत– विश्व, संसार, भव, जग, लोक, दुनिया, भुवन, मृत्यलोक।

तलवार– असि, कृपाण, खड्ग, चन्द्रहास, करवाल, शम्शीर।

तरुणी– युवती, सुन्दरी, यौवनवती, नवयुवती, प्रमदा, रमणी।

तालाब– तड़ाग, सर, जलाशय, कासार, ताल, सरसी, पुष्कर, सरोवर, पोखर।

तम – तिमिर, अन्धकार, ध्वान्त, अँधेरा।

दिन– वासर, दिवस, दिवा, वार।

दूध– क्षीर, पय, गोरस, पीयूस, दुग्ध।

दिनांक– तारीख, तिथि, मिति।

नदी– सरिता, निर्झरिणी, तरंगिणी, तरनी, स्रोतस्विनी, लहरी, आपगा, निम्नगा।

नियति– भाग्य, प्रारब्ध, विधि, भावी, दैव्य, होनी, किस्मत।

निर्णय– निश्चय, निष्कर्ष, फैसला, परिणाम।

नैसर्गिक– प्राकृतिक, स्वाभाविक, वास्तविक।

पति– भर्ता, वल्लभ, भतरि, आर्यपुत्र, स्वामी, नाथ, प्राणप्रिय, ईश।

पर्वत– भूधर, शैल, अचल, महीधर, गिरि, नग, भूमिधर, तुंग, अद्रि, पहाड़।

पण्डित– सुधी, विद्वान्, कोविद, बुध, धीर, मनीषी, प्राज्ञ।

पुत्र– तनय, सुत, बेटा, लड़का, आत्मज, तनुज।

पुत्री– तनया, सुता, बेटी, आत्मजा, दुहिता, नन्दिनी, तनुजा।

पृथ्वी– भू, इला, भूमि, धरा, उर्वी, धरती, धरित्री, धरणी, वसुधा, वसुन्धरा।

बिजली– चंचला, चपला, विद्युत, सौदामनी, दामिनी, तड़ित्, क्षणप्रभा।

वृक्ष– तरु, द्रुम, पादप, विटप, अगम, पेड़, गाछ।

मछली– मत्स्य, झख, मीन, जलजीवन, सफरी।

महादेव– शम्भु, ईश, पशुपति, शिव, महेश्वर, शंकर, चन्द्रशेखर, भव, भूतेश, गिरीश, हर, त्रिलोचन।

मेघ– घन, जलधर, वारिद, बादल, नीरद, वारिधर, पयोद, अम्बुद, पयोधर।

रात्रि– शर्वरी, निशा, रात, रैन, रजनी, यामिनी, त्रियामा, विभावरी, क्षणदा।

Downloaded From www.dietmathura.org

राजा– नृप, भूप, महीप, महीपति, नरपति, नरेश, भूपति, राव, सम्राट्।

विष्णु– गरूड़ध्वज, जनार्दन, चक्रपाणि, मुकुन्द, नारायण, दामोदर, केशव, माधव, गोविन्द, लक्ष्मीपति, विभु।

सरस्वती– भारती, भाषा, वाक्, गिरा, शारदा, वीणापाणि, वागीशा।

सर्प– अहि, भुजंग, विषधर, व्याल, फनी, उरग, नाग, साँप।

समुद्र– सागर, जलधि, पारावर, सिन्धु, नदीश, पयोधि, अर्णव, पयोनिधि, रत्नाकर, वारीश, नीरधि, जलधाम।

सोना– सुवर्ण, स्वर्ण, कंचन, हाटक, कनक, हिरण्य, हेम, जातरूप।

सूर्य– मार्तण्ड, दिनकर, रवि, भास्कर, मरीची, प्रभाकर, सविता, पतंग, दिवाकर, हंस, आदित्य, भानु, अंशुमाली।

सिंह– शार्दूल, व्याघ्र, पंचमुख, मृगराज, मृगेन्द्र, केशरी, केहरी, केशी, महावीर।

स्त्री– नारी, वनिता, महिला, कान्ता, रमणी।

- *प्रशिक्षुओं से समानार्थी शब्दों की महत्ता पर सामूहिक चर्चा की जाय।*

तुकान्त, अतुकान्त

पद के अन्त में अक्षरों में जो समतुल्यता पायी जाती है, उन्हें 'तुक' कहते है। तुक का अर्थ है– अन्त्य वर्णों की आवृत्ति। ये दो प्रकार के होते हैं– 1. तुकान्त 2. अतुकान्त

तुकान्त– तुक वाले शब्द 'तुकान्त' कहलाते हैं।

अतुकान्त– तुक हीन शब्द 'अतुकान्त' कहलाते हैं।

- *प्रशिक्षुओं से तुकान्त एवं अतुकान्त में अन्तर स्पष्ट करने के लिए सामूहिक चर्चा–परिचर्चा कराएं।*

तुकान्त

इनके उच्चारण में तुक की प्रधानता रहती है, जिससे इनका उच्चारण छन्दबद्ध हो जाता है। इसका प्रयोग प्रायः काव्य रचनाओं में होता है। इनके उदाहरण स्वरूप कुछ शब्द निम्नलिखित हैं–

नट	काम	माया	नहाया	कहाँ
खट	दाम	खाया	बहाया	वहाँ
झट	नाम	साया	चलाया	जहाँ
पट	शाम	लाया	मनाया	यहाँ
नष्ट	माई	आयी	जन्तर	रोया

Downloaded From www.dietmathura.org

कष्ट	भाई	दायी	मन्तर	खोया
नोंक	असली	पानी	कण्डा	सुख
झोंक	नकली	नानी	डण्डा	दुख

जैसे–

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

जा तन की झाईं परे, स्यामु हरित दुति होइ।। (बिहारी)

कीरति भनिति भूति भलि सोई।

सुरसरि सम सब कहँ हित होई।। (तुलसीदास)

जदपि सुजाति सुलक्षनी, सुबस सरस सुवृत्त।

भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्र।। (केशवदास)

बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से।

मणि वाले फणियों का मुख क्यों भरा हुआ है हीरों से।। (जयशंकर प्रसाद)

तुम भूल गए पुरुषत्व–मोह में कुछ सत्ता है नारी की।

समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की।। (जयशंकर प्रसाद)

जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर

तुझे बुलाता कृषक अधीर

ए विप्लव के वीर! (निराला)

वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।

निकलकर आँखों से चुपपाप बही होगी कविता अनजान।। (सुमित्रानन्दन पंत)

उपरोक्त पदों के अन्तिम शब्द तुकान्त शब्द है। ये भाषा में तुकबन्दी के काम आते हैं।

अतुकान्त

इसके पदों में अनियमित, असमान, स्वच्छन्द गति और भावानुकूल यति विधान होता है। इसका कोई नियम नहीं है। यह एक प्रकार का लयात्मक काव्य है, जिसमें पद्य का प्रवाह अपेक्षित है। निराला से लेकर 'नयी कविता' तक हिन्दी कविता में इसका अत्यधिक प्रयोग हुआ है। आधुनिक कविता ज्यादातर इसी में लिखी जा रही है। जैसे–

वह तोड़ती पत्थर,

देखा मैने उसे,

Downloaded From www.dietmathura.org

इलाहाबाद में पथ पर (निराला)

हम निहारते रूप,

काँच के पीछे

हाँफ रही मछली। (अज्ञेय)

यह दीप अकेला स्नेह भरा,

है गर्व भरा मदमाता।

पर इसको भी पंक्ति दे दो। (अज्ञेय)

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे

उठाने ही होंगे।

तोड़ने होंगे मठ और गढ़ सभी। (मुक्तिबोध)

बात बोलेगी

हम नहीं,

भेद खोलेगी

बात ही। (शमशेर बहादुर सिंह)

मेरी निगाह में

न कोई छोटा है

न बडा है

मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है।

जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खड़ा है। (सुदामा पाण्डे 'धूमिल')

मैं नया कवि हूँ,

इसी से जानता हूँ

सत्य की चोट बहुत गहरी होती है। (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)

आधुनिक हिन्दी कविता के आधार पर एक तीसरे प्रकार के छन्द को मान्यता मिली जिसे **'मुक्त छन्द'** कहा गया। उपरोक्त पदों की यह विशेषता है कि उनके चरणों में वर्णों एवं मात्राओं का ध्यान न रख करके बल्कि लय का विधान किया गया है।

Downloaded From www.dietmathura.org

समान ध्वनियों वाले शब्द

हिन्दी में बहुत से शब्द ऐसे प्रयुक्त होते हैं जिनका उच्चारण समान होता है परन्तु उनके अर्थ भिन्न–भिन्न होते है। इस प्रकार के शब्दों को **'युग्म शब्द'** या 'समोच्चरितप्राय भिन्नार्थक शब्द' कहते हैं।

जैसे– अलि और अली शब्दों का उच्चारण एक समान है, परन्तु अलि का अर्थ है भौंरा और अली का अर्थ है सखी।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि ऐसे शब्द, जिनकी वर्तनी में थोड़ा अन्तर होने के कारण समानता का आभास होता है परन्तु अर्थ की दृष्टि से उनमें कोई समानता नहीं होती है, समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अगम	दुर्लभ	आगम	उत्पत्ति, शास्त्र
अन्त	समाप्त	अन्त्य	अन्तिम
अंस	कन्धा	अंश	भाग, हिस्सा
अनल	अग्नि	अनिल	वायु
अन्न	अनाज	अन्य	दूसरा
अवलम्ब	सहारा	अविलम्ब	शीघ्र
अणु	कण	अनु	एक उपसर्ग, पीछे
अभिराम	सुन्दर	अविराम	लगातार, निरन्तर
आदि	आरम्भ, इत्यादि	आदी	अभ्यस्त, अदरक
अवधि	काल, समय	अवधी	अवध की भाषा
अभय	निर्भय	उभय	दोनों
अर्जन	संग्रह	अर्चन	पूजा
अंगद	बाजूबन्द	अगद	रोगरहित
अक्ष	धुरी	यक्ष	एक देवयोनि
अब्ज	कमल	अब्द	बादल, वर्ष
अरि	शत्रु	अरी	सम्बोधन (स्त्री के लिए)
अथक	बिना थके हुए	अकथ	जो कहा नहीं जाए
अति	दुःखी	आर्द्र	गीला
आयत	समकोण चतुर्भुज	आयात	बाहर से आना
इत्र	सुगन्ध	इतर	दूसरा
उपकार	भलाई	अपकार	बुराई

Downloaded From www.dietmathura.org

ऋत	सत्य	ऋतु	मौसम
कुल	वंश	कूल	किनारा
कर्म	कार्य	क्रम	सिलसिला
कृति	रचना	कृती	निपुण, पुण्यात्मा
कृत्ति	मृगचर्म	कीर्ति	यश
कृत	किया हुआ	क्रीत	खरीदा हुआ
कली	अधखिला फूल	कलि	कलियुग
कृपाण	कटार	कृपण	कंजूस
कपी	घिरनी	कपि	बन्दर
करकट	कूड़ा	कर्कट	केंकड़ा
कटिबद्ध	तैयार, कमर बाँधे	कटिबन्ध	कमरबन्द, करधनी
कृशानु	आग	कृषाण	किसान
कोश	शब्द संग्रह	कोष	खजाना
केश	बाल	केस	मुकदमा
कपिश	मटमैला	कपीश	हनुमान, सुग्रीव
खाद	फसल हेतु उर्वरक	खाद्य	खाने योग्य
खोलना	बंधन से मुक्त करना	खौलना	उबलना
गण	समूह	गण्य	गिनने योग्य
ग्रह	सूर्य, चन्द्र आदि	गृह	घर
गुड़	शक्कर	गूढ़	गम्भीर
गट्टा	कलाई	गट्ठा	गठ्ठर
चिर	पुराना	चीर	कपड़ा
चूर	कण, चूर्ण	चूड़	चोटी, सिर
चूत	आम का पेड़	च्युत	गिरा हुआ, पतित
चक्रवात	बवण्डर	चक्रवाक	चकवा पक्षी
जगत	कुएँ का चौतरा	जगत्	संसार
जलज	कमल	जलद	बादल
टुक	थोड़ा	टूक	टुकड़ा
टोटा	घाटा	टोंटा	बन्दूक का कारतूस
डीठ	दृष्टि	ढीठ	निडर
तड़ाक	जल्दी	तड़ाग	तालाब
तरणि	सूर्य	तरणी	नाव
तक्र	मट्ठा	तर्क	बहस

Downloaded From www.dietmathura.org

तरी	गीलापन	तरि	नाव
तुरंग	घोड़ा	तरंग	लहर
दार	स्त्री	द्वार	दरवाजा
दिन	दिवस	दीन	गरीब
दारु	लकड़ी	दारू	शराब
दमन	दबाना	दामन	आँचल, छोर
दंश	डंक, काट	दश	दश अंक
नीर	जल	नीड़	घोंसला
नियत	निश्चित	नियति	भाग्य
नीरज	कमल	नीरद	बादल
निर्झर	झरना	निर्जर	देवता
निशाकर	चन्द्रमा	निशाचर	राक्षस
नारी	स्त्री	नाड़ी	नब्ज
निसान	झण्डा	निशान	चिन्ह
परुष	कठोर	पुरुष	मर्द, नर
प्रसाद	कृपा, भोग	प्रासाद	महल
प्रबल	शक्तिशाली	प्रवर	श्रेष्ठ, गोत्र
पास	नजदीक	पाश	बन्धन
पानी	जल	पाणि	हाथ
पावन	पवित्र	पवन	वायु
बलि	बलिदान	बली	वीर
बहन	भगिनी	वहन	ढोना
बल	ताकत	वल	मेघ
बुरा	खराब	बूरा	शक्कर
भवन	महल, घर	भुवन	संसार
मूल	जड़	मूल्य	कीमत
मद	अहंकार, नशा	मद्य	शराब
मेघ	बादल	मेध	यज्ञ
मणि	रत्न	मणी	सर्प
मांस	गोश्त	मास	महीना
रंक	दरिद्र	रंग	वर्ण
रग	नस	राग	लय
रत	लीन	रति	कामदेव की पत्नी, प्रेम

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

लक्ष्य	उद्देश्य, निशाना	लक्ष	लाख
लोक	संसार	लोग	मनुष्य
लोटा	जलपात्र	लौटा	वापस
लवण	नमक	लवन	खेती की कटाई
वित्त	धन	वृत्त	गोलाकार, छन्द
वाद	तर्क, विचार	वाद्य	बाजा
वृन्त	डण्ठल	वृन्द	समूह
संकर	मिश्रित	शंकर	महादेव
सर	तालाब, सिर	शर	बाण, तीर
शूर	वीर	सुर	देवता, लय
सुत	बेटा	सूत	सारथी, धागा
शर्व	शिव	सर्व	सब
संग	साथ	संघ	समिति
शब	रात	शव	लाश
शूक	जौ	शुक	सुग्गा
शिखर	चोटी	शेखर	सिर
शास्त्र	सैद्धान्तिक विषय	शस्त्र	हथियार
हरि	विष्णु	हरी	हरे रंग की
हल्	शुद्ध व्यंजन	हल	खेत जोतने का औजार

- *प्रशिक्षुओं को समान ध्वनियों वाले शब्दों को अलग–अलग उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कराया जाय।*

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कोमल का विलोम शब्द होगा–

क. कठोर　　ख. मुलायम

ग. स्पर्श में बुरा　　घ. स्पर्श में अच्छा

2. गणेश का समानार्थी शब्द है–

क. लम्बोदर　　ख. शम्बर

ग. कुंभ　　घ. कलानिधि

3. अगम का अर्थ है–

क. शास्त्र　　ख. दुर्लभ

ग. उत्पत्ति　　घ. उपर्युक्त में से कोई नहीं।

4. 'मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।' प्रस्तुत पंक्ति के रचनाकार कौन हैं ?

क. कबीर　　ख. तुलसी

ग. निराला　　घ. बिहारी

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. अरण्य के तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

2. भूगोल एवं वाचाल के विलोम शब्द बताइए।

3. अंस और अंश के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. अग्नि, गणेश, कमल, यमुना, वायु तथा विद्युत के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

2. अवनति, आर्द्र, नूतन, प्रत्यक्ष, शीत के विलोम शब्द लिखिए।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. विलोम शब्द एवं समानार्थी शब्दों की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए एवं इनके पाँच–पाँच उदाहरण दीजिए।

2. तुकान्त एवं समान प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक शब्दों से आपका क्या अभिप्राय है? इनके पाँच–पाँच उदाहरण दीजिए।

Downloaded From www.dietmathura.org

लिपि संकेतों, स्वर, व्यंजन, मात्राएं, संयुक्त वर्णों को सुडौल तथा आकर्षक रूप में लिखना

मुख्य शिक्षण बिन्दु

- लिपि संकेत
- लिपि की विशेषताएँ
- स्वर
- मात्राएँ
- व्यंजन
- व्यंजन के लेख–भेद
- संयुक्ताक्षर

भाषा भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है तथा जिन चिन्हों के द्वारा भाषा दीर्घकाल तक सुरक्षित रहती है वे चिन्ह **'लिपि'** कहलाते हैं अर्थात् 'लिपि' का अर्थ लिखित चिन्हों की उस व्यवस्था से है, जिसके द्वारा भाषा को अभिव्यक्त किया जाता है।

- *प्रशिक्षुओं से भाषा एवं लिपि में सम्बन्धों पर चर्चा कीजिए।*

अपने मूल रूप में भाषा ध्वनि पर आधारित है। भाषा सीमित और व्यक्त ध्वनियों का नाम है, जिन्हें हम अभिव्यक्ति के लिए संगठित करते हैं। ध्वनियाँ ही उच्चरित होती हैं और सुनी जाती है। वह केवल तभी सुनी जा सकती है जब बोली जाती है तथा वहीं तक सुनी जा सकती है जहाँ तक आवाज जा सकती है। भाषा को काल और स्थान के बंधन से निकालने के लिए लिपि का जन्म हुआ। निश्चय ही लिपि का विकास भाषा के विकसित हो जाने के बाद ही हुआ होगा।

भाषा और लिपि का सम्बन्ध यह है कि भाषा अपने मूल रूप में ध्वनियों पर आधारित है, लिपि में उन ध्वनियों को रेखाओं द्वारा व्यक्त करते हैं।

भिन्न–भिन्न देशों की भाषा तथा लिपि भिन्न–भिन्न हुआ करती है। कभी–कभी एक ही देश में अनेक भाषा और अनेक लिपियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं। भारत एक विशाल देश है जिसमें बंगला, मराठी, तमिल, तेलगू, हिन्दी, मलयालम इत्यादि अनेक भाषाएं, लिखी एवं बोली जाती हैं। इनमें हिन्दी हमारी 'राष्ट्रभाषा' है और इसकी लिपि देवनागरी लिपि कहलाती है, अर्थात् हिन्दी भाषा की वर्ण–माला जिस लिपि में लिखी जाती है, उसका नाम, देवनागरी लिपि'' है। इसके अपने लिपि संकेत हैं।

लिपि संकेत

इसमें ग्यारह स्वर और इकतालीस व्यंजन हैं। व्यंजन के साथ स्वर का संयोग होने पर स्वर का जो रूप होता है, उसे मात्रा कहते हैं, जैसे–

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
क	का	कि	की	कु	कू	कृ	के	कै	को	कौ

Downloaded From www.dietmathura.org

इसमें 'अ' के लिए कोई मात्रा निश्चित नहीं है। जब यह व्यंजन के साथ मिल जाता है तब व्यंजन के नीचे का चिन्ह् (्) नहीं लिखा जाता; जैसे–

क् + अ = क ख् + अ=ख ग्+अ= ग।

आ (ा), ई (ी), ओ (ो) और (ौ) की मात्राएँ व्यंजन के बाद जोड़ी जाती हैं (जैसे– का, की, को, कौ), इ (ि) की मात्रा व्यंजन के पहले, ए (े) और ऐ (ै) की मात्राएँ व्यंजन के ऊपर तथा (ु), ऊ (ू) ऋ (ृ) मात्राएँ नीचे लगाई जाती हैं।

'र' व्यंजन में 'उ' और 'ऊ' मात्राएँ अन्य व्यंजनों की तरह न लगाई जाकर इस तरह लगाई जाती हैं–

र्+उ= रु र्+ऊ= रू

अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) क्रमशः स्वर के ऊपर या बाद में जोड़े जाते हैं; जैसे अ+ं= अं।

क्+अं= कं। अ+ :=अः। क्+अः=कः।

स्वरों की मात्राओं तथा अनुस्वार एवं विसर्गसहित एक व्यंजन वर्ण में बारह रूप होते हैं। इन्हें' बारहखड़ी' कहते हैं; जैसे–

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः। व्यंजन दो तरह से लिखे जाते हैं– खड़ी पाई के साथ और बिना खड़ी पाई के।

ङ छ ट ठ ड ढ द र बिना खड़ी पाई वाले व्यंजन हैं और शेष व्यंजन (जैसे– क, ख, ग , घ, च इत्यादि) खड़ी पाईवाले व्यंजन हैं। सामान्यतः सभी वर्णों के सिरे पर एक–एक आड़ी रेखा रहती है, जो ध, झ और भ में कुछ तोड़ दी गई है।

जब दो या दो से अधिक व्यंजनों के बीच कोई स्वर नहीं रहता, तब दोनों के मेल से संयुक्त व्यंजन बन जाते हैं; जैसे–

क्+त्= क्त। त्+ य् = त्य क्+अ =क्ल।

जब एक व्यंजन अपने समान अन्य व्यंजन से मिलता है, तब उसे 'द्वित्व व्यंजन' कहते हैं, जैसे– क्क (चक्का), त्त (पत्ता), न्न (गन्ना), म्म (सम्मान) आदि।

- *प्रशिक्षुओं को उनके पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए स्वर पर चर्चा–परिचर्चा कराएं।*

लिपि का विशेषताएँ–

संसार की जितनी भी ज्ञात लिपियाँ हैं, उनमें देवनागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। इस लिपि की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. इस लिपि में प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग–अलग चिन्ह है। इसमें 14 स्वर तथा 35 मूल व्यंजन और 3 संयुक्त व्यंजन (क्ष, त्र, ज्ञ) हैं। इतने स्वर तथा व्यंजन होने के कारण इस लिपि में

Downloaded From www.dietmathura.org

विभिन्न भाषाओं की ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता है। अतः यह लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है।

2. देवनागरी लिपि में ध्वनियों का क्रम वैज्ञानिक है। स्पर्श ध्वनियों के वर्णन में प्रथम वर्ग कंठ्य ध्वनियों का है तथा अंतिम वर्ग ओष्ठ्य ध्वनियों का है। प्रत्येक वर्ग में अल्पप्राण ध्वनियों के पश्चात् महाप्राण ध्वनिसूचक चिन्ह हैं जैसे– क, ख तथा प्रत्येक वर्ग की ध्वनियों में पहले अघोष ध्वनियों एवं उसके पश्चात् सघोष ध्वनियों का उल्लेख है जैसे– क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ में प्रथम दो ध्वनियाँ अघोष तथा तीसरी, चौथी ध्वनियाँ सघोष तथा अंतिम ध्वनि नासिक्य है।

3. इस लिपि में लिपि चिन्हों की लिखावट उच्चारणानुकूल होती है अर्थात् इसमें जैसा लिखा जाता है, वैसा ही उच्चारण होता है। जैसे– अंग्रेजी (रोमन लिपि) में 'क' के लिए 'C' 'K' 'Q' तीनों ध्वनियाँ प्रयुक्त होती हैं Cat, Kite, Quite तथा उर्दू में ज लिए जीभ, जुवाद, जोय, जे आदि अनेक वर्ण हैं परन्तु 'देवनागरी' में ऐसा नहीं है।

4. रोमन में 'C' ध्वनि के लिए 'क' और 'स' दो ध्वनियों का प्रयोग होता है, जैसे– 'Cap' और 'Cinema' परन्तु देवनागरी में ऐसा नहीं हैं।

5. रोमन लिपि में अर्धवर्णों की व्यवस्था नहीं है, जबकि देवनागरी लिपि में अर्द्धवर्णों की व्यवस्था है। जैसे– 'Sky' स्काई, 'School' स्कूल, 'Skirt स्कर्ट, 'Stop' स्टॉप।

6. देवनागरी लिपि में जो वर्ण लिखे जाते हैं, वही उच्चारित होते हैं परन्तु रोमन में ऐसा नहीं है। जैसे–'knowledge' में 'K' तथा 'D' एवं Walk में 'L' मौन वर्ण हैं, ये लिखे तो जाते हैं पर बोले नहीं जाते।

7. अंग्रेजी (रोमन लिपि) में 'Bottom' 'Guess', 'All' आदि में संयुक्त वर्णों का स्पष्ट उच्चारण नहीं किया जाता है जबकि देवनागरी लिपि में व्यंजन द्वित्व का स्पष्ट रूप से उच्चारण किया जाता है, जैसे– 'खच्चर' 'विठ्ठल', 'पक्का', आदि।

8. देवनागरी लिपि में स्वरों के ह्स्व व दीर्घ उच्चारणों के चिन्ह् थोड़ा अन्तर करके दिखाए जाते हैं, जैसे– ह्स्व 'अ' दीर्घ 'आ', ह्स्व 'इ' दीर्घ 'ई' तथा ह्स्व 'उ' दीर्घ 'ऊ' आदि। जबकि ऐसी विशेषता अन्य लिपियों में नहीं प्राप्त होती है।

9. देवनागरी लिपि की एक अन्य प्रमुख विशेषता यह है, कि इसमें वर्णों का उच्चारण निश्चित होता है। जबकि अन्य लिपियों में ऐसा नहीं होता है, जैसे– 'मलमल', 'झटपट' आदि शब्दों में जो वर्ण आए हैं उनका उच्चारण कहीं परिवर्तित नहीं हुआ है, परन्तु रोमन लिपि में 'Cut' का उच्चारण 'कट' होता है। जबकि 'put' का उच्चारण 'पट' होना चाहिए लेकिन 'पुट' हो जाता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

स्वर

वे वर्ण, जिनके उच्चारण के लिए किसी दूसरे वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या पूर्व में 14 थी जो कि घटकर वर्तमान में 11 रह गयी है– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। इनमें अ, इ, उ, ऋ, ह्स्व स्वर हैं वहीं आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर हैं और इनके उच्चारण में एक मात्रा के उच्चारण का दूना समय लगता है। एक मात्रा का समय उतना कहलाता है, जितना 'अ' के बोलने में लगता है। दीर्घ स्वरों के उच्चारण में दूना समय लगने के कारण वे **द्विमात्रिक स्वर** कहलाते हैं।

एक मात्रिक, द्विमात्रिक के अतिरिक्त स्वर का एक और भेद होता है, जिसे प्लुत (त्रिमात्रिक) कहते हैं। इसके उच्चारण में एक मात्रा का त्रिगुना समय लगता है। यह चिल्लाने, गाने, रोने और दूर से पुकारने में व्यवहृत होता है। जैसे– बाप रे।

- *प्रशिक्षुओं को स्वरों के उच्चारण का व्यावहारिक रूप से भी बोध कराया जाय।*

मात्राएँ

व्यंजनों में भिन्न–भिन्न उच्चारणों के निमित्त उनके साथ स्वर जोड़े जाते हैं और उस समय स्वर के बदले हुए रूप को मात्रा कहते हैं। बारहखड़ी के साधारण नियमों के अलावा मात्रा–संयोग में कुछ विशेषताएँ भी होती हैं, जैसे–

उ और ऊ की मात्राएँ र में मिलने पर उनका आकार कुछ निराला हो जाता है–

र् + उ = रु र + ऊ = रू

द और ह में ऋ की मात्रा लगने से उनके रूप क्रमशः दृ, हृ हो जाते हैं। हिन्दी वर्णमाला में स्वरों की संख्या ग्यारह (11) हैं। प्रत्येक स्वर की मात्रा इस प्रकार है–

अ,	आ,	इ,	ई,	उ,	ऊ,	ऋ,	ए,	ऐ,	ओ,	औ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

व्यंजन

स्वरों की सहायता के बिना जिन वर्णों का उच्चारण नहीं हो पाता, वे व्यंजन वर्ण के अन्तर्गत आते हैं। वर्ण–माला से स्वरों को निकाल देने पर शेष वर्ण क, ख आदि व्यंजन हैं। प्रत्येक व्यंजन अ से मिलकर पूर्णतः उच्चरित होता है; उसमें से अ को निकाल देने से उसका रूप हलन्त के साथ हो जाता है। जैसे– क्, ख्, ग्, घ्, आदि। क से लेकर म तक व्यंजन वर्ण कुल पाँच वर्णों में विभाजित हैं–

व्यंजन	वर्ग	व्यंजन	वर्ग
क ख ग घ ङ	क	च छ ज झ ञ	च
ट ठ ड ढ ण	ट	त थ द ध न	त

Downloaded From www.dietmathura.org

प फ ब भ म	प		

य, र, ल, व अन्तस्थ हैं; श, ष, स् ह ऊष्म हैं ; क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन हैं। क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ये चार संयुक्त व्यंजन वर्णों के योग से बनते हैं– क्+ष्=क्ष : त् + र्= त्र, ज्+ञ =ज्ञ श्+र्=श्र संयुक्त व्यंजन हैं जिनके लिए अलग से लिपि चिन्ह् निर्धारित हैं। उच्चारण की सुविधा के लिए ड, ढ के नीचे बिन्दी लगाकर दो और वर्ण बनाए जाते हैं– ड़ और ढ़ (प्रयोग–सड़क, चढ़ना आदि)। इस प्रकार हिन्दी भाषा की वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं। इनके अतिरिक्त अनुस्वार (ं) चन्द्रबिन्दु (ँ) तथा विसर्ग(:) भी व्यंजनों के अन्तर्गत समझे जाते हैं, क्योंकि इनका उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना नहीं हो सकता।

व्यंजन के लेख–भेद

व्यंजन दो तरह से लिखे जाते है– खड़ी पाई के साथ और बिना खड़ी पाई के। ङ, छ, ट, ड, ढ, द, र बिना खड़ी पाई के व्यंजन हैं और इन्हें छोड़कर शेष व्यंजन खड़ी पाई–सहित लिखे जाते हैं। हिन्दी के सभी वर्णों के सिरे पर एक आड़ी रेखा रहती है, जो झ, ध, भ में दो सिरों के बीच में कुछ तोड़ दी जाती है। किसी शब्द में र् के पीछे कोई व्यंजन रहने से र् व्यंजन के ऊपर 'रेफ' (र्‍) का रूप धारण कर लेता है– जैसे– कर्म, धर्म, मर्म।

ब और र तथा य और ज के लिखने और उच्चारण करने में उनके शुद्ध रूप पर ध्यान रखना चाहिए। हिन्दी में प्रायः लोग लापरवाही से ब की जगह व , व की जगह ब और य की जगह ज लिखते और बोलते हैं।

संयुक्ताक्षर

हिन्दी में संयुक्ताक्षरों के प्रयोग की तीन विधियाँ हैं–

1. संयुक्त ध्वनियाँ

दो या दो से अधिक व्यंजन ध्वनियाँ परस्पर संयुक्त होकर जब एक स्वर के सहारे बोली जाएं तो संयुक्त ध्वनियाँ कहलाती हैं। संयुक्त ध्वनियाँ अधिकतर तत्सम शब्दों में मिलती हैं। शब्द के आरम्भ में ध्वनियाँ प्रायः पायी जाती हैं, मध्य में और अन्त में अपेक्षाकृत कम। जैसे– 'प्रारब्ध' शब्द में ध्वनियों का संयुक्तीकरण आरम्भ और अन्त में हुआ है। संयुक्त ध्वनियों के कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं– प्राण, घ्राण, म्लान, क्लान्त प्रवाद, प्रकर्ष इत्यादि।

2. सम्पृक्त ध्वनियाँ

एक ध्वनि जब दो व्यंजनों से संयुक्त हो जाए, तब वह सम्पृक्त ध्वनि कहलाती है। जैसे– 'सम्बल'। यहाँ 'स' और 'ब' ध्वनियों के साथ 'म्' ध्वनि संयुक्त हुई है।

Downloaded From www.dietmathura.org

3. युग्मक ध्वनियाँ

जब एक ही ध्वनि का द्वित्व हो जाए, तब वह 'युग्मक' ध्वनि कहलाती है। जैसे– दिक्कत, अक्षुण्ण, उज्ज्वल, प्रज्ज्वलन, प्रसन्नता। युग्मक ध्वनियाँ अधिकतर शब्द के मध्य में आती हैं। इस नियम के अपवाद भी हैं। जैसे– उत्फुल्ल, गप्प।

- *प्रशिक्षुओं से संयुक्ताक्षरों के प्रयोग की उक्त विधियों पर आधारित उदाहरणों के माध्यम से अन्तर स्पष्ट कराया जाय।*

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. स्वरों की सहायता के बिना जिन वर्णों का उच्चारण नहीं हो पाता वे कहलाते हैं–

क. स्वर　　ख. संयुक्ताक्षर

ग. व्यंजन　　घ. मात्राएं

2. य, र, ल, व व्यंजन हैं–

क. संयुक्त　　ख. ऊष्म

ग. अन्तस्थ　　घ. स्पर्श

3. क् +ष् के योग से निर्मित व्यंजन है–

क. क्ष　　ख. श

ग. स　　घ. ष

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. स्वर किसे कहते हैं?

2. व्यंजन किसे कहते हैं ?

3. हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है ?

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. स्वर और व्यंजन के भेद को स्पष्ट कीजिए।

2. द्वित्व व्यंजन किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लिपि किसे कहते हैं ? लिपि संकेतों पर प्रकाश डालिए।

2. व्यंजन किसे कहते है तथा ये कितने प्रकार से लिखे जाते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

अनुनासिक ध्वनियों के लिपि संकेतों को शुद्ता के साथ लिखना।

'अ' से लेकर 'औ' तक हिन्दी के सभी स्वर निरनुनासिक हैं। लेकिन इनका उच्चारण करते समय यदि हम मुँह के साथ–साथ नाक से भी वायु को बाहर निकालें तो ये सभी स्वर नासिक्य हो जाते हैं। ऐसे स्वरों को ही 'अनुनासिक' कहा जाता है। अनुनासिकता हिन्दी संरचना के विकास का परिणाम है। चूँकि अनुनासिक स्वर अपने निकटवर्ती निरनुनासिक स्वरों के साथ व्यतिरेक में आकर शब्द का अर्थ बदल देते हैं अतः हिन्दी में अनुनासिकता एक महत्वपूर्ण खंडेतर ध्वनि है जैसे–

सास– साँस　　है– हैं

गोद– गोंद　　पूछ– पूँछ

अनुनासिकता को लिखित भाषा में बिन्दु तथा चन्द्रबिन्दु दोनों से लिखा जाता है। हिन्दी में स्वरों का उच्चारण अनुनासिक और निरनुनासिक होता है। अनुस्वार और विसर्ग व्यंजन हैं, जो स्वर के बाद, स्वर से स्वतंत्र आते हैं। इनके संकेत चिह्न इस प्रकार हैं–

मुख्य शिक्षण बिन्दु

- अनुनासिक स्वर व अनुनासिककता
- अनुनासिक ध्वनियाँ
- अनुनासिक लिपि संकेत
  - बिन्दु
  - चन्द्रबिन्दु
- अनुस्वार
- निरनुनासिक
- विसर्ग
- अनुस्वार और अनुनासिक में अन्तर
- अनुनासिकता के सन्दर्भ
  - विभक्ति परक सन्दर्भ
  - स्वनिमिक सन्दर्भ
  - स्वनिक सन्दर्भ
- अनुनासिकता का विकास
- समस्याएं
- प्रयोग में सावधानियाँ

- ***प्रशिक्षुओं से अनुनासिक एवं निरनुनासिक ध्वनियों को स्पष्ट करते हुए संकेत चिह्नों को स्पष्ट कराएं।***

अनुनासिक (ँ) जिस वर्ण का उच्चारण मुँह और नासिका दोनों से होता है, उसे अनुनासिक कहते हैं। इसका चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) होता है। जैसे– हँसी, चाँद, पाँच, मुँह। इसका उच्चारण मुख और नासिका के द्वारा होने के कारण हल्का और कोमल होता है।

अनुस्वार (ं) जिस वर्ण का उच्चारण करते समय हवा केवल नाक से निकलती है तथा उच्चारण कुछ जोर से होता है, उसे अनुस्वार कहते हैं। यह अपने पहले शब्द के ऊपर बिन्दी (ं) के रूप में प्रयुक्त होता है। इनका उच्चारण पाँचों वर्णों के अन्तिम अक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) के समान होता है।

जैसे– संग, रंग, गंगा, हंस, संगम, कंचन, संपर्क आदि।

निरनुनासिक– केलव मुँह से बोले जाने वाले सस्वर वर्णों को निरनुनासिक कहते हैं। जैसे– इधर, उधर आप, अपना, घर इत्यादि।

Downloaded From www.dietmathura.org

विसर्ग (:) अनुस्वार की तरह विसर्ग भी स्वर के बाद आता है। यह व्यंजन है और इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। जैसे– मनः कामना, प्रातः, अतः दुःख, स्वतः इत्यादि।

अनुस्वार और अनुनासिक में अन्तर

अनुनासिक वर्णों को बोलते समय हवा नाक और मुँह दोनों से निकलती है, जबकि अनुस्वार के उच्चारण में हवा केवल नाक से ही निकलती है।

- ***प्रशिक्षुओं से अनुनासिक ध्वनियों के लिपि संकेतों के प्रयोग को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कराया जाय।***

अनुनासिकता स्वरों का गुण है। नासिक्य रंजित स्वर ही अनुनासिक कहे जाते हैं। हिन्दी में सभी मौखिक स्वर अनुनासिक हो सकते हैं जैसे–

अ ∽ अँ	फँस, हँस
आ ∽ आँ	आँख, गाँव
इ ∽ इँ	बिंदिया, सिंचाई
ई ∽ ईं	खींच, सींच
उ ∽ उँ	कुँआ, उँगली
ऊ ∽ ऊँ	ऊँट, मूँगा
ए ∽ एँ	में, गेंद
ऐ ∽ ऐं	मैं, भैंस
ओ ∽ ओं	चोंच, गोंद
औ ∽ औं	चौंकना, भौंकना

हिन्दी में लिपि चिह्न के रूप में अनुनासिकता को चंद्रबिन्दु (ँ) से लिखा जाता है। हाँ, यदि स्वर के ऊपर मात्रा चिह्न हो तो चंद्रबिन्दु के स्थान पर इसे बिन्दु से ही लिखे जाने की व्यवस्था है।

हिन्दी में अनुनासिकता तीन संदर्भों में देखी जा सकती हैं–

1. विभक्तिपरक संदर्भ
2. स्वनिमिक संदर्भ
3. स्वनिक संदर्भ

Downloaded From www.dietmathura.org

1. विभक्ति परक संदर्भ– इस संदर्भ में अनुनासिकता संज्ञा तथा क्रिया पदों को बहुवचन बनाने का कार्य करती है जैसे–

संज्ञा पद	चिड़िया	∽	चिड़ियाँ
	नदी	∽	नदियाँ
	बहू	∽	बहुएँ
क्रियापद	है	∽	हैं
	थी	∽	थीं
	गयी	∽	गयीं

2. स्वनिमिक संदर्भ– हिन्दी में मौखिक स्वर तथा अनुनासिक स्वर व्यतिरेक में भी आते हैं।

जैसे–

गोद ∽ गोंद

सास ∽ साँस

चौक ∽ चौंक

भाग ∽ भाँग

आधी ∽ आँधी

3. स्वनिक संदर्भ– हिन्दी में कुछ शब्दों में अनुनासिकता केवल उच्चारण के स्तर पर ही कार्य करती है। नासिक्य व्यंजनों के परिवेश में मौखिक स्वर सानुनासिक हो जाते हैं जैसे–

नाम – (नाँम)

मान – (माँन)

कान – (काँन)

- *प्रशिक्षुओं से अनुनासिकता के विकास पर चर्चा– परिचर्चा कराई जाय।*

अनुनासिकता का विकास

प्राचीन आर्य भाषा से जब मध्यकालीन आर्यभाषा में जो परिवर्तन हुए उनके अन्तर्गत जिन शब्दों के मध्य में 'व्यंजन–गुच्छ' थे वे सरलीकृत हो गए और आगे चलकर वहाँ एक ही व्यंजन रह गया। साथ ही संयुक्त व्यंजनों के पूर्व का ह्स्व स्वर भी दीर्घ हो गया जैसे–

कर्म > कम्म > काम

Downloaded From www.dietmathura.org

यदि शब्द की संरचनाएँ व्यंजन गुच्छ में से एक व्यंजन अनुस्वार रहा था तो सरलीकरण की इस प्रक्रिया में पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ तो हुआ ही, नासिकयीकृत (या अनुनासिक) भी हो गया। देखिए निम्नलिखित उदाहरण–

प्राचीन आर्य भाषा	मध्य आर्य भाषा	आधुनिक आर्यभाषा
सप्त	सतत्	सात
सत्य	सच्च	साँच
चन्द्र	चन्द	चाँद

कहने का तात्पर्य यही है कि हिन्दी में अनुनासिकता का विकास मुख्य रूप से अनुस्वार से ही हुआ है। अर्थात् ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया में केवल उन्हीं शब्दों में अनुनासिकता मिलती है जिनके मूल रूपों में 'अनुस्वार' की स्थिति रही थी। जैसे दंत– दाँत, चंद्र–चाँद, भंग–भाँग, कंटक– काँटा आदि। यदि प्राचीन आर्यभाषा के शब्दों में अनुस्वार नहीं था तो मध्य आर्यभाषा (पालि, प्राकृत) में वे भले ही नासिक्य गुच्छ के रूप में परिवर्तित हो गए पर आधुनिक आर्यभाषा में अनुनासिकता दिखाई नहीं देती। जन्म, कर्म शब्द इसी प्रकार के उदाहरण हैं।

समस्याएं

कुछ विद्वानों ने अनुस्वार और अनुनासिकता को लेकर यह समस्या उठाई है कि हिन्दी में अनुस्वार और अनुनासिकता के कारण शब्दों को जो दो भिन्न वर्ग प्राप्त होते हें उनको मूल रूप से दो भिन्न–भिन्न शब्द माना जाए अथवा एक ही शब्द के दो भिन्न रूप।

उदाहरण के लिए निम्नलिखित 'अ' तथा 'ब' वर्ग के शब्दों को देखिए–

अ–वर्ग (अनुस्वार)	ब–वर्ग (अनुनासिक)
चंद्र	चाँद
भंग	भाँग
दंत	दाँत
कंप	काँप

कुछ भाषाविदों की राय है कि इनको दो अलग–अलग शब्द माना जाना चाहिए। यदि इन शब्दों को भिन्न माना जाएगा तो इसका अर्थ यह होगा कि हमें अनुनासिकता को भी मूल रूप में स्वीकार करना होगा, अनुस्वार से व्युत्पन्न अभिलक्षण के रूप में नहीं। इस बात के समर्थन में इन विद्वानों ने दो तथ्य दिए हैं–

Downloaded From www.dietmathura.org

1. हिन्दी के कुछ शब्दों में अनुनासिकता का विकास अनुस्वार के परिवर्तन का परिणाम नहीं है। वह स्वतः विकसित हुई है जैसे–

श्वास – साँस　　सर्प– साँप

हास्य– हँसी　　ग्राम– गाँव

- ***ऐसे शब्दों के लिए अनुस्वार की संकल्पना करना उचित नहीं है।***

2. हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे भी मिलते हैं जिनके मूल रूपों में कोई नासिक्य ध्वनि भले ही रही है पर जिसके चन्द्र–चाँद, दंत–दाँत जैसे युग्म नहीं मिलते। अतः उन्हें भी अनुस्वार से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। जैसे–

धूम्र > धुँआ　　भ्रमर > भौंरा आदि।

इन मान्यताओं के विरोध में विद्वानों का मत है कि दंत और दाँत एक ही शब्द के दो भिन्न रूप हैं। 'यदि ऐसा न होता तो हम न केवल दंत–दाँत, कंप–काँप, भंग–भाँग की ध्वन्यात्मक प्रकृति को ठीक से समझ सकते है और न नीचे दिए गए शब्द युग्मों को पाण्डे–पाँडे, हाण्डी–हाँडी, भोण्डा–भोंडा।'

- ***प्रशिक्षुओं से अनुनासिक लिपि संकेतों के प्रयोग में की जाने वाली सावधानियों पर यथोचित उदाहरणों के माध्यम से चर्चा कराई जाए।***

सावधानियाँ–

अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ) हिन्दी में अलग–अलग ध्वनियाँ हैं। इनके प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए।

अनुनासिक के उच्चारण में नाक से बहुत कम साँस निकलती है और मुँह से अधिक, जैसे– आँसू, आँत, गाँव, चिड़ियाँ इत्यादि। पर अनुस्वार के उच्चारण में नाक से अधिक साँस निकलती है और मुख से कम, जैसे– अंक, अंश, पंच, अंग इत्यादि। अनुनासिक स्वर की विशेषता है– अनुनासिक स्वरों पर चन्द्रबिन्दु लगता है, लेकिन अनुस्वार एक व्यंजन ध्वनि है। अनुस्वार की ध्वनि प्रकट करने के लिए वर्ण पर बिन्दु लगाया जाता है। तत्सम शब्दों में अनुस्वार लगता है और उनके तद्भव रूपों में चन्द्रबिन्दु लगता है; जैसे– अंगुष्ठ से अँगूठा, दन्त से दाँत, अन्त से आँत।

Downloaded From www.dietmathura.org

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ङ, ञ, ण, न, म वर्ण है–

क. आनुनासिक　　ख. निरनुनासिक

ग. अनुस्वार　　घ. विसर्ग

2. अनुस्वार को किस लिपि चिन्ह से व्यक्त करते हैं–

क. (ँ)　　ख. (ं)

ग. (:)　　घ. इनमें से कोई नहीं

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. निरनुनासिक किसे कहते हैं ?

2. अनुस्वार की ध्वनि प्रकट करने के लिए वर्ण के ऊपर क्या लगाया जाता है ?

3. हिन्दी में अनुनासिक वर्णों की संख्या कितनी है ?

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. अनुस्वार और अनुनासिक में अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा इसके पाँच–पाँच उदाहरण दीजिए।

2. अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग में कौन सी सावधानियाँ रखनी चाहिए ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अनुनासिक ध्वनियों के लिपि संकेतों को शुद्ध रूप में लिखने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

2. हिन्दी में अनुनासिकता कितने संदर्भों में देखी जा सकती है? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन लेखन तथा संख्या पूर्व सम्बोधो/क्षमताओं का विकास

मानव सभ्यता के विकास में प्रारम्भ से ही गणित का एक विशिष्ट स्थान रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि गणित ही सभ्यता के विकास की धुरी रही है, यही कारण है कि औपचारिक शिक्षा के अभ्युदय से ही पाठ्यचर्या में गणित को सम्मान जनक स्थान प्राप्त हो रहा है। यह सत्य है कि ज्ञान–विज्ञान के समस्त विषयों में किसी न किसी रूप में गणित समावेशित है। अतः प्रत्येक विषय का ज्ञान व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के विकास में सहयोगी है किन्तु गणित विषय का ज्ञान जहाँ व्यावहारिक जीवन में उपयोगी है वही व्यक्ति के तार्किक एवं निर्णयात्मक क्षमता के विकास में भी सहयोगी है।

मुख्य शिक्षण बिन्दु

- संख्या पूर्व तैयारी एवं सम्बोध
- 1 से 9 तक की संख्याओं को वस्तु/चित्रों की सहायता से गिनना, पढ़ना, लिखना
- संख्याओं को क्रमबद्ध करना
- गणितीय संक्रियाएं जोड़ना, घटाना एवं शून्य का ज्ञान
- इकाई, दहाई तथा सैकड़े का ज्ञान

गणित क्या है ?

- यह एक यथार्थ और सत्य ज्ञान है।
- यह किसी कथन की सत्यता या असत्यता की परख तर्क के आधार पर करता है।
- यह तार्किक क्षमता का विकास करता है।
- यह चिन्तन शक्ति का विकास करता है।
- यह रटने पर कम बल देता है।
- यह अन्य विषयों के अध्ययन में सहायक है।
- यह मस्तिष्क को अनुशासित करता है।

गणित का योगदान मानव जीवन के लिए हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है। भोजन, आवास के साथ–साथ प्रत्येक दिन की दिनचर्या गणित से प्रारम्भ होती है। 'कितने बजे उठना है', कहाँ कितने समय जाना है?, वहाँ कितनी देर रूकना है, भोजन पकाने में किन–किन पदार्थों की मात्रा किस अनुपात में प्रयोग की जाती है, खेत–खलिहान में बीज एवं खाद की मात्रा, चिकित्सकों को दवाइयों की खुराक तय करनेमें, ज्योतिष गणनाओं में, बच्चों के खेल जैसे गुल्ली–डण्डा, लूडो, साँप–सीढ़ी, क्रिकेट, बैडमिण्टन आदि में तथा विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि विषयों के साथ–साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गणित का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार घड़ी देखना, कैलेण्डर, देखना समान खरीदना, वस्तुओं की लम्बाई–चौड़ाई–ऊँचाई की माप आदि अतः दैनिक जीवन के क्रिया कलाप गणित की ही विषय वस्तु है।

Downloaded From www.dietmathura.org

जब गणित हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस सीमा तक समाहित है तो फिर यह विषय कठिन एवं बोझिल क्यों ? गणित विषय के प्रति एक भ्रान्ति है कि वह बहुत कठिन विषय है जबकि यह सत्य नहीं है। बल्कि यह एक अवधारणात्मक विषय है जिसे प्राथमिक स्तर पर यदि मूर्त वस्तुओं तथा बच्चों के परिवेशीय उदाहरणों से जोड़ते हुए समझाए तो यह रोचक बन जाता है। बच्चों के लिए यह तभी सरल रह पाता है जब बच्चों में गणितीय अवधारणाओं की उचित समझ विकसित की जाय इनके लिए आवश्यक है कि शिक्षक, बच्चों के वास्तविक जीवन से जुड़े अनुभवों को आधार बनाकर एवं मूर्त वस्तुओं की सहायता से गणितीय अवधारणाओं एवं कौशलों का विकास करें।

गणित शिक्षण के उद्देश्य

- बच्चों को गणित के महत्व से परिचित कराना।
- बच्चों में तर्क, चिन्तन, समस्या सुलझाना, निर्णय लेना, क्रमबद्धता, स्व–अनुशासन एवं निष्पक्षता आदि गुणों का विकास करना।
- दैनिक जीवन में गणितीय समस्याओं को हल करने की योग्यता का विकास करना।
- बच्चों में लम्बा–चौड़ा, कम–अधिक, छोटा–बड़ा, हल्का–भारी आदि सम्बोधों का ज्ञान करना।
- संख्याओं की गणना करने की क्षमता का विकास करना।
- विभिन्न ज्यामितीय आकारों का ज्ञान कराना।
- गणित की चार मूलभूत संक्रियाओं से भलिभाँति परिचित कराना।
- बच्चों में कार्य करने की एकाग्रता का विकास करना।
- बच्चों में यथार्थ की खोज करने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- गणित तथा अन्य विषयों के साथ सह–सम्बन्ध समझने की क्षमता का विकास करना।
- तर्क पूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना।
- आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या करने की क्षमता विकसित करना।

संख्या पूर्व तैयारी एवं सम्बोध

विद्यालय में प्रवेश लेते समय बच्चों की जानकारी का स्तर भिन्न–भिन्न होता है क्योंकि बच्चों की अपनी क्षमताएं भिन्न होती हैं। घर तथा समाज का वातावरण भिन्न होने के कारण उनके अनुभव भिन्न होते हैं। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षक/शिक्षिका जाँच करें कि बच्चों की गणित सीखने की तैयारी का स्तर क्या है ? गणित सीखने की तैयारी का अर्थ है कि बच्चे वस्तुओं के आकार, लम्बाई तथा स्थिति आदि को समझते हो। अर्थात बड़ा–छोटा, कम–अधिक, आगे–पीछे, अन्दर–बाहर,

Downloaded From www.dietmathura.org

ऊँचा–नीचा, दूर–पास तथा सरल–वक्र आदि में भेद कर सके। संख्या पूर्व सम्बोधों की समझ उन्हें ठोस, मूर्त एवं अन्य वस्तुओं के माध्यम से कराएं क्योंकि ठोस व मूर्त वस्तुओं से कार्य करते समय बच्चों की कई इन्द्रियाँ एक साथ सक्रिय होती है जिससे सीखना आसान हो जाता है।

शिक्षक/शिक्षिका, **छोटे–बड़े** का सम्बोध आस–पास उपलब्ध वस्तुएं जैसे– पत्ती, कंकड, बीज आदि से दे और उन्हें छोटे–बड़े की पहचान कराएं।

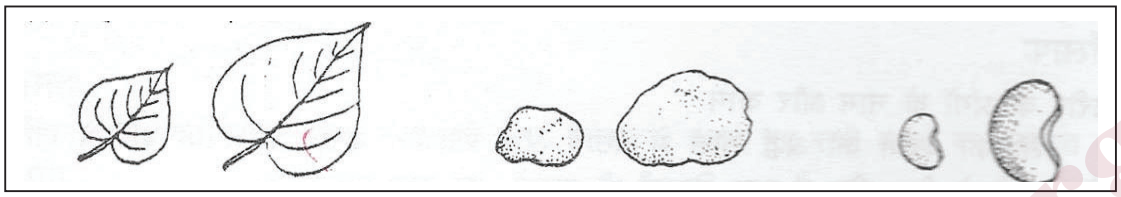

बच्चों को कार्डों पर बने चित्र के द्वारा बड़ा घर, छोटा घर, बड़ा हाथी, छोटा हाथी, बड़ी बिल्ली, छोटी बिल्ली आदि को दिखाकर छोटे बड़े की पहचान करा सकते हैं।

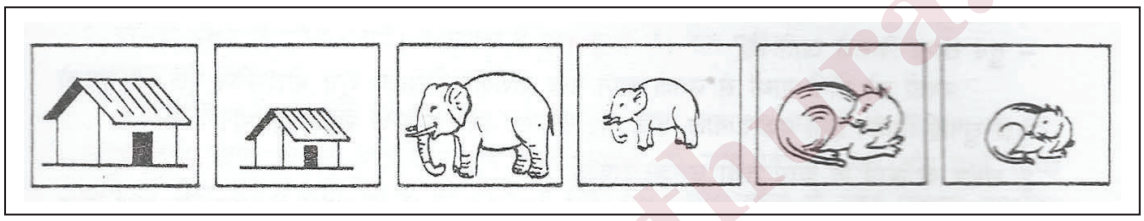

बच्चों में **कम–अधिक** की समझ के लिए शिक्षक/शिक्षिका काँच या मिट्टी की गोलीयों की दो ढेरियां बनाएं, बच्चे ढेरियों का निरीक्षण करें। उसके बाद बच्चों से पूछें कि किस ढेरी में कम गोलीयाँ है और किस ढेरी में अधिक। गोलियों की संख्या कम या अधिक जानने के लिए बच्चों से बारी–बारी दोनों ढेरियों से एक–एक गोली उठवाएं जिस ढेरी की गोली पहले खत्म हो जायेगी उसमें गोलियां कम होगी। शिक्षक कंकड़, सूखी पत्तियों, माचिस की तीलियों की सहायता से कम अधिक की जानकारी दें।

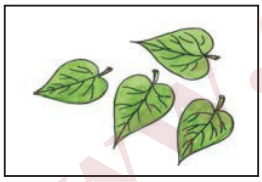

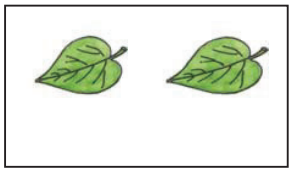

अन्दर–बाहर की समझ के लिए बच्चों को दो समूह में बांटे। एक समूह का कक्षा–कक्ष में रहने दें और दूसरे समूह को कक्षा के बाहर भेज दें। बच्चों को बताएं कि वे बच्चे जो कक्षा में है वे अन्दर है और जो कक्षा से चले गए है वे बाहर हैं।

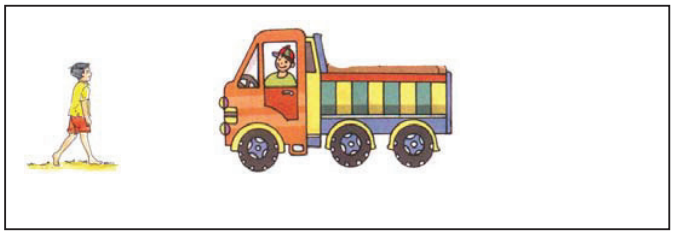

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षक बच्चों में **ऊपर–नीचे** की समझ के लिए बच्चों के दो समूह बनवाएं एक समूह के बच्चों को किसी चबूतरे पर खड़ा होने को कहें। दूसरे समूह के बच्चों को चबूतरे के नीचे खड़ा होने को कहें। बच्चों से पूछें कि ऊपर कौन है और नीचे कौन है। इसी प्रकार बच्चों को बताये कि पेड़ पर बैठे पक्षी ऊपर तथा खूँटे से बधी गाय नीचे है। बच्चों को विभिन्न उदाहरण देकर समझाए।

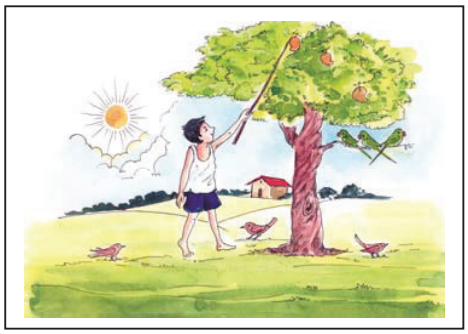

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को बताएं कि जो वस्तुएं उनके निकट है उन्हें पास तथा जो निकट नहीं है उन्हें दूर की वस्तु कहते हैं। चित्रों के माध्यम से भी अपने पास और दूर की वस्तुओं को बताया जाना चाहिए। इस प्रकार **दूर–पास** की समझ का विकास करें।

1 से 9 तक की संख्याओं को वस्तु/चित्रों की सहायता से गिनना, पढ़ना, लिखना एवं संख्याओं को क्रमबद्ध करना

हम सभी जानते हैं कि वस्तुओं को गिनने की इच्छा मनुष्य की महत्वपूर्ण आवश्यकता रही है। जीवन के विकास क्रम में पशुपालन लोगों का मुख्य कार्य था। प्रारम्भ में पशुओं व वस्तुओं को गिनने के लिए कंकड–पत्थर के टुकड़े, कौड़ी आदि की सहायता ली जाती थी। जितनी वस्तुएं होती थी उनमें से प्रत्येक वस्तु के लिए एक कंकड़ किसी गड्ढे में रख दिया जाता था। कंकड़, पत्थर आदि के टुकड़ों का प्रयोग करने में आने वाली कठिनाइयों को देखते हुए किसी संख्या के लिए एक विशिष्ट चिन्ह या आकृति का प्रयोग किया जाने लगा, जिन्हें अब अंक कहने लगे, इस प्रकार एक से नौ तक के अंक अस्तित्व में आए। अंकों की इस विकास यात्रा में काफी बाद में शून्य की खोज हुई।

बचपन में जब बच्चा भाषा सीखता है, मम्मी पापा, रोटी, पानी आदि शब्दों का उच्चारण करता है उसी के साथ–साथ वह एक रोटी, एक केला, एक टॉफी की भी बात करता। वह अपने हाथ की अंगुलियों की संख्या जानने लगता है दो–ढाई वर्ष की अवस्था में कभी–कभी एक या दो अंगुली उठाकर

Downloaded From www.dietmathura.org

संख्याओं का संकेत भी करने लगता है इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बच्चों में गणित सीखने की स्वभाविक जिज्ञासा होती है।

बच्चे जब विद्यालय आते हैं तो उन्हें अंको और मौखिक गिनती का कुछ न कुछ अनुभव या समझ अवश्य होती है लेकिन उनका ज्ञान अव्यवस्थित होता है। इसके लिए शिक्षक बच्चों को संख्याओं का ज्ञान देते समय यह अवश्य ध्यान रखें कि ये क्रमानुसार एवं व्यवस्थित हों और साथ ही इनकी अवधारणा को भी बताएं।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षक, प्रभावी शिक्षण विधियों को अपनाकर, बच्चों में सार्थक एवं स्थाई गणितीय समझ एवं कौशलों के विकास हेतु, गणितीय अवधारणाओं को बच्चों के दैनिक जीवन के अनुभवों से जोड़ते हुए ठोस वस्तुओं के माध्यम से स्पष्ट करें। इस विद्या से पढ़ाते समय किसी गणितीय अवधारणाओं को स्पष्ट करने में शिक्षण सहायक सामग्री (टी0एल0एम0) का अवश्य प्रयोग करें।

1 से 9 तक की संख्याओं का अर्थ छोटे बच्चों को तब तक स्पष्ट नहीं हो सकता जब तक कि उन्हें मूर्त वस्तुएं जैसे गोलियाँ, तीलियाँ, कंकड़, पेन पेन्सिल अंगुलियों, बीज आदि को दिखाकर न बताया जाय। बच्चों को 1 से 9 तक की संख्याओं को स्पष्ट करने के लिए परिवेश में उपलब्ध एक ही प्रकार की वस्तुओं द्वारा समझाया जाय। जैसे एक कंकड़ दिखाएं और बताएं की यह एक है और इसको 1 लिखा जाता है इसी प्रकार दूसरा कंकड़ मिलाएं और बताएं की अब दो हो गया। यह जरूर स्पष्ट करें कि जो बाद में ककड़ मिलाया वह दो नहीं है बल्कि दोनों मिलकर दो हैं। इसको 2 लिखा जाता है। इसी प्रकार 3,4,5,6,7,8,9 को स्पष्ट करें। 1,2,3,– – – – – 9 यह संख्याओं के प्रतीक है यह प्रतीक, संख्यांक कहलाते हैं। अर्थात संख्याओं को जिन प्रतीकों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है संख्याक कहलाते हैं जैसे संख्या बारह का संख्याक 12, संख्या चालीस का संख्यांक 40 है।

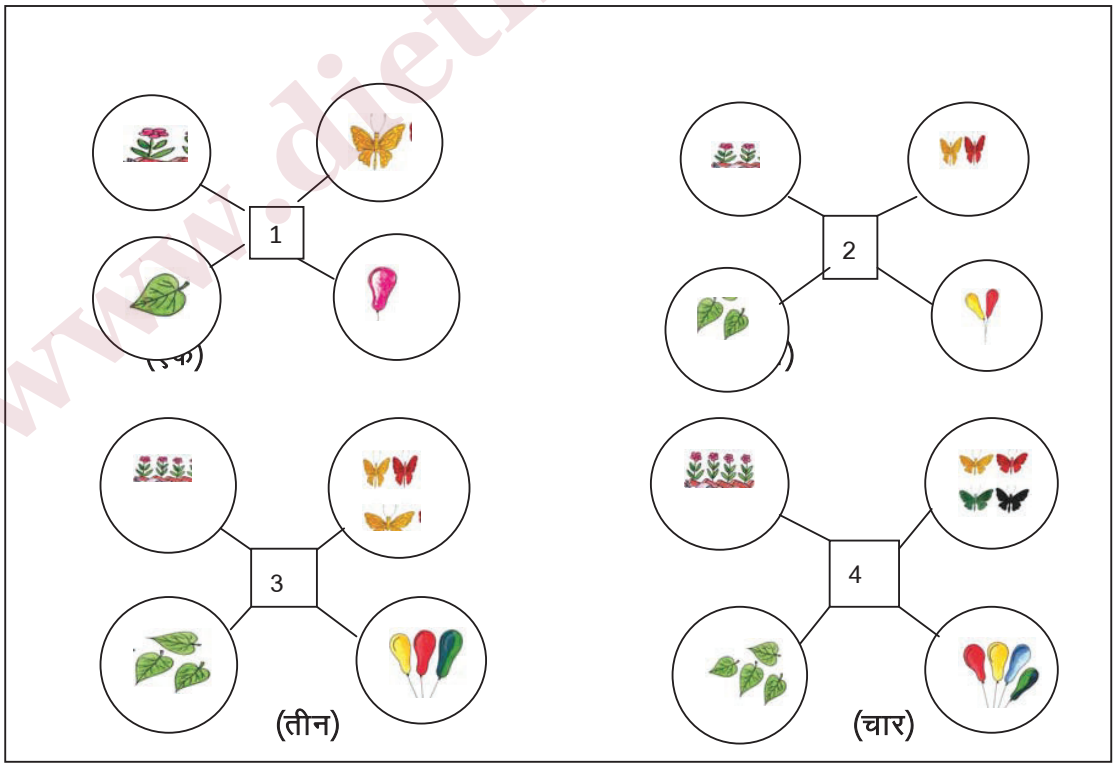

Downloaded From www.dietmathura.org

इसी प्रकार 9 तक को संख्याओं चित्रों या वस्तुओं द्वारा बताएं।

कक्षा–1 में पहले कुछ दिनों तक बच्चों को 1 से 9 तक की संख्याओं को क्रम से बोलने, गिनने तथा लिखने का ज्ञान देना चाहिए। कविताओं एवं गीत के माध्यम द्वारा उन्हें संख्याओं के क्रम का अभ्यास कराना चाहिए। गिनने का अभ्यास हो जाने पर ही लिखवाने का कार्य प्रारम्भ करना चाहिए। बच्चे गिनने में आनन्द का अनुभव करते है। कंकड़ गोलियों, बीजो, तीलियों इत्यादि को बच्चों को हाथ में देकर उनसे गिनवाना चाहिए। उंगलियों, मेज कुर्सी के पायों, पुस्तकों आदि का भी प्रयोग करना चाहिए। श्यामपट्ट पर विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनाकर बच्चों से पूछना चाहिए कि ये कितनी है कितने बिन्दु हैं, कितनी रेखाएं है, कितनी उंगलियाँ है। इन संख्याओं के अंकों को बार–बार श्यामपट्ट पर लिखा जाना चाहिए।

शिक्षक कार्ड्स के सेट तैयार करें जिन पर एक तरफ 1 से 9 तक की वस्तुओं के चित्र बने हों और दूसरी तरफ वस्तुओं की संख्या एवं उसके अंक लिखे हों बच्चों को कार्ड्स बाँटकर उनको संख्या की पहचान कराएं। जैसे–

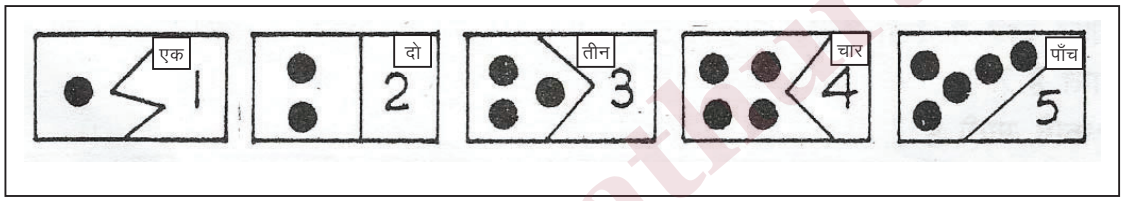

शिक्षक दो प्रकार के कार्ड्स के सेट तैयार करें। एक प्रकार के सेट पर 1–9 तक वस्तुओं के चित्र बनें हों। दूसरे प्रकार के सेट पर 1–9 तक के अंक लिखे हों। बच्चों से पहले सेट के कार्ड्स की वस्तुओं को गिनकर दूसरे सेट से सही संख्या का कार्ड ढूँढने को कहें।

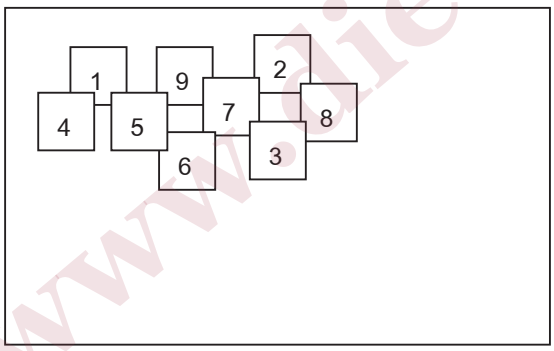

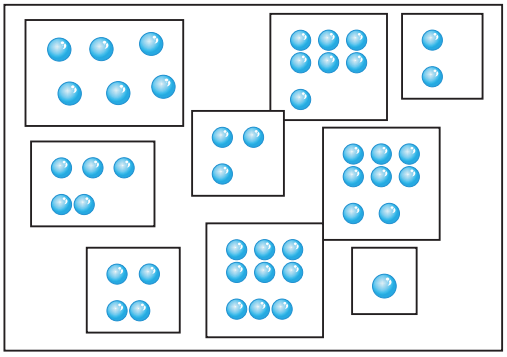

''बच्चों को संख्या की समझ हो गई है'' इस पर अपने विचार प्रस्तुत करें।

बच्चों को संख्या की समझ तभी होगी जब वह

- संख्याओं को सही क्रम में बोल सके।
- दी हुई वस्तुओं की संख्या बता सके जैसे– मेरे हाथ में कितनी पेन्सिल हैं।
- बताई गई संख्या के अनुसार वस्तुएं उठा सके। जैसे– अपने बैग से तीन कॉपी। निकाल कर दो।

Downloaded From www.dietmathura.org

- अंकों को शब्दों में एवं शब्दों को अंकों में लिख सके।
- दी गई संख्याओं को सही क्रम में व्यवस्थित कर सकें।

गिनती/संख्या बोलने की समझ के चार स्तर हैं जिन्हें बच्चों के सामने क्रम से प्रस्तुत किया जाना जरूरी है। सबसे पहले ठोस वस्तुओं का उपयोग किया जाय। इस समय भाषा का प्रयोग होता रहता है। इसके बाद चित्रों का प्रयोग कर इस क्रिया को आगे बढ़ाया जाय। फिर संकेतों का प्रयोग किया जाना विषयवस्तु की समझ की दृष्टि से उपयोगी होता है। अतः चार स्तर के क्रम।

1. ठोस वस्तुओं से अनुभव
2. भाषा का प्रयोग
3. चित्रों के माध्यम से
4. संकेतो/प्रतीकों द्वारा

गणितीय संक्रियाएं जोड़ना–घटाना

वास्तव में जोड़ है क्या? जब बच्चा छोटा होता है तो आप उससे कहते होंगे कि अपने बड़ों को हाथ जोड़कर प्रणाम करो। बच्चे जोड़ के बारे में कुछ न कुछ जानते है। जोड़ की अवधारणा से यह अभिप्राय है कि दो समूहों की वस्तुओं को 'मिलाकर गिनने' से है। शिक्षक/शिक्षिका जोड़ने एवं घटाने की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए ठोस वस्तुएं जैसे– सींक, कंकड़, पत्थर, मोती, बीज, कंचे, गिनतारा आदि का प्रयोग करे।

सर्व प्रथम एक वस्तु लेकर उसमें एक–एक मिलाकर तथा उसके बाद वस्तुओं के विभिन्न समूहों को मिलाकर जोड़ की अवधारणा को स्पष्ट करें।

चर्चा करें–

- एक कंकड़ में एक कंकड़ मिलाया तो कितना हुआ ?
- दो कंकड़ में एक कंकड़ मिलाया तो कितना हुआ ?
- तीन कंकड़ में एक कंकड़ मिलाया तो कितना हुआ ?

चर्चा उपरान्त स्पष्ट करें कि 1 कंकड़ में 1 कंकड़ मिलाने पर 2 होता है और 2 कंकड़ में 1 कंकड़ मिलाने पर 3 होता है। इसी प्रकार 3 कंकड़ में 1 कंकड़ मिलाने पर 4 होता है। उसके बाद दो विभिन्न संख्याओं के ककड़ों के समूह को मिलवा कर उन्हें गिनवाएं। इस प्रकार जोड़ की अवधारणा को स्पष्ट करें।

Downloaded From www.dietmathura.org

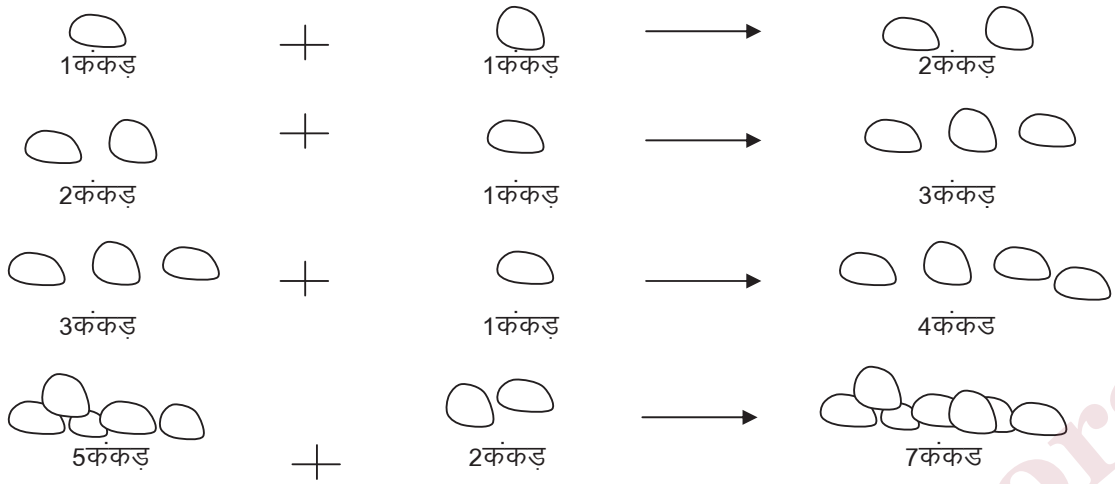

बच्चों को यह अवश्य बताएं कि अगर कोई पहले 2 वस्तु ले और फिर 4 ले अथवा पहले 4 और फिर 2 ले उनका जोड़ समान रहता है। कार्ड द्वारा खेल–खेल में क्रम बदलकर जोड़ का ज्ञान कराए।

5	+	3	=	8	=	3	+	5
15	+	30	=	45	=	30	+	15

किन्ही दो संख्याओं को स्थान बदलकर पहले और बाद में रखकर जोड़ने पर उनके मान (योग) पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शिक्षक बच्चों से पहेली पूछ कर भी उनको जोड़ की अवधारणा स्पष्ट कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर बच्चों को दो समूह में बाँट दे और एक समूह बोले ''मैं हूँ पाँच, बनना है बारह, कौन करे मदद? दूसरे समूह का बच्चा जिसके पास सात अंक का कार्ड हो बोले ''मै हूँ सात मैं करू मदद''। अन्त में शिक्षक यह जरूर बताएं कि जोड़ने पर प्राप्त संख्या जोड़ी गई संख्याओं से हमेशा अधिक होती है। इसके लिए ''कुल कितना हुआ'' इस्तेमाल करें।

'जोड़' की संक्रिया में वस्तुएं/संख्याएं बढ़ती हैं। यही जोड़ की मूल अवधारणा है। जोड़ को चिन्ह (+) से प्रदर्शित करते है।

शिक्षक **घटाने** की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए वस्तुओं के समूह को लेकर उसमें से एक–एक हटाकर बताएं।

Downloaded From www.dietmathura.org

चर्चा करें

- चार कंकड़ में से एक कंकड़ हटाया तो कितना बचा?
- तीन कंकड़ में से एक कंकड़ हटाया तो कितना बचा ?
- दो कंकड़ में से एक कंकड़ हटाया तो कितना बचा?
- एक कंकड़ में से एक कंकड़ हटाया तो कितना बचा ?

चर्चा उपरान्त स्पष्ट करें कि चार कंकड़ में से एक कंकड़ तो तीन कंकड़, तीन कंकड़ में से एक कंकड़ हटाने पर दो कंकड़, दो कंकड़ में से एक कंकड़ हटाने पर एक कंकड़ बचता है तथा एक कंकड़ में से एक कंकड़ हटाने पर एक भी नहीं अर्थात शून्य कंकड़ बचता। इसी प्रकार कंकड़ों के समूह से कुछ कंकड़ निकलवाकर बचे कंकड़ों को गिनवा कर घटाने की अवधारणा को स्पष्ट करें।

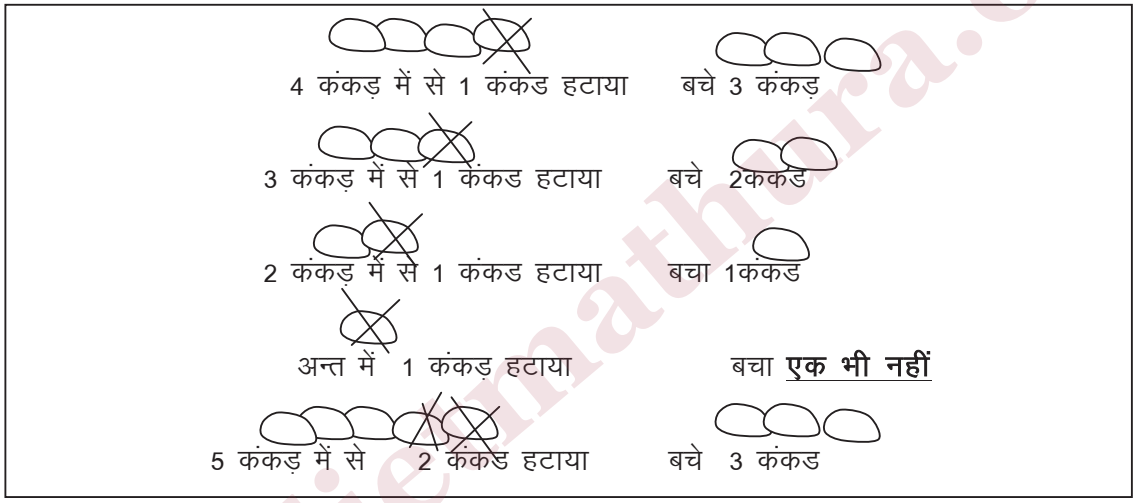

शिक्षक बच्चों को यह जरूर बताएं कि सदैव बड़ी संख्या में छोटी संख्या घटायी जाती है तथा घटने के उपरान्त जो संख्या प्राप्त होती है वह बड़ी संख्या से कम होती है। घटाने के लिए ''कुल कितना बचा'' इसतेमाल करें।

'घटाने' की संक्रिया में वस्तुएं/संख्या कम होती है। यही घटाने की मूल अवधारणा है। घटाने को चिन्ह (–) से प्रदर्शित करते हैं।

घटाव की अवधारणा उस समय कार्यान्वित होती है जब किसी समूह की दी गई वस्तुओं में से कुछ को निकाल लिया (हटाया, नष्ट किया, खा लिया, मार दिया, उड़ा दिया, खो गया आदि) जाता है। प्रत्येक के अन्त में पूछा जाने वाला प्रश्न कितने शेष रहते हैं ? जैसे अमर के पास 5 टॉफी है उसने दो टॉफी अपने भाई को दे दी। उसके पास कितनी टॉफी शेष रह जाती है ? अर्थात् 5–2 =3

बच्चों को यह जरूर स्पष्ट करें कि घटाव का हमारे व्यावाहरिक जीवन में समस्या सुलझाने के लिए कहाँ–कहाँ आवश्यकता पड़ती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

उदाहरण

1. तुलना– पीटर के पास 6 पेसिल तथा मीरा के पास 4 पेन्सिल है। मीरा की तुलना मे पीटर के पास कितनी अधिक पेन्सिल है? अर्थात् 6–4 =2

2. पूरक जोड़– शाहिदा के पास 7 रबर हैं। नीना के पास 5 रबर हैं। नीना को कितनी रबर और मिल जाएँ जिससे उसके पास रबरों की संख्या शाहिदा की रबरों की संख्या के बराबर हो जाय। 7–5 =2

3. दो विभिन्न गुणों वाली वस्तुएं की संख्या– इनमें वे परिस्थितियाँ भी सम्मिलित है जिनमें दिए गए समूह का एक भाग कुछ गुण रखता है। जबकि दूसरा भाग उस गुण को नहीं रखता है तथा पूछा जाने वाला प्रश्न है। '' कितनों में नहीं'' या कितने नहीं हैं। जैसे–

(1) बैग में 10 गोलियाँ है यदि 7 गोलियाँ लाल है तो उनमें सफेद गोलियाँ कितनी होगी। अर्थात् 10–7=3

(2) रोहित के पास 8 गुब्बारे है उसमें 5 गुब्बारे साफेद है कितने गुब्बारे साफेद नहीं हैं।

शून्य का ज्ञान

यह सत्य है कि समस्त संसार को 'दाशनिक अंकन प्रणाली' की देन भारतवर्ष ही है। जरा सोचिए प्राचीन समय में जब संख्याओं लिखने पढ़ने की आधुनिक प्रणाली अस्तित्व में नहीं आयी थी तब हिसाब–किताब रखना कितना कठिन कार्य था। जैसे कहावत है कि ''आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है'' अतः हिसाब–किताब रखने के लिए एक से नौ तक अंक अस्तित्व में आए। किन्तु इन अंकों के बाद बहुत लम्बे समय तक यह समस्या बनी रही कि यदि प्रत्येक संख्या के लिए अलग से ही अंक लिए जायेंगे तो प्रत्येक संख्या को याद करना असम्भव कार्य होगा। अतः आवश्यकता यह अनुभव की गई कि कम से कम अंकों की सहायता से सभी संख्याएं लिखी–पढ़ी जाएं। लम्बे मन्थन व सोच विचार के बाद शून्य अस्तित्व में आया। यह भी सुनिश्चित किया गया कि नौ से बड़ी संख्याओं को लिखने के लिए 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 अंकों का प्रयोग किया जायेगा। संख्याओं को लिखना अब आसान हो गया था जिसमें 1, 2, 3 – – –– 9 अंकों का दस गुना 10, 20, 30, – – – – 90 का दस गुना 100, 300 – – – – 900 आदि।

शून्य किसी भी स्थान पर हो उसका स्थानीय मान शून्य ही होता है। किन्तु किसी अंक या अंक समूह के दाहिनी ओर शून्य लगाने से उसके बाएं के सभी अंको का स्थानीय मान पहले का दस गुना हो जाता है। वस्तुतः शून्य के बिना कोई भी स्थानीय मान पद्धति काम नहीं कर सकती।

1 से 9 तक की संख्याओं को जानने, पढ़ने सीखने तथा उनकी आवश्यकताओं का ज्ञान प्राप्त कराने के बाद बच्चों में शून्य की संकल्पना का ज्ञान कराना अति आवश्यक है इसके लिए शिक्षक/शिक्षिका किसी पेड़ की एक छोटी टहनी लें जिसमें कुछ पत्तियाँ लगी हो, उनमें से एक–एक पत्ती हटाकर घटते

Downloaded From www.dietmathura.org

हुए क्रम में बच्चों से प्रश्नोत्तर करें, जब एक पत्ती टहनी में रहेगी तो बच्चे बोलेंगे एक पत्ती, लेकिन इस टहनी पर जब एक भी पत्ती नही होगी तो बच्चों से पूछने पर कि बच्चों टहनी में कितनी पत्तियां है बच्चे बोलेंगे 'एक भी नहीं' वास्तव में विचारणीय प्रश्न यह है कि टहनी है लेकिन टहनी में एक भी पत्ती नहीं है यह वह स्थान है जो पहले भरा था अब खाली है। वास्तव में यही 'शून्य' है। गणित की भाषा में 'शून्य' पत्ती बचेगी। जिसे संकेत '0' से लिखेंगे। शून्य का ज्ञान 'कुछ नहीं' की संज्ञा देकर न समझाया जाय। बच्चों को कुछ नहीं है बताकर भ्रम में न डाला जाय क्योंकि वास्तव में वहाँ टहनी तो है लेकिन उसमें पत्तियां नहीं है।

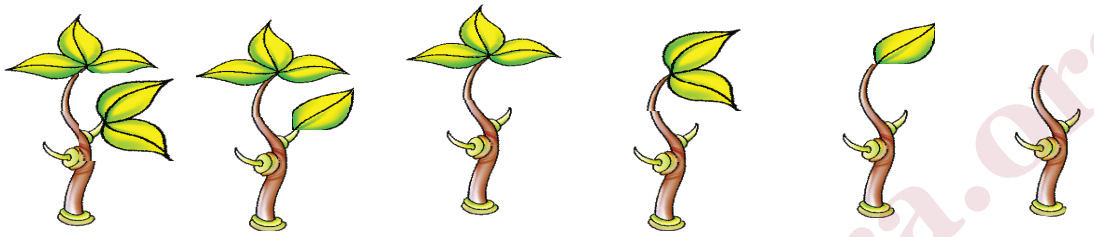

इसी प्रकार एक प्लेट में कुछ नीबू (या अन्य कोई वस्तु) रखकर उसमें से एक–एक हटाते हुए बच्चों से पूछें। जब एक नींबू रह जाय तो बच्चे कहेंगे 1 नीबू बचा। यदि एक नीबू भी हटा दिया जाय तब बच्चों उत्तर देंगे कि प्लेट में कोई भी या एक भी नीबू नहीं बचा। शिक्षक इसे गणित की भाषा में बताएंगे कि प्लेट में शून्य नीबू बचा। प्लेट है लेकिन प्लेट में कुछ नहीं है अतः इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बच्चों को शून्य का ज्ञान 'कुछ नहीं' शब्दों न समझाकर 'एक भी नहीं' प्रयोग करें तो अधिक उचित होगा। बच्चों को उसके स्थानीय मान का ज्ञान विभिन्न तरीकों से कराया जा सकता है जैसे– 1 से बड़ा 2 है तो 1 से छोटा क्या होगा या 9 से बड़ा क्या होगा।

शून्य की विशेषताएं

- किसी संख्या के दाहिनी ओर शून्य रखने पर वह संख्या का दस गुना हो जाता है। जैसे 2 के दाहिनी ओर शून्य रखने पर 20 प्राप्त होता है।
- किसी संख्या मे अन्य संख्या जोड़ने पर बड़ी संख्या प्राप्त होती है किन्तु शून्य जोड़ने पर मान में कोई परिवर्तन नही होता है।
- किसी बड़ी संख्या में छोटी संख्या घटाने पर छोटी संख्या प्राप्त होती है परन्तु '0' घटाने पर संख्या अपरिवर्तित रहती है।
- शून्य में से कुछ घटाया नहीं जा सकता है।
- शून्य से गुणा करने पर शून्य प्राप्त होता है।
- शून्य से भाग नहीं दिया जा सकता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

इकाई, दहाई तथा सैकड़े का ज्ञान

1 से 9 तक के संख्यांक इकाईयाँ कहलाते हैं। वस्तुओं की बढ़ती मात्रा को प्रदर्शित करने के लिए बड़ी संख्याओं की आवश्यकता पड़ती है जिसमें कई अंक हों इसके लिए बच्चों को सर्वप्रथम दहाई का ज्ञान देना आवश्यक है उसके बाद सैकड़ा, हजार – – – – – को बताना चाहिए। बच्चे दस वस्तुएं रहने पर उन्हें गिनना जानते हैं परन्तु वह 10 की संकल्पना से भलि–भाँति परिचित नही हैं। इसको स्पष्ट करने के लिए शिक्षक बच्चों को बताए कि 9 वस्तुओं में 1 वस्तु और मिला देने पर दस वस्तुएं प्राप्त होती हैं और इसके लिए संख्यांक '10' का प्रयोग किया जाता है।

बच्चों से दस वस्तुओं (कंकड़, तीली, बीज, मोती आदि) का एक बंडल बनवाकर दहाई का ज्ञान प्रारम्भ कराना चाहिए। जैसे– बच्चों को 11 तीलियाँ देकर उनसे गिनवाएं, 10 का एक बंडल बनवा देने पर एक तीली बच जायेगी। अत :

10 तीलियाँ और 1 तीली = 10 तीलियाँ अर्थात् 1 दहाई और 1 इकाई =11

इसी प्रकार 12 को 1 दहाई और 2 इकाई, 18 को 1 दहाई और 8 इकाई के रूप में समझाना चाहिए। इन संख्याओं के लिखने में यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि 18 में 8 इकाई के स्थान पर है और 1 दहाई के स्थान पर।

अतः 18 = 10+8

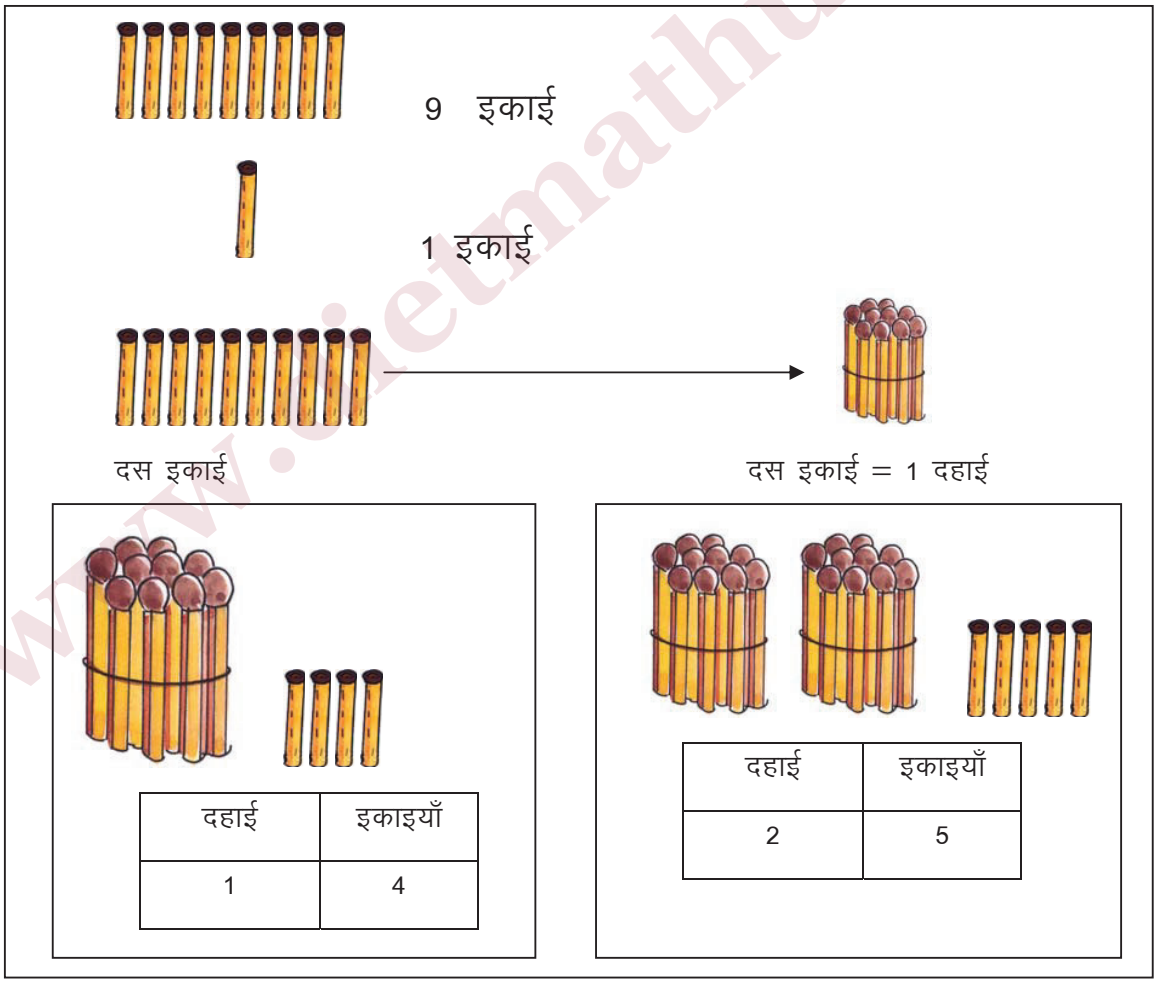

दहाई	इकाइयाँ
1	4

दहाई	इकाइयाँ
2	5

Downloaded From www.dietmathura.org

बच्चों में सैकड़े की समझ के लिए दस–दस तीलियों के दस बडलों को एक में बंधवाकर 100 तीलियों का 1 बंडल बनवाना चाहिए।

1 का दस गुना =10 या 1 दहाई
10 का दस गुना =100 इकाई या 10 दहाई या 1 सैकडा

100 से ऊपर की संख्याओं को तीलियों की मदद से निम्न ढंग से समझाना चाहिए।

सैकड़े का बंडल	दहाई का बंडल	इकाइयाँ	सैकड़ा	दहाई	इकाई	संख्या
एक	कोई नहीं	एक	1	0	1	101 (एक सौ एक)
एक	कोई नहीं	तीन	1	0	3	103 (एक सौ तीन)
दो	एक	पाँच	2	1	5	215 (दो सौ पन्द्रह)
दो	सात	चार	2	7	4	274 (दो सौ चौहत्तर)

उपर्युक्त ढंग से सैकड़े का ज्ञान कराकर 999 तक की संख्याएं सरलता से सिखाई जा सकती है। बच्चों को यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि 483 → 4 सैकड़ा और 8 दहाई और 3 इकाई = 400+80+3, इस प्रकार के पर्याप्त अभ्यास से बच्चों को अंकों के स्थानीय मान का ज्ञान हो जाता है।

- 1 से 9 तक के संख्यांक इकाइयाँ है।
- 10 कंकड़/ तीलियाँ/कंचे/बीज आदि का समूह एक दहाई बनाता है।
- 1 दहाई में 10 इकाइयाँ होती है।
- 1 सैकड़े में 10 दहाइयाँ तथा 100 इकाइयाँ होती है।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

अभ्यास प्रश्न

1. दैनिक जीवन में गणित का कहाँ–कहाँ प्रयोग होता है?
2. गणित क्या है?
3. बच्चों में छोटा–बड़ा एवं कम–अधिक की समझ किस प्रकार देंगे?
4. बच्चों में संख्याओं की समझ के लिए किन–किन विधा का प्रयोग करेंगे?
5. शून्य की संकल्पना से क्या समझते है, बच्चों को इसका ज्ञान कैसे देंगे?
6. गणितीय अवधारणाओं की समझ के लिए ठोस मूर्त वस्तुओं का उपयोग क्यों उचित है?
7. गणित में जोड–घटाना का क्या महत्व है आप बच्चों को इसे किस विधा द्वारा बताएंगे?
8. बच्चों में इकाई, दहाई एवं सैकड़े की समझ के लिए आप किस विधा को अपनाएंगे?
9. 1 से 9 तक की गिनती को समझाने के लिए कौन–कौन से टी0एल0एम0 उपयोग किये जा सकते हैं?

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org